१ वनस्पति से दीर्घ आयु १४-०७-१९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहाँ यह जो पाठय क्रम है यह परम्परागतो से ही विचित्रतम माना गया हैं। क्योंकि यह पाठ्य क्रम एक-एक शब्द की प्रतिभा अथवा परमपिता परमात्मा की महती का उद्घोष करता रहता हैं। क्योंकि परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान और विज्ञान है, वह मानो नितान्तर माना गया हैं, कोई मानव उसको मापने के लिए तत्पर नही हुआ, अथवा मापने का प्रयास भी किया, तो वह मध्य में ही मौन हो गया। तो वेद का ऋषि कहता है, वेद का मन्त्र देवता कहता है कि प्रत्येक वेदमन्त्र देवताओं का आह्वान कर रहा हैं। देवता की आभा में रत्त रहने वाला हैं, परन्तु वही तो देवतव को प्राप्त हो करके, परमपिता परमात्मा की महिमा का प्रायः गुणगान गाता ही रहता हैं, इसीलिए प्रत्येक वेद का मन्त्र, प्रत्येक वेद की प्रतिभा, मानो उस परमपिता परमात्मा का उद्घोष करता रहता है, अथवा उसका उद्गीत गाता रहता हैं।

तो आज मैं उस उद्गीत में जाना नही चाहता हूँ मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे कुछ प्रेरित कर रहे हैं, और इनकी प्रेरणा का जो स्रोत हैं, वह पूर्व काल में भी मैंने इनके बहुत-सी प्रेरणाओं को स्वीकार किया, परन्तु आज मैं उनकी जो प्रेरणाएं हैं, अथवा उनका जो उदगार हैं, तो वे आयु के ऊपर यह प्रश्न करना अथवा उस प्रसंग में ले जाना चाहते हैं, कि मानव का आयु कैसे सुरक्षित रहता है? इनका सबसे प्रथम यह प्रश्न, पूर्व काल में भी इन्होंने किया और आज भी मुझे प्रेरित कर रहे हैं। परन्तु वेद का मन्त्र तो कुछ कह नही रहा हैं परन्तु प्रत्येक वेदमन्त्र में नाना विषयों का वर्णन आता रहता हैं अथवा त्रिविद्या का विशेषकर वर्णन आता रहता है, मैं त्रिपादों त्रिवर्धा, त्रि औषधां भविते मां वाचं ब्रीहि व्रतां मानो यह वेद का एक मन्त्र है जो अभी-अभी हम उच्चारण कर रहे थे। परन्तु इस वेदमन्त्र की यदि व्याख्या हम करने लगते हैं, तो सर्वत्र मानव का क्रियाकलाप मानव के समीप आ जाता हैं। प्रत्येक मानव संसार में क्या चाहता हैं? इस सम्बन्ध में एक वेदमन्त्र आया और वह वेदमन्त्र कहता हैं आयुष्मानं ब्रीहि ब्रहां वाचन्नमो तमं प्रकाशाः प्रत्येक मानव की एक आख्यिका बनी रहती है प्रत्येक मानव की इच्छाएं क्या हैं? प्रत्येक मानव चाहता है कि मेरा जीवन अन्धकार में न चला जाएं। प्रथम वाक् और परन्तु द्वितीय वाक् यह आता है कि मेरा जीवन सदैव महान और पवित्र बना रहे, अन्धकार भी नही चाहता, पवित्रता भी चाहता है, प्रकाश में रत्त रहना चाहता है, और अन्धकार से दूरी रहना चाहता हैं। परन्तु इसी प्रसंग में, और भी नाना प्रकार की विचारधाराएं, नाना ये विचार समीप आते रहते हैं। परन्तु जब यह विचार-विनिमय किया जाता है, कि वास्तव में, मानव की मृत्यु भी नही होनी चाहिए, अब मृत्यु के सम्बन्ध में, नाना प्रकार के विचार आते हैं, सबसे प्रथम मृत्यु मानव का रूग्ण हो जाना हैं। एक मानव रूग्ण रहता है, आन्तरिक चिन्तन में मानो देखो, अशुद्ध चिन्तन बन जाता है। उस चिन्तन का अभिप्रायः यह है कि अशुद्ध वार्त्ताएं, अथवा चिन्तन में लगा रहता है, क्योंकि मन उसका स्वस्थ नही रहता। जब मन में स्वस्थता नही हैं, तो पवित्रता भी नही हैं, और जब पवित्रता भी नही है तो मानव के यह जो चिन्तन का, यह जो समूह बना रहता है, वह सदैव अशोभनीय विचारों को चिन्तन में लाता रहता हैं।

तो इसीलिए उस मानव का जीवन नारकिक अथवा मृत्यु में पंहुच जाता हैं। तो मृत्यु वास्तव में शरीर को त्यागने को नही कहते, मृत्यु कहते हैं अशुभ चिन्तन को मृत्यु कहते हैं मानो उसका जो आन्तरिक जो जगत है, उसमें स्वस्थता नही हैं। मृत्यु कहते हैं मानो देखो, जिसका शरीर रूग्ण रहता है, जिस रथ में वह विद्यमान है, आत्मा जिस रथ में विद्यमान हैं मनस्तव उसका सारथी बनाया है, तो मानव का सारथी बनाने से वह उसमें चिन्तित रहता हैं। यदि वह रथ स्वस्थ नही है, मानो उसमें महानता नही है, वह रथी सुन्दर नही है, चिन्तन अशुद्ध बन गया

है, तो जो रथी उसमें विद्यमान है, वह मानो देखो, रथ मृत्यु के तुल्य कहलाता हैं। तो विचार-विनिमय क्या, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देने के लिए चला हूँ, तुम्हारा प्रसंग है कि आयुर्वेद में जाना चाहिए। आयु को जानना चाहिए, कि आयु वास्तव में आयु का समूह क्या हैं? तो मेरे पुत्रों! देखो, आयु में प्रवेश करना चाहिए, आयुष्मानं ब्रह्म वाचो देवाः आचार्य के समीप जब ब्रह्मचारी जाता हैं नतमस्तिष्क होता है, तो वह आयु की कल्पना करता हैं और ब्रह्मचारी को कहता है, आयुष्मानं ब्रीहि व्रतां हे ब्रह्मचारी! तू आयुष्मान रह। देखो, आयु की ही कामना करता रहता हैं। तो प्रत्येक मानव आयुष्मान रहना चाहता है और अन्धकार से दूरी रहना चाहता है, परन्तु देखो, उसका मन, कर्म, वचन सब स्वस्थता में, वह अपने को दृष्टिपात करना चाहता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह कैसे होता है? अब विचार आता है कि प्रत्येक मानव के हृदय में एक आशंका बनी रहती है, कि हम आयुर्वेद में जाना चाहते हैं आयुर्वेद किसे कहते है? आयु का वेद, आयु का प्रकाश, आयु का प्रकाश क्या है? सबसे प्रथम आयु का प्रकाश है, जो ऋतु के अनुसार मानो अपने आहार और व्यवहार को बनाता है, वह आयु के वेद में अथवा प्रकाश में रत्त हो जाता हैं, यदि मानव अपनी ऋतु के अनुकूल उसका न आहार रहता है न व्यवहार रहता हैं तो शरीर में आयु की कल्पना करना यह व्यर्थ बन जाता है। मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जब मुनिवरों! देखो, त्रेता के काल में, हमारे यहाँ नाना वैद्यराज हुए हैं, नाना औषधियों के पुंज में रत्त रहने वाले हुए है, जैसे हमारे यहाँ रावण के राष्ट्र में एक अश्वनं ब्रीहि वर्णाम् मानो एक वैद्यराज थे जिनका नाम सुधन्वा कहलाता था। मानो देखो, सुधन्वा वैद्य अपने में पारायण थे, जब वह निन्द्रा में तल्लीन हो जाते, तो उन्हें स्वप्न भी यदि आता, तो औषधियां आ करके अपने गुणों का वर्णन करने लगती अपने गुणों का गुणगान गाने लगती और यह कहती कि हम मानो इस रूग्ण की औषध कहलाते हैं।

तो एक समय उन्हें एक स्वप्न आया वह कुछ वेदमन्त्रों का अध्ययन करते-करते निन्द्रा की गोद में चले गएं, जब वह निन्द्रा की गोद में चले गएं तो मानो देखो, निन्द्रा की गोद में जब प्रवेश कर गएं तो स्वप्न अवस्था का काल आया, परन्तु वह रात्रि वह काल तो समाप्त हो गया था, परन्तु वह स्वप्नवत में आ गएं तो स्वप्नवत में क्या होता है मानो कुछ वृक्षों का, वृक्ष का औषध बन करके वह उसे स्वप्न में उसे अपने गुणों का वर्णन करने लगे। तो मानो उन्होंने सबसे प्रथम वट वृक्ष के ऊपर, मेरे पुत्रों! देखो, वट वृक्ष उन्हें स्वप्न में प्रतीत हुआ, तो वट वृक्ष मानो अपने गुणों का वर्णन करने लगा तो उन्होंने कहीं हे वैद्यराज! मैं मानो देखो, वट वृक्ष कहलाता हूँ मैं मानव का ओज हूँ, मानव का तेज हूँ, मानो देखो, मेरा जो प्रत्येक अंग हैं वह मानव के तेजों में रत्त रहने वाला है मानो देखो, मैं यदि मुझे कोई सोम पंचांग पान करता है, तो मैं सोम का क्रियाकलाप करता हूँ, यदि मुझे मानो मेरा पिपाद बना करके शैलवाहिनी औषध में मेरा जब मिश्रण करके पान करता हैं तो मैं यक्ष्मा का मानो नष्ट करने वाला बन जाता हूँ। मानो देखो, यदि मेरे पत्र, मेरा दूध, मेरा जो रस हैं उसको मानो देखो, उस रस को ले करके यदि देखो, मुझे सोम ब्रीहि देखो, वह त्रिकोण को ले करके, त्रि कोण किसे कहते हैं? त्रि औषध का नाम भी त्रि कोण कहलाता है जैसे मानो देखो, तीन औषधियों का एक त्रिकोण बनता हैं, मानो देखो, त्रिकोण को, तीन प्रकार के त्रिकोण ले करके देखो, वेसकेतु, सम्भूजनी, वाचकाङ्की मानो देखो, उन औषधियों का त्रिकोण बनाते हैं मानो देखो, श्वेधान, वृत्तिका, धेनु मानो देखो, तीन औषधियों का एक त्रिकोण, यह बनता हैं। पिपाचंली, कस्वेकेतु, सोमभानकेतु इनका त्रिकोण बन करके मानो देखो, इनकी लुगदी इनको अग्नि में तपा करके इनका लोश्वेत बनाया जाता हैं जो मानो इनको पान करता है वह मानो देखो, यक्ष्मा क्या, मानो जो कुष्टिक रोगण हो जाते हैं उनके विनाश करने वाला बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, यह जब अश्विनी मंगलं ब्रहे वाचाः देवाः यही स्वप्न में उनको अश्विनी कुमारों को आता था, परन्तु देखो, यह सुधन्वा नामक वैद्यराज मानो देखो, इन औषधियों को एकत्रित करते

रहते थे संजीवनी औषधियों का रेतकेतु में इसको खरल करके इसको पान कराते रहते थे, परिणाम क्या मानो देखो, यह वट वृक्ष, अपने में कितना मानो महत्वपूर्ण माना गया हैं, वट वृक्ष के गुणों का वर्णन मानो गुणों की प्रतिभा, ऋषि के वैद्यराज के स्वप्नवत में मुनिवरों! देखो, उन्हें प्रायः वह दृष्टिपात आती रहती थी। आज मैं मुनिवरों! देखो, विशेषता में तो तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ विचार क्या मानो देखो, इसके एक जालां त्रिकां सुन्धवाचो मेरे पुत्रों! उन औषधियों को ले करके पीपल के पंचांग मे, वट के पंचांग में, और देखो, बेल के पंचांग में इसको सोम इसका मानो देखो, मिश्रण करके हम मानो देखो, इसकी सोम वृत्तियों को, सब वस्तुओं को ले करके मुनिवरों! देखो, हम इसका औषध पिपाद बनाते हैं इसको साकल्य में, याज्ञिक प्रवेश करते हैं, तो इसको हमारे यहाँ सोमवाश्च, सोममृति, सोम भान, असुति मानो देखो, इसका मिलान करके, और इन पांचों प्रकार के पंचांगों में मिलान कर देते हैं, उनका पान करने से, मानव में युवा अवस्था पुनः से प्रवेश हो जाती हैं। तो परिणाम क्या मानो देखो, यह औषध विज्ञान हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, विशेष माना गया है। मुनिवरों! देखो, वैद्यराजाओं ने तो जब औषधियों के गर्भ में प्रवेश हुए, मानो कोई सूर्य की किरणों के गर्भ में भी प्रवेश हुए, जब सूर्य के विज्ञान को जानने लगे, जो द्यौ मण्डल से सहायता लेता हैं जब द्यौ से सहायता लेता हैं, तो मुनिवरों! देखो, कहीं वह सुधन्वा ने कहीं आयुर्वेद में यह अध्ययन किया क्या सूर्य का तप करना चाहिए। सूर्य के तप करने से, मानव के हृदय में मानो प्रकाश आ जाता है। तो जब उन्होंने इस प्रकार का अध्ययन करना प्रारम्भ किया, तो वह सूर्य की तपस्या में परिणत हो गएं मानो देखो, उन्हें एक स्वप्न आया, क्या पीपल के वृक्ष में सूर्य के परमाणुओं की प्रधानता मानी गई हैं। मानो एक सोमरेतकेतु एक औषध होती हैं उसमें भी सूर्य प्रधानता, सूर्य की किरण प्रधानता में परिणत रहती हैं। गो नाम की जो किरण है उस औषध को तपाती रहती हैं, उस औषध में वह रत्त रहती है, मानो देखो, उसके रत्त रहने से इसीलिए तुम सूर्य की तपस्य करो। वृक्ष के नीचे विद्यमान हो करके, सूर्य की आराधना करने के लिए, तुम तत्पर हो जाओ। तो मानो देखो, महाराजा सुधन्वा ने, इसी प्रकार देखो, भयंकर वनों में जा करके वह महात्मा दधीचि का आश्रम भी उनके कुछ मानो निकटतम भयंकर वन में था, उसी आश्रम में बेटा! सुधन्वा वैद्यराज तपस्या करने लगे, तपस्या करने लगे, तो वह इस अन्नाद का पान नही करते थे, वह मानो देखो, पीपल के वृक्ष का पंचांग, वट के वृक्ष का पंचांग, और देखो, ब्रह्मा आदि देखो, गो औषधियों का वर्णन करते हुए, मानो देखो, अपने जीवन को व्यतीत करने लगे, और तपस्या में परिणत हो गएं। वह सूर्य के गर्भ में प्रवेश कर गएं जब सूर्य के गर्भ में पंहुचे तो मानो देखो, सूर्य की नाना प्रकार की किरणें मुनिवरों! देखो, जिन-जिन औषधियों को विशेषकर तपाती थी, तो मानो देखो, वह तप की औषधियों का वह भान करने लगे, अपने में जब चिन्तन करने लगे, तो मानो देखो, सूर्य की कुछ किरणें ऐसी होती हैं जो मानो कुछ वनस्पतियों पर विशेषकर जाती है। जैसे मानो देखो, कुछ औषध ऐसी होती है सूर्य की किरणों के साथ ही मानो उनमें युवापन आता हैं, कुछ औषध ऐसी होती है, जो सूर्य की किरणों से उनमे वृद्धपन आता हैं, कुछ मानो कुछ औषध ऐसी होती हैं जो सूर्य मानो देखो, जैसे मध्य में सूर्य आता है तो ऐसी औषधियों का मध्य बन जाता हैं। मानो देखो, इस प्रकार की औषधि, जिनका सम्बन्ध, कुछ औषधियों का सम्बन्ध चन्द्रमा से होता हैं, कुछ औषधियों का सम्बन्ध सूर्य से होता है, मानो देखो, चन्द्रमा, चन्द्रमा जिन औषधियों को तपाता है, वह कामेश्वरी कहलाती है, परन्तु जिनको सूर्य तपाता है वह मानो देखो, वह उसेरवती औषधि कहलाती हैं, तो उसेरवती औषधियों का सम्बन्ध सूर्य से है तो वह जो सूर्य वह जिन औषधियों से महान मानो देखो, युवापन में लाता है, किरणों के साथ, वह युवावस्था में मानो उनको पान करता है तो जानो कि यह जो औषध हैं। यह शीतल भी है, मानो देखो, यह उष्ण भी कहलाता है। दोनों उसमें गुण विद्यमान होते हैं। इसी प्रकार, जो औषध चन्द्रमा से जिनका समन्वय होता है, चन्द्रमा में जो चन्द्रमा से तपने वाली औषधियां होती है

अथवा जिनका सोम बनता है उनका सोम बन करके, मानव पान करता हैं, तो मानव के बहुत से मानो देखो, जो रूग्ण देखो, जो उष्णता से मानो बलवती होते हैं, उनको चन्द्रमा की जो कान्तियों से उत्पन्न होने वाली औषध है युवा अवस्था को प्राप्त होती हैं वह औषध मानो शीतलतव बन करके और चन्द्रमा अस्सुतम औषधियों को कृतियों से शीतलता की प्रधानता से मानो देखो, उत्पन्न होती हैं वह जो सूर्य की किरणों से युवा को प्राप्त होती हैं, युवा अवस्था में बन जाती है, मानो उनका पान करने से जो उष्ण रूग्ण हैं, वह मानो देखो, जो शीतल रूग्ण है, वह इससे शान्त होते हैं, और उनसे मुनिवरों! देखो, वह जो उष्ण है, वह शीतलता में आती हैं। तो यह नाना प्रकार की औषधियों का नृत्त हमारे यहाँ, परम्परागतों से बेटा! आयुर्वेदाचार्यों ने माना है, आज मैं देखो, आयु के युग में तुम्हें ले गया हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा सुधन्वा जब तपस्सा करने लगे, तो तपस्या करते-करते वह मानो उनका तपस्या करने का जो काल था, वह शुक्ल पक्ष का था वह कृष्ण पक्ष जब आने लगा, कृष्ण पक्ष में सूर्य की किरण मानो देखो, उनका समन्वय समुद्रों से हो गया वह जब समुद्रों से हो गया तो उनका समन्वय मानो विद्युत को ले करके आदित्य बन करके वह जलों का उत्थान करते हुए, मानो देखो, उनका समन्वय मेघों से वर्णित हो गया, जब मेघ में, मेघों अस्तु बन गएं तो मानो उसको हम कृष्ण पक्ष कहते हैं वह कृष्ण पक्ष कैसा पक्ष है जिसमें मानो देखो, पृथ्वी नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने के लिए, मानो समुद्र आपो से मानो प्रभु से याचना करती रहती हैं और यह कहती है कि मैं नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देना चाहती हूँ तो उस समय कृष्ण पक्ष आ जाता है और कृष्ण पक्ष के आते ही सूर्य की किरण मानो वह स्वाति नक्षत्रों में प्रवेश कर जाती है, स्वाति नक्षत्र चन्द्रमा में मानो देखो, वृत्तियों को प्राप्त करा देते हैं और वह उसको अग्नि उसे अपने में धारण करती हुई उन किरणों का समन्वय, समुद्रों से होता है और समुद्रों से मानो जलों का उत्थान होता हैं जलों का उत्थान हो करके ही मेरे पुत्रों! देखो, वत्रासुर का जन्म हो जाता है। वत्रासुर का जन्म हो गया, तो वत्रासुर ने मानो देखो, उस पृथ्वी को रस देना प्रारम्भ किया, जब वह रसों का प्रदान करने लगे, तेज के द्वारा, किरणों के द्वारा, रेणकेतु किरण के द्वारा, बेटा! देखो, जब पृथ्वी में रस आ गया, तो सूर्य की किरणों का व्यवधान हो गया। परन्तु देखो, चन्द्रमा का, सोमकृतिका बन गई। तो उस समय नाना प्रकार के व्यंजनों का जन्म देने वाली, पृथ्वी बन गई। नाना प्रकार का औषध विज्ञान, जब मानव के समीप आया। तो मेरे पुत्रों! कौन-सी किरण, कौन-सी औषध पर, किस समय, किस घड़ी में मानो देखो, उसकी प्रतिभा का जन्म होता हैं।

तो मानव यह महाराजा सुधन्वा बेटा! इतने विज्ञान में आयुर्वेद के गम्भीर विज्ञान को जानते थे, क्या वह औषधियों को मानो देखो, वह अपने में धारण करने लगे और उनको विचारने लगे कि कौन-सी औषध का कौन से नक्षत्र में मानो देखो, उपज शक्ति अभ्रहा में प्रवेश करती है तो मानो देखो, इस प्रकार का अध्ययन करते-करते, महाराजा सुधन्वा ने बेटा! देखो, नाना प्रकार के औषध विज्ञान को जाना। उन्होंने मुनिवरों! देखो, एक वर्ष तक, अखण्ड तपस्या की मानो देखो, छह माह, शुक्ल पक्ष और छह माह मुनिवरों! देखो, कृष्ण पक्ष के ये दोनों पक्षों में मानो तपों में रत्त रहे, तपों में मुनिवरों! देखो, छह ऋतुएं होती हैं ऋतु का अन्न ऋतु का मानो देखो, ऋतु का औषध कुछ औषध ऐसी होती है जो ऋतु में उत्पन्न होती हैं। मानो देखो, इन औषधियों के गुण, ऋतु के अनुसार होते हैं कुछ मानो देखो, औषध विज्ञान मानो देखो, यह अन्न भी औषधि कहलाता है यह अन्न भी औषध है मानो देखो, यह विशेष औषध कहलाता है और नाना प्रकार के जो वृक्ष हैं यह सर्वत्र एक प्रकार की वनस्पति का एक वृत कहलाता है। मानो एक समूह कहलाता हैं। जिसके ऊपर मानव अध्ययन करता रहता है, विचार-विनिमय करता रहता हैं। मानो अध्ययन की प्रतिक्रियाएं, मानो पराकाष्ठा पर चली जाती है। नक्षत्रों पर चली जाती है, सूर्य विज्ञान में प्रवेश कर जाती हैं, मूल नक्षत्र में भी कुछ औषध ऐसी होती हैं। जो मूल नक्षत्र की छाया लेती हैं, तो

बेटा! यह बहुत विशाल एक ब्रह्माण्ड हैं, मैं इस ब्रह्माण्ड को तुम्हें वर्णन करने चला हूँ, जिस ब्रह्माण्ड की मैंने बेटा! बहुत पुरातन काल की बेटा! जिनकी हम चर्चा करते रहते थे, एक-एक ब्रह्माण्ड एक एक औषध की को ले करके बेटा! वर्षों समाप्त हो जाते हैं मानो उसके प्रयोग में उसका अकृत बनाने में, अकृत करने में क्रियाकलाप लाने में में बेटा! वर्षों व्यतीत हो जाते हैं। इस प्रकार का यह मानो देखो, औषध विज्ञान है, मुझे स्मरण है मानो देखो, सुधन्वा ने कहीं मानो देखो, आयुर्वेद का मुझे स्मरण है मानो देखो, सुधन्वा ने अध्ययन करने लगे, न्यौदा का एक समय न्यौदा का अध्ययन करने लगे तो राजा रावण के यहाँ मानो विश्वविद्यालय में मुनिवरों! देखो, उस विश्वविद्यालय का नामोकरण पुलस्त्य विश्वविद्यालय कहलाता था पुलस्तय विश्वविद्यालय में जब मानो देखो, वह पंहुचे, तो वहाँ मानो देखो, आयुर्वेद के कुछ खण्ड भी विद्यमान थे, मानो देखो, आयुर्वेदा ब्रह्मचारियों ने, उनसे से कोई प्रश्न किया, और यह कहा कि महाराज! हम यह जानना चाहते हैं, कि यह जो आयुर्वेद है, यह क्या है? तो उस समय अश्विनी कुमारं ब्रह्मे अश्विनी कुमार भी वहीं विद्यमान थे, जो महात्मा भुंजु के पुत्र कहलाते थे। परन्तु देखो, उस समय महाराजा सुधन्वा ने कहा, कि आयु का वेद उसे कहते हैं आयु का प्रकाश, जो मानव को आयु ही प्रकाश के देने वाला हो, आयु ही मानव का प्रकाश है। मानो जो सदैव प्रसन्न रहने वाला हो, ऋतु के अनुसार, जो भोज्य प्राप्त करने वाला हो, ऋतु के अनुसार जो अपने क्रियाकलाप में रत्त रहने वाला हो, वह मानो जो एक स्वाति वृक्ष होता है, एक वाचो वृक्ष होत है मानो देखो, वृक्ष में लग गएं लगते-लगते मानो देखो, मार्ग नही प्राप्त हुआ। तो मानो देखो, वह महात्मा दधीचि से कहा कि महाराज! मानो देखो, मैं महात्मा दधीचि ने यह कहा कि तो सोमकेतु ऋषि भी, इसी वृक्ष के मानो देखो, ग्रणियों में रमण कर रहे थे, तो रमण करते-करते जब वह जब उस वृक्ष के समीप पंहुचे, तो वह वृक्ष हिमालय की कन्दराओं मे कहीं प्राप्त हुआ वहां पंहुचे मानो देखो, जहाँ वह सरोवर कहलाता था, जहाँ मानो देखो, वह पशु भी सूक्ष्म रहते हैं, जहाँ मानो देखो, पक्षी गण भी कोई कोई रहता है जिसका अग्नि प्रधान शरीर कहलाता है, वही वह वृक्ष प्राप्त होता हैं। तो उस वृक्ष में यह गुण है, यदि पतों को पान कर लिया जाएं तो मानव का मानव के प्रसारण शक्ति मानो इतनी उग्र रूप धारण कर लेती हैं क्या उसके मानो देखो, इन्द्रियों से रक्त का संचार हो जाता हैं। मानो यदि हम, उस वृक्ष के निचले तने की, औषध देखो, हम अपने में ग्रहण करते हैं, तो मानो देखो, उसका जो रक्त है वह आकुञ्चन में प्रवेश हो जाता है, उसकी आकुञ्चन प्रक्रियां बन जाती हैं यदि उस मानो देखो, उसके बक्कल को हम अपने में ब्रीहितों को अपने में धारण करते हैं पान करने लगते हैं उसका चूर्ण बना करके, तो मानो देखो, वह प्राणवर्धक कहलाता हैं, और यदि उसके निचले भाग को, हम समीचीन को पान करने लगते हैं तो मानो देखो, उसके पान करने से हमारे जीवन में एक अग्नि प्रवेश हो जाती हैं तो मानो देखो, उसका प्रत्येक अंग और प्रत्येक उपांग मानो देखो, प्रत्येक गुणों से परिपूर्ण है। जब मुनिवरों! देखो, उन्होंने विचार क्या इनका सबका पंचांग बना करके मानो देखो, इसका चूर्ण बनाने से चुक्रेति बनाने से मानो देखो, हम जल के द्वारा पान करने से हम यदि इसको पान करते रहते हैं करते-करते यदि हम नित्यप्रति इसका पान करने लगे और हम गो घृत के द्वारा इसका पिपाद बना देते हैं, गो दुग्ध के द्वारा इसका चुक्रेति मानो स्रोत बना देते हैं तो इसको हम सोम रस कहते हैं। इस सोम रस के पान करने से मानव के मस्तिष्क की जो मानो देखो, ग्रन्थियाँ हैं, मानो उनका स्पष्टीकरण हो जाता है, और प्रभु का जितना औषध विज्ञान हैं, अथवा जितना औषध विज्ञान है यह जितना स्थावर सृष्टि हैं, इस स्थावर का उसे ज्ञान हो जाता हैं। यह जो वनस्पति है, जितना भी वनस्पति विज्ञान, यह स्थावर सृष्टि कहलाता हैं। इसका मानो देखो, उसे ज्ञान होने लगता है, क्योंकि मस्तिष्क की ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण हो जाता है, स्पष्टीकरण से वह उसके समीप आने लगती है, उसके मानो देखो, गौ दुग्ध और मुनिवरों! देखो, उस वृक्ष का, हम यदि चूर्ण अव्रेत बना करके मानो हम उसको खरल करके पान करते हैं तो

हमारा आयु की दीर्घता हो जाती हैं आयु की दीर्घता, इतनी हो जाती हैं कि आयु मानो देखो, एक निसंकोच बन जाती हैं। ज्ञानयुक्त बन जाती है। प्रभु का उसे अटूटं ब्रहे देखो, उसे उसका विषय उसके आँगन में आने लगता हैं परिणाम यह होता है कि इससे आयु दीर्घ बनने लगती है, इसी वृक्ष को ले करके, महात्मा च्यवन ऋषि महाराज के यहाँ, अश्विनी कुमारों ने इसके चूर्णवती को पान कराया था श्वेधेनि को पान करा करके एक श्वेधेनि वृक्ष होता हैं इन सबका पान कराने से मानो देखो, उस मानव का नित्यप्रति पान करने से लगभग मानो देखो, उसकी तीन-तीन हजार वर्षों का आयु बन जाता है।

तो परिणाम मानो देखो, मैं इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ, क्या यह एक औषध विज्ञान हैं, एक विशाल ब्रह्मारण्ड है इसकी मैं तुम्हें कल्पना करने चला हूँ। मानो जिसका मैंने बहुत पुरातन काल में इनको नामोकरण श्रवण भी किया हैं। विचार क्या मानो देखो, अश्विनी कुमारों ने यही विद्या मानो देखो, श्वेनकेतु ऋषि महाराज से पान की थी, एक सौ एक वर्ष तक, इस औषध विज्ञान को अश्विनी कुमारों ने जानते-जानते मानो देखो, उस पराकाष्ठा पर पंहुच गएं थे क्या देखो, प्राण देखो, मस्तक देखो, शरीर से कण्ठ दूरी हो रहा है उसको ज्यों का त्यों स्थित करना, मानो यह मैंने बहुत पुरातन काल में मैंने चर्चाएं की। आज मैं इतनी चर्चाओं को देने नही आया हूँ, विचार यह है कि महात्मा सुधन्वा के द्वार पर जा रहा था, जो वैद्यराज राजा रावण के यहाँ मानो देखो, जो आयुर्वेदशाला थी, उसके वह विशेषज्ञ थे, उसके मानो वह धिपति थे, और अश्विनी कुमार भी वही विद्या को पान करते थे, मानो देखो, इन्होंने इस वृक्ष को जान करके, मानो देखो, कृतिका सम्भो वृक्षों आसन को देखो, जान करके, अपने मस्तिष्क की आभा को जानने का प्रयास किया। तो परिणाम क्या हैं बेटा! मैं तुम्हें इस विज्ञान में इसीलिए नही ले जा रहा हूँ, यह बड़ा भयंकर वन है, विशाल वन है, औषध विज्ञान का, इसको जानने के लिए मानव को जन्म-जन्मान्तरों की तपस्या चाहिए, जन्म-जन्मान्तरों का तप चाहिए जिससे देखो, औषध विज्ञान में, रत्त रहने वाला हो मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हैं वर्णन करते हुए कहा था कि अश्विनी कुमारों की माता भी आयुर्वेद के जानने वाली थी, माता जब इन श्रोत्रों को देती रहती थी आयु के सूत्र का वर्णन करती रहती थी, तो मानो देखो, ब्रह्मचारी उसको पान करता रहता था विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! इसी प्रकार महात्मा सुधन्वा की चर्चा हैं, वह मानो देखो, जहाँ वैद्यराज थे, वहाँ महात्मा थे, विचित्र थे, आयुर्वेद को जानने वाले थे। मानो देखो, यही वाक् मानो देखो, शुक्राचार्य ने देखो, अपने मुकुञ्ज अपने एक शिष्य को इस विद्या का प्रदान किया। परिणाम क्या मानो देखो, यह विद्याएं, एक विशेषता में परिणत रहती है। लेपन करने मात्र से ही मस्तिष्क की ग्रन्थियों में मानो देखो, प्रतिपदा आ जाती हैं देखो, जब आस ब्रीहि वाचो देवाः यह नाना प्रकार के औषध विज्ञान में जाने से, हमें यह प्रतीत होता है, कि वास्तव में यह विशाल वन है। विशाल वन की चर्चाओं में जा रहा हूँ, परन्तु एक वृक्ष नही, दो नही, अनन्य वृक्ष, इस प्रकार के हैं, जिनके गुणों का वर्णन, मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्विनी कुमार ने, और देखो, वह सुधन्वा की सहायता से, उन्होंने लेखनीबद्ध किया था। लेखनी बद्ध किया मानो एक आभा में परिणत रहा, वैद्यराजों के समीप रहा है, वह लेखनी, उसी लेखनी के आधार पर, आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! अपने-अपने जीवन में बेटा! बहुत गम्भीर अध्ययन किया हैं। आज मैं उस अध्ययन शाला में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ।

विचार-विनिमय यह मेरे पुत्र महानन्द जी ने एक विषय, एक प्रसंग को लिया है, इस प्रसंग की मैं चर्चाएं करता रहूँगा विचार देता रहूँगा, परन्तु देखो, यह तुम जान लो कि विज्ञान के ऊपर मानव को कितनी तपस्या की आवश्यकता है, और कितने औषध विज्ञान को जानने की आवश्यकता है, मेरे पुत्रों! देखो, कोई औषधि हिमालय में प्राप्त होती है कोई विध्यांचल में प्राप्त होती हैं मानो देखो, कोई कहीं समुद्रों के तटों में प्राप्त होती हैं कोई औषधि गंगा के, नदियों के मानो तटों पर प्राप्त होती हैं नदियों का जल अपने में स्रोततं रहता है तो नाना प्रकार गुणों की

औषधियों का जन्म इनके जलों से होता रहता हैं मानो देखो, कोई यदि किसी प्रकार की औषध में और नदी में प्रतिभा अस्त होता है। मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान यह मानवीय मस्तिष्कों में, अनुसन्धान वेत्ताओं के हृदयों में सदैव नृत्त करता रहा है और विचारशील रहा है इसके महान वैज्ञानिकों ने बहुत-सा अध्ययन किया है, महात्मा दधीचि के यहाँ तो सदैव ऋषि-मुनि विद्यमान हो करके इस विद्या का अध्ययन करते रहते थे। जहाँ महात्मा दधीचि मानो देखो, ब्रह्मवेत्ता थे, ब्रह्मनिष्ठ कहलाते थे, वहाँ वह औषध विज्ञान को भी जानते थे। मानो वह नाना प्रकार देखो, विज्ञान को जान करके अपने में रत्त रहते थे उनके यहाँ एक समय सोमभान वृत्तिका मेरे प्यारे! देखो, उनका पुत्र मृचि नामक ऋषि उनके समीप पंहुचा। मृचि ऋषि जब उनके समीप पंहुचा तो महात्मा दधीचि ने उनका स्वागत किया, और मृचि से कहा कहो भगवन! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं इसीलिए आया हूँ मैं एक समय भ्रमण करता हुआ अश्विनी कुमारों के जो गुरु है सोमवृत्तिका मैं उनके समीप पंहुचा तो सोमवृत्तिका से, हमने यह प्रश्न किया क्या हे प्रभु! हमारा शरीर रूग्ण हो रहा हैं, और उसका कोई औषध विज्ञान, औषध उच्चारण कीजिए, तो वृत्तिका ने मानो देखो, उन्होंने कहा कि मेरे द्वारा, इसका औषध नही है। महात्मा दधीचि के द्वार पर चले जाओ तो प्रभु! हम आपकी शरण में आए है हमें कोई मानो औषध उच्चारण कीजिए, तो उस समय महात्मा दधीचि ने कहा कि भई! यह जो तुम जानना चाहते हो, मेरे यहाँ तो यह नियम है कि तुम मेरे यहाँ तपस्या करो, उन्होंने कहा कि महाराज! हम तो तपस्वी हैं, उन्होंने कहा कि तुम तपस्वी नही हो, तपस्या करों, उन्होंने कहा क्या तपस्या करें? तो महात्मा दधीचि ने कहा कि तुम जो सूर्य की जो यह किरण है जो प्रातःकाल में उदय होती है, उसका नाम उषा है, उस उषा किरण नाम के साथ तुम नग्न हो करके मानो देखो, उस सूर्य की उषा नाम की जब किरण पृथ्वी पर आना प्रारम्भ करती हैं, उस किरण को अपने में मानो देखो, धारण करने का प्रयास करो एकान्त तुम्हारे मन की प्रवृत्ति हो, प्राण उसके समीप हो, और शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके तुम मानो देखो, एक दण्डवत करने वाली एक प्रथा को अपने में धारण करो, मानो देखो, सुबह जो उषा किरण है, जब वह तुम्हारे शरीर में शनै-शनै आती रहेगी, नित्यप्रति मानो देखो, एक वर्ष तक इस प्रकार का तप करो। जब उन्होंने उषा नाम की, तपस्या का दधीचि के कथनानुसार जब तप किया, तप करने से देखो, उषा एक उषा नामक एक औषध भी होती हैं उसका नाम देखो, उन्होंने पान उच्चारण कराया कि इसका पान किया करो। एक वर्ष तक मानो देखो, उन्होंने देखो, उसका पान करने से मृचि ऋषि ने, उसका पान करने से, उसी का मस्तिष्क पर लेपन करते थे, उसी को पान करते थे मानो एक शैलखण्डा एक औषध होती है एक चन्द्रकान्ता एक औषध होती है उन दोनो का खरल बना करके, शरीर पर लेपन करते थे परिणाम यह हुआ कि मानो देखो, वह एक वर्ष के पश्चात मानो देखो, उनमें औषध विज्ञान का विशेष ज्ञान हो गया, क्योंकि अध्ययनशील जो प्राणी होता हैं जिज्ञासु होता है, वह गुणों को अपने में धारण कर लेता हैं। आगे चल करके बेटा! मृचि नामक ऋषि हुए जो मेरे प्यारे! देखो, मोक्ष के निकट जा करके मुनिवरों! देखो, उसी मृचि ऋषि को जब वह मोक्ष के निकट, मृचि ऋषि को मोक्ष के निकट औषधियां के ज्ञान को जानते-जानते प्रभु के विज्ञान की विवेचना करते-करते मानो देखो, शुद्धन्ति वह गायत्री में अपने का शोधन करते-करते, उषा बेटा! गायत्री को कहते हैं, उसका अध्ययन करके अपने में मानो उन किरणों को सूर्य की धारा अपने में प्रवेश कराना तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपने में इस प्रकार लगभग देखो, लगभग पिचासी वर्ष तक मुनिवरों! देखो, इस प्रकार तप उन्होंने किया। अन्तःकरण को जानने लगे, अन्तःकरण को जान करके चित्त मण्डल को जान करके, मेरे पुत्रों! देखो, वह मोक्ष के निकट चले गएं चित्त का मण्डल भी उनका सूक्ष्म बन गया। परिणाम यह हुआ, जब निकटतम चले गएं तो बेटा! उन्हें बेटा! देखो, एक सिंहराज के, एक बालक से मोह हो गया। मानो देखो, उसको जब मोह हो गया, उस मोह को, वह अपने से दूरी न कर सके, अन्त परिणाम यह हुआ कि मोक्ष के

मार्ग से मोक्ष के द्वार से बेटा! वह संसार सागर में पुनः प्रवेश कर गएं।

तो विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रों! क्या मानो देखो, मैं यह वाक् मैं इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ, क्या यह जो मानो आयुर्वेद का जो एक विषय है यह बड़ा विचित्र विषय हैं, मुनिवरों! देखो, उसी समय मृचि नामक ऋषियों की चर्चा कर रहा था। जो मृचि मानो देखो, महात्मा दधीचि के आश्रम में अध्ययन करते थे विचार-विनिमय करते थे तो महात्मा दधीचि यह कहा करते थे कि मानो तुम मोक्षणो वृत्ति जावा मानो देखो, जावा बन गएं हो तुम मोक्षं बन गएं हो मानो देखो, उनकी वार्त्ता को वह स्वीकार नही करते थे। मृचि मानो इतना महान वैज्ञानिक और देखो, आयुर्वेद के मर्म को जानने वाला बना, क्या वह प्रत्येक मानो सूर्य में जो वायु की सुगन्ध गति करती थी, वह उस वायु की तरंगों को, अपने में धारण करता-करता वह तरंगों से देखो, तरङ्ग विज्ञान को जान करके उससे वह रूग्णों को शान्त करता रहा। कौन-सी किरण कौन-सी तरङ्ग के साथ कौन-सी अब गति कर रही है कौन-सी मानो देवता प्रधान बन गया हैं, उसके आधार पर बेटा! वह उसके रूग्णों को शान्त करती।

ऋषि मृचि की आत्मा

आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट नही करा रहा हूँ, विचार देता हुआ बहुत दूरी चला गया हूँ विचार ये प्रारम्भ हो रहा था क्या प्रत्येक मानव बेटा! देखो, मैं मृचि ऋषि की चर्चा कर रहा था, मृचि ऋषि मेरे पुत्रों! देखो, महात्मा विभाण्डक मुनि महाराज के पुत्र कहलाते थे मेरे पुत्रों! देखो, मृचि ऋषि अपने में कितने महान परन्तु देखो, अन्तिम परिणाम क्या हुआ? क्या वह मोह, ममता में मेरे पुत्रों! देखो, एक सिंहनी का एक बालक उसक समीप आ गया, उसे वह मानो प्रीति करने लगा, उसे मोह हो गया। वह मृत्यु को भी प्राप्त हो गया परन्तु यह विचारने लगे अब मैं कहाँ जाऊं? मुनिवरों! देखो, वह महात्मा सोम ऋषि महाराज के यहाँ उनकी पत्नी के गर्भ में मानो उसके गर्भ में प्रवेश कर गई वह मृचि ऋषि की आत्मा जब प्रवेश कर गई, तो उसे अन्तरात्मा का ज्ञान था वह आत्मा ज्ञानी होता हैं।। वह मानो देखो, माता के गर्भ में याचना कर रहा था तू यहाँ से मुझे मानो दूरी कर मैं दूरी होना चाहता हूँ मेरे पुत्रों! ऐसा मुझे स्मरण है क्या वह नौ माह के पश्चात माता के गर्भ से पृथक हो गया। जब पृथक हुआ तो मुनिवरों! देखो, वह कुछ बाल्य, जब युवा मानो बलवती होने लगा, जब बलवती हुआ, तो माता सोमकान्ता मानो देखो, उसे लोरियों का पान कराती रहती, वह बुद्धिमान थी वह कहती हे आत्मा! मेरे गर्भ में तो उस आत्मा को आना चाहिए था, जो मोक्ष के निकट होने वाली आत्मा थी। परन्तु तू मेरे शरीर में कैसे प्रवेश हुआ? तो मानो देखो, उस अन्तरात्मा देखो, वह उसकी वासनाएं माता को भी स्पर्श करने लगी।

तो मेरे पुत्रों! ऐसा मुझे स्मरण है क्या माता यह जान गई, कि यह पुत्र तो मानो देखो, मृचि का अमेष पुत्र कहलाता हैं। मानो देखो, उसका नाम ऋषि माता ने ब्रहे सम्भवा मेरे पुत्रों! देखो, वही ब्रह्मचारी, वही श्येनकेतु ऋषि महाराज बनें। श्येनकेतु ऋषि महाराज, मेरे पुत्रों! देखो, जो महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज थे, जो भगवान राम के आचार्य कहलाते थे, इनके पिता कहलाते थे। तो मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना मैं तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार-विनिमय क्या, वह संस्कार बने रहते हैं, इसीलिए मानव को, ममता में प्रवेश नही करना चाहिए।

तो आज बेटा! मैं उच्चारण कर रहा था कि एक मानव आयु को ले जाता, कितनी दूरी चला जाता हैं। परन्तु चित्त में जो जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं, बेटा! वह उसे ऐसी मानो आभा में ले जाते हैं बेटा! मानो देखो, कहीं ममता में ले जाते हैं वह पुनः उसी आसन पर आ जाता हैं, जहाँ से उसका उत्थान हुआ था। तो यह है बेटा! आज का वाक्, अब मैं यह चर्चाएं कल प्रगट करूंगा, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या, क्या मुनिवरों! देखो, यह तो औषध विज्ञान है, मैं इसकी चर्चाएं कल मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ प्रश्न करेंगें, मैं उनके प्रश्नों का उत्तर जितना यथा शक्ति हैं, हो सकेगा तो इनके प्रश्नों का उत्तर दे सकेंगें, प्रश्न करेंगें

परन्तु आज का विचार-विनिमय क्या आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए परमात्मा के औषध विज्ञान को जानते हुए, हम आयु में ऊर्ध्वा को प्राप्त होना चाहते हैं आयु से हम बलवती होना चाहते हैं मानव चाहता क्या है संसार में? अन्धकार को नही चाहता, अन्धकार को जब नही चाहेगा तो वह प्रकाश को चाहता है। प्रकाश मानो देखो, प्रकाश में आयु बलवती होती हैं, यह है बेटा! आज का वाक् अब शेष चर्चाएं इसके आगे की चर्चाएं कल प्रगट करेंगें आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन ओ३म् देवं रथा व्यापाहं मनु गायन्त्वा रथं ब्रह्मा ओ३म् वाचन्नमाः गृहिविता रेवं दधि वाचाहं गतं रथाः ओ३म् श्वञ्जना व्रा हा यौ भद्रा मनु गायन्तवाहाम्।

२ वनस्पति से दीर्घ आयु १५-०७-१९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, हमारे यहाँ परम्परागतो से ही प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गएं हैं वह विज्ञानमयी स्रोतमयी कहलाते है मानो जितना भी यह जगत एक आभा में हमें दृष्टिपात आ रहा है वह स्थावर सृष्टि का, एक मूलक बना हुआ हैं। क्योंकि प्रत्येक मानव के हृदय में मानो स्थावर सृष्टि के सम्बन्ध में, विचार-विनिमय करता रहा हैं मानो उनकी दशा उनका मार्ग वह परिवर्तन होना एक स्वाभाविक माना गया है। क्योंकि प्रत्येक मानव, अपने में, उस आकांक्षा में परिणत होना चाहता है, और यह चाहता है कि मेरी कोई न कोई दशा, अथवा एक मार्ग, इतना विचित्र होना चाहिए, जिससे मेरे जीवन और मेरी प्रतिष्ठा हो जाएं, क्योंकि प्रतिष्ठित होना चाहता है प्रत्येक मानव के हृदय में प्रतिष्ठा की एक जिज्ञासा बनी रहती है। बहुत पुरातन काल हुआ, जब बेटा! प्रतिष्ठा की कामना, ऋषि-मुनियों के हृदयों में भी होती है। क्योंकि वितैष्णा और पुत्रैष्णा को मानव त्याग सकता हैं। अथवा उसे त्याग देता है, परन्तु लोकैष्णा वह ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में भी निहित रहती है, और जब तब निहित रहती है, जब तक उसे पूर्ण रूपेण विवेक नही हो जाता। इसीलिए हमारा वेदमन्त्र यह कहता रहता है कि यह तीनों ऐषणा ही मानव के दुःखद का एक मूल कारण बनी रहती हैं। जैसे रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण है ऋषि-मुनि कहते हैं कि सतोगुण को भी त्यागना होता है। जब वह मानो पूर्ण रूपेण विवेक में परिणत होता हैं।

तो मानो आज का हमारा वाक् यह क्या कहता है कि परमपिता परमात्मा को न यह रजोगुण स्पर्श करता है, न तमोगुण और न सतोगुण। इसीलिए वह तो उसका आयतन माना गया है, अथवा उसका गृह माना गया हैं। इसीलिए जो मानव परमपिता परमात्मा से मिलन अथवा उसमें रत्त रहना चाहता है, तो वह रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण से उपराम होना होगा। जब तब इससे उपराम नही होता तो ऋषि-मुनि तक की उपाधि, वह मुनि नही बन पाता। तो इसीलिए आज मैंने बहुत पुरातन काल की वार्त्ताएं ली, जो ऋषि-मुनि, अपने में प्रायः अध्ययन करते रहते थे, अपने में अध्ययशील बने रहते थे, परन्तु आज का हमारा वाक्, हमारे कुछ मन्त्रार्थ, उस आयु की कामना में ले जाना चाहते हैं, प्रत्येक मानव के हृदय में, एक आकांक्षा, एक विवेक वृत्तिका बनी रहती है, और उस की आकांक्षा बनी रहती है, कि मैं आयु में पूर्ण रूपेण होना चाहता हूँ। प्रत्येक मानव के हृदय में यह आशंका लगी रहती है, कि अकाल मृत्यु भी नही होनी चाहिए, बिना समय के मृत्यु नही होनी चाहिए। परन्तु एक मानव कहता है कि बिना समय मृत्यु होती ही नही, एक कहता एक कहता है बिना समय के मृत्यु होती है। तृतीय प्राणी कहता हैं क्या मैं पूर्ण रूपेण आयु को चाहता हूँ, तो आयु में रत्त रहने के लिए बेटा! मैं मैंने बहुत अध्ययन युक्त औषधियों का तुम्हें वर्णन किया परन्तु आज जब मैं इसके ऊपर, विचार हम करने लगते हैं, तो एक-एक औषध ऐसी समीप आती है, जिसके पान करने से, मानव के चित्त की प्रवृत्तियों में परिवर्तन हो जाता है। मानो देखो, विवेचना और मानव सतोगुण की प्रतिभा में रत्त रहने लगता है।

पूज्य महानन्द जीः- पूज्यपाद! मैं यह जानना चाहता हूँ क्या आपने बहुत पुरातन काल की औषधियों का वर्णन किया, आधुनिक काल जैसे हमारी यह आकाशवाणी मानो जा रही है प्रायः इन औषधियों के सम्बन्ध में नाना प्रकार की भ्रान्तियां हैं। जैसे आपने जाल के वृक्ष का वर्णन किया था एक समय में, और एक समय आपने सोमकृतिका का वर्णन किया परन्तु आधुनिक काल में इनके नामों का कही वर्णन नही प्राप्त होता है तो उसके सम्बन्ध में कुछ प्रकाश दीजिए।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या यह पुत्र जालां ब्रीहि व्रतो देवाः जाल का वृक्ष तो होता है, परन्तु आधुनिक

नामोकरण वर्तमान के काल में उसको स्वीकार करते है। क्या करते हैं इसको हम अच्छी प्रकार नही जानते, रहा यह कि सोमकृतिका एक मानो एक हिमालय की कन्दराओं में, एक विलंग होती है, और उस बेल का नामोकरण ही सोमलता भी कहते हैं उसे उसको सोम कृतिका भी कहते है। मानो वह सोमलता का, सोम लता में उसमें एक विशेषता होती है उस विलंग में, क्या वह एक वृक्ष होता है, जिसे हम कोटली वृक्ष कहते हैं। कोटली वृक्ष के ऊपर देखो, उसकी मानो ऊर्ध्वा गति बनती हैं उसको हम तो सोमकृतिका कहते हैं उसे हम सोम बिलंग भी कहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! जैसे यह लवण है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या लवण का सोम से कोई सम्बन्ध नही होता।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! जाल वृक्ष है इसके सम्बन्ध में आपका?

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! यह तो जाल का वृक्ष होता है इसको तो तुम जानते ही हो, मानो तुम्हें यह प्रतीत होगा, जब साधना में परिणत रहते थे, तो जाल के वृक्ष के नीचे विद्यमान हो करके, उसकी छाया में मानो तपस्या और गायत्रणी छन्दों का प्रायः पठन-पाठन भी करते रहे हैं।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! एक वृक्ष होता है, कदम्ब का, क्या यह जाल का वृक्ष तो नही होता।

पूज्यपाद गुरुदेवः- नही पुत्र! वह वृक्ष भिन्न होता है यह वृक्ष भिन्न होता हैं परन्तु यह आमं ब्रीहि यह सोम वृत्तिका मानो कही नदियों के तटो पर भी प्राप्त होता हैं और यह कही हिमालय की कन्दराओं में भी और देखो, आम पृथ्वी पर भी इसका रूपेण होता रहता है यह कोई ऐसा आश्चर्य का वृक्ष नही है कि जाल का वृक्ष नही प्राप्त होता।

पूज्य महानन्द जीः- तो भगवन! जैसे आधुनिक काल में मानो निघण्टु इत्यादि में औषधि प्राप्त नही होती

पूज्यपाद गुरुदेवः- तो बेटा! यह तो औषधि विज्ञान, तो एक अनन्त है, इसकी कोई सीमा थोड़ी है। आज हम इसको सीमाबद्ध करने लगे, तो सीमा में, मानो निघण्टु वालों ने जितना जाना है उतना जाना होगा, परन्तु देखो, औषधियों का तो एक अनन्त भण्डार हैं, यह तो स्थावर सृष्टि हैं, इसकी कोई अनन्तता, इसको सीमा मे नही ला सकते।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो पीपल का वृक्ष है, इसका तो वर्णन आता हैं

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, इसका वर्णन क्यों नही आता।

पूज्य महानन्द जीः- मानो जैसे वट वृक्ष की आभा है इसका भी प्रायः आता रहता हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हाँ, इनमें सबमें गुणों का वर्णन, वैदिक साहित्य में प्रायः आता रहता है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! जैसे आपने भगवन! त्रिवेतकेतु ,मृचिका, शैलखण्डा इत्यादियों का प्रायः वर्णन किया है जैसे आप इससे पूर्व काल में भी, त्रि वर्धा का वर्णन कर रहे थे, तो त्रि वर्धा में मानो एक आधुनिक काल में देखो, तीन वस्तुओं के मिलान का नाम त्रि वर्धा आपने वर्णन किया हैं। तो आज हमें इससे यह प्रतीत होता है आधुनिक काल में जैसे शैलखण्डा, मृचिका, सोमलता ये आपने वर्णन किया, ये तीनों औषधि आधुनिक जगत में नही प्राप्त होती। परन्तु उनका यह प्राप्त भी होती है, तो इसको कोई जानता नही।

पूज्यपाद गुरुदेवः- तो बेटा! इसमें हमारा कोई दोष है? मानो यदि कोई नही जानता उन औषधियों को और वह पृथ्वी पर छाई हुई हैं, तो इसमें कोई मानो किसी प्रकार का दोषारोपण हम पर तो नही होना चाहिए, क्योंकि यह तो विज्ञान की और आयुर्वेद की वार्त्ताएं हैं, अब जैसे हम कल ही शब्दों में उच्चारण कर रहे थे, वह जो मानो हिमालय में देखो, सरोवर के द्वार पर एक औषध का जन्म होता है, तो उस औषध के सम्बन्ध में देखो, पांचों प्रकार के उसमें गुण होते है। पांचों प्रकार की उसमें आभा कहलाती हैं, जैसे उसके पतों का और गुण है छाल का

ओर गुण हैं गुदवानी का ओर गुण है। परन्तु जड़ की वृत्तिका का ओर गुण है उसके फलों का ओर गुण है तो यह तो गुणों का मानो सबको समावेश गुणों को करके उसको पान करने से आयु में वृद्धि होती है। उसको योगी जन, साधक जन उसको पान करते रहे पुरातन काल में तुमने अध्ययन किया होगा। क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय मानो बारह वर्ष तक, इस वृक्ष का औषध, चूर्ण केतु बना करके देखो, वह जलं आपां मानो आपो के साथ में पान करते थे, तो आयु दीर्घ आयु बन गया, तो यह कुछ अनुभव के वाक् हैं। मानो इसमें कोई ऐसी वार्त्ता नही है, जिसके ऊपर मानो विशेष टिप्पणी की जाए।

पूज्यपाद गुरुदेवः- तो क्या भगवन! ये वृक्ष आधुनिक काल में सुलभ हो सकते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्यों नही हो सकते, जब पृथ्वी पर हैं, तो क्यों नही हो सकते। जानने वाले के लिए जो कोई जानेगा नही, परन्तु उसके लिए संसार में है क्या। और जो जानना चाहता है, उसके लिए सर्वत्रता है ।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह मृचिका औषधि का भी, आपने बहुत समय में वर्णन किया हैं जैसे आपने यह ब्रह्म बूटी, ब्रह्मवादिनी का वर्णन किया है तो क्या ब्रह्म वादिनी औषध कौन-सी होती है? बेटा! यह जो ब्रह्मवादिनी होती है, यह तो गंगा के तटों पर होती रही, नदियों के तटों पर होती रही हैं, हिमालय में भी होती रही है, इसका मानो देखो, ब्रह्मा बूटी का वर्णन, ब्रह्म कृतिका भी कहते हैं, ब्रह्मा वेदनी भी कहते हैं, जिसको पान करने से ब्रह्म ज्ञान अथवा मस्तिष्क की ग्रन्थियों में इस स्पष्टीकरण होता हैं। मन की एकाग्रता होती हैं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह वायु नाशक होती है या वायु वर्धक होती है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! यह तो सब वायुनाशक होती हैं। क्योंकि वायु का इसमें समावेश नही होता। मानो जिसको हम सूर्य की अग्नि में तपाने के पश्चात, इसका जब खरल बनाते हैं, इसको पान करने से, सोम वाचिका औषध मिश्रण करने से, इसकी मानो यह सोम बन जाती हैं, यह आभा में युक्त बन जाती हैं ।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! आधुनिक काल में यह कहते हैं आधुनिक काल का जगत कि यह जो सोमलता हैं वह जो ऋषिजन सोम पान करते थे आधुनिक काल में उस सोमरस को शराब के रूप में परिणत करते हैं आधुनिक काल का जगत।

पूज्यपाद गुरुदेवः- हास्य क्या, यह सोम भव देवां क्या यह शराब कौन-सी वस्तु होती है?

पूज्य महानन्द जी- सम्भोनि वंचतं देवो ब्रह्मा जैसे मधु है, मधु का मानो पिपाद बना करके, उसे अग्नि में तपा करके मानो जो कुरावस्त होता है उसका नामोकरण कहते हैं।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! जितने भी यह आसव होते हैं यह तो सभी इस प्रकार होते हैं, वह भी एक आसव होता है। तो वह भी एक औषध में ही, औषध में लिया जाता है, यह सर्वत्र जितना खरल बना करके वृत बना करके मानो पिपाद बना करके यह सब एक प्रकार का यह औषध होता है, इस औषध के रूप में पान किया जाता है। रहा यह, कि सोम कैसे बनता है? सोम रस को कैसे पान करते हैं, मानो सोम रस को एक समय मानो हम बहुत पुरातन काल हुआ, त्रेता के काल की वार्त्ता है, भ्रमण करते बेटा! महर्षि उद्देनकेतु ऋषि के द्वार पर पंहुचे थे। तो उद्देनकेतु ऋषि के यहाँ सोम रस का पान किया जा रहा था परन्तु उद्देन ऋषि से कहा कि महाराज! उन्होंने हमें सोम रस का पान कराया। तो सोम मैंने कहा भई! सोम तुम कैसे इसको निर्धारित करते हो। तब उन्होंने यह वर्णन कराया, इसमें औषधियों का वर्णन किया उनमें एक तो शैलखण्डा औषध ली है शैलखण्डा ब्रह्मवदिनी, ब्रह्म कृतिका, सोम वर्णा, सोम लता, और कृतिका एक मजीठ एक वृक्ष होता है मानो इसके पांचों अंग ले करके और पीपल के पांचों अंग लिए पांचों अंग ले करके सोमलता के पांचों अंग ले करके मानो देखो, इसको अग्नि में तपाया, अग्नि में तपा करके मानो इसको दस दिवस तक सूर्य की मानो देखो, शुक्ल पक्ष में सूर्य की किरण, रात्रि

शुक्ल पक्ष में, चन्द्रमा की कान्ति का इसमें प्रादुर्भाव होता था। परन्तु देखो, इसमें जब उसकी छाया, पुट लग जाती तो दसवें दिवस मानो देखो, इसको ले करके हम पुनः अग्नि में तपाते थे, उतना ही जल इसमें प्रोक्षण करके, पुनः जल प्रवेश करके मानो देखो, इसके ऊपर एक वस्त्र को वृणित करके मानो देखो, इसके वस्त्र में जो उसकी भरिता आती मानो उसमें जो सोम प्रतिपा की एक पिपाद बन जाता, परन्तु देखो, उसको पुनः जल को अप्रहे मानो जल में छेदन करके, छेदन करने के पश्चात, वह उसमें औषधि पिपाद रह जाता, उसको मानो देखो, खरल करते थे, उसका चूर्ण रूपेण बना करके, उस रस के साथ उस चूर्ण पान करने का नाम सोम रस कहलाता है।

अब तुम यह प्रश्न करो कि इसका लाभ क्या हुआ? परन्तु देखो, इसका लाभ यह होता है, क्या इसको जो पान करता है, जितने रूग्ण होते हैं, शरीर में चाहे वह यक्ष्मा के रूग्ण हों, चाहे वह मानो रक्त शोधन के रूग्ण हो, परन्तु देखो, मूत्र का रूग्ण हो, किसी भी प्रकार का रूग्ण हो, ये सर्वत्र रूग्णों की एक औषधि कहलाती है, इसको पान करने से, चालीस दिवस पान कर लो, इस सोमरस को, तो मानो मानव की प्रवृत्ति सोम बन जाती हैं। काम उतेजना की शान्ति हो जाती है। ब्रह्मज्ञान में उसकी संलग्नता हो जाती है, प्रभु का स्मरण होने लगता है, परन्तु देखो, मन और प्राण की साधना में, वह साधक बन जाता हैं, इतने गुण मानो देखो, उसमें विद्यमान होते हैं।

महात्मा दधीचि का प्रारम्भिक जीवन

तो विचार-विनिमय क्या, पुत्र! हम साधना में परिणत रहते थे, तो प्रायः इन औषधियों का सोम लताओं का पान करते थे, इन्ही सोम लताओं के पान करने से मानो देखो, अश्विनी कुमार, महात्मा दधीचि ये ब्रह्मवेत्ता हुए थे, ब्रह्मवेत्ता मानो देखो, यह जो महात्मा दधीचि थे जब यह बाल्यकाल में अध्ययन करने के लिए, माता-पिता ने जब यह रेवक ऋषि महाराज के यहाँ इनका प्रवेश कराया, तो रेवक ऋषि महाराज उनको अध्ययन कराते परन्तु मस्तिष्क में नही आता था। जब मस्तिष्क में नही आता था, तो एक वर्ष के पश्चात माता-पिता इनके समीप आए उन्होंने कहा क्या ऋषिवर क्या बाल्य ने कुछ शिक्षा में प्रगति की, उन्होंने कहा इन्होंने कोई प्रगति नही की। इनका जो मस्तिष्क है, उसकी जो ज्ञानवाहक नाड़ियाँ हैं, यह शून्यता को प्राप्त हो गई है। उन्होंने कहा प्रभु! क्या करें? उन्होंने कहा जैसी इच्छा हो तो मानो देखो, उस समय बाल्यकाल का नाम दधीचि का, सोमपान था तो सोमपान कहते थे इनको, परन्तु देखो, माता इन्हें गृह में ले आई और देखो, माता ले करके वह महात्मा भुंजु के द्वार पर पंहुची, महात्मा भुंजु की जो धर्म देवी जिनके गर्भ से अश्विनी कुमारों का जन्म हुआ था मानो देखो, उस माता के वह माता आयुर्वेद का अध्ययन करती थी, उन्होंने कहा मातेश्वरी! आओ, उन्होंने कहा कि देवी! यह मेरा पुत्र देखो, इसका मस्तिष्क शून्य हो गया है, उन्होंने कहा शून्य हो गया तो मैं क्या कर सकती हूँ? उन्होने कहा कि हमने श्रवण किया है कि तुम आयुर्वेद में अध्ययन कर रही हो। आयुर्वेद में तुम्हारी विशेष गति हो गई है, इस बालक को ओजस्वी बना दीजिए। उन्होंने कहा बहुत प्रियतम। तो मेरे पुत्रों! ऐसा मुझे स्मरण हैं क्या उस माँ ने उसका नामोकरण, सोमलता उनका नाम भी सोमलता कहते थे। परन्तु सोमलता ने बालक को अपने आँगन में स्थित किया और सोमरस को उन्होंने निर्धारित मानो देखो, मार्ग से, औषधियों को लाना उनको खरल बनाना पंचांग को लाना, खरल बनाना, मानो सब एकत्रित करके, रहे उनका मानो जल में एक पिपाद बनाया, और उस पिपाद को बना करके खरल करने के पश्चात मानो उस औषध को बालक को पान कराया जब सोम को पान कराया, तो चालीस वर्ष के पश्चात मानो उसे ब्रह्म की कोई उपलब्धि हुई ब्रह्म की उपलब्धि क्या हुई? कि जिन **प्रवृत्तियों में उसका मन निहित रहता था उससे मन का परिवर्तन हो गया।** मन की विचारधारा में परिवर्तन जब हुआ तो प्राण की दशा में भी परिवर्तन हुआ। तो परिवर्तन होने से मानो देखो, जब इन औषधियों का पान किया, तो बाल्य एक महान बन करके मानो चालीस दिवस में, चालीस चालीस दिवस के उन्होंने तीन अनुष्ठान किए तीनों अनुष्ठानों में

वह उन्हें ब्रह्म की अनुभूति होने लगी। जब ब्रह्म की अनुभूति होने लगी, वासना संसार की वासना समाप्त होने लगी। तो मानो देखो, वही ब्रह्मवेत्ताओं के समाज में पूज्यपाद गुरुदेव के द्वार पर जा करके, वह अध्ययन करने लगे।

तो बेटा! तुम्हें प्रतीत होगा महात्मा दधीचि ब्रह्मवाद में कितने ब्रह्मवादी थे मानो देखो, ब्रह्मज्ञान मानो देखो, उनकी एक-एक नाड़ी का अंग बन गया था, एक-एक अंगं ब्रह्मे वाचो वह ब्रह्म का उनका शरीर ही अंग बन गया विचार क्या देखो, वह यहाँ तक देखो, कुछ औषधियों का पान करके जितने मार्ग में भ्रमण करने वाले मानव जलचर है, अथवा हिंसक है, उस सब प्राणियों की भाषा को वे स्वतः यह जानते थे ये प्राणी यह कह रहा है यह प्राणी यह कह रहा है समुद्रों में मछली यह उच्चारण कर रही है मानो देखो, मार्ग में भ्रमण करने वाला मृगराज हिंसक प्राणी यह कह रहा हैं। तो यह भयंकर वनों में तपस्वी बन करके, मानो देखो, गुड़वानं एक औषध होती है, उसको गुड़मानक औषध कहते हैं, वह हिमालय में प्राप्त होती हैं। मानो जहाँ एक विशाल पर्वत हो, उस पर्वत के मध्य में, वह औषध उगती हैं मानो उसका यह एक नृत्त है, क्या उसका जो पत्र है, वह जल जैसे मेघों से वृष्टि हुई, उस औषध में जल आया, पत्र का जल मानो उस वज्र पर पड़ा तो वज्र पर जाने से ही मानो देखो, वह वहाँ वज्र के पृथ्वी के कण बनाना प्रारम्भ कर देता है, जब वज्र के मानो पृथ्वी के कण बने, वहीं वह पौधा उग आता है। जब उगने लगता है उस पौधे के उगने से, मानो देखो, उस पौधो हम जब धारण करते हैं तो उसको गुडवान एक औषध कहते हैं तो उस औषध को हम निघण्टु में इत्यादि में हम जानने लगते हैं तो यह अनुभव का विषय बन जाता है। इस औषध के पान करने से यदि हम सौ दिवस तक इस औषध का पान कर लेते हैं तो इसको अग्नि में तपाना अग्नि में तपा करके सूर्य की आभा में इसको कृत करना इसको खरल करना और तप करने के पश्चात मानो इसको पान करना जब यह पान करते हैं तो ऐसा हमारे यहाँ आयुर्वेद में आता है, क्या यह सौ दिवस तक मानो देखो, इसको पान करने से, ऐसा कहते हैं कि शरीर में कि किसी भी प्रकार का रूग्ण नही रहता, और जिस मानव की ग्रन्थियाँ, अज्ञान से मानो नष्ट हो गई हैं, कामना से शिथिल हो गई हैं मानो देखो, उनमें जागरूकता आ जाती हैं, और जागरूक आ करके, वह ब्रह्मवादी बनने लगता हैं, उसका यदि योगाभ्यास में वह परिणत हो जाता है, योगाभ्यास करते-करते वह तीन-तीन हजार वर्षों की आयु का वह नृत्त करने लगता हैं।

तो विचार क्या है मुनिवरों! देखो, मैं औषध विज्ञान में, मानो इतना विश्लेषण नही दे सकता। विचार यह है कि जैसे मैनें जाल के वृक्ष का वर्णन किया बेटा! जैसे तुमने अभी कहा है कि कदम्ब का वृक्ष होता हैं कदम का वृक्ष भिन्न होता हैं उसको पुरातन काल से ही कदम्ब कहते हैं उसको पुरातन काल से ही जाल कहते हैं। मानो देखो, इसी प्रकार गुड़वानम् औषध जो है यह परम्परागतों से इसी प्रकार है, मृचिका इसी प्रकार है तो शैलखण्डा इसी प्रकार है मानो देखो, ये तीन प्रकार की जो ब्रह्मवादिनी है ब्रह्म बूटी है, ब्रह्म कृतिका है, यह तीन प्रकार की होती है कुछ हिमालय में प्राप्त होती है, कुछ गंगा के तटों पर प्राप्त होती हैं, जल का इनको आश्रय हो जाता हैं, कुछ पर्वतों के आश्रय रहती है, कुछ जल के आश्रय रहती है, मानो देखो, इनको शीतल जल के आश्रय रह करके, यह अपने गुणों का वर्णन करती रहती है।

तो विचार-विनिमय क्या मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना में जाना नही चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि यह जो औषध है, इस औषध विज्ञान के ऊपर, परन्तु हो सकता है आधुनिक काल में इनका नामोकरण में परिवर्तन हो सकता है। जैसे हमारे यहाँ च्यवन ऋषि के जीवन में प्रायः आता रहता है जब च्यवन ऋषि के युवा बनाने के लिए, आयु दीर्घ बनाने के लिए, उन्होंने च्यवन कृतिका एक औषध का निर्माण किया था। क्योंकि वह च्यवन ऋषि को ही प्राप्त हुआ तो वह एक मानो देखो, तीन वृक्ष होते हैं। तीन वृक्ष एक कदम्ब का वृक्ष होता हैं, एक

जाल का वृक्ष होता हैं, एक पीपल का वृक्ष होता हैं। इन तीनों के पंचांग को बनाया जाता है। इनके बनाने का क्रम इस प्रकार है क्या इन तीनों औषधियों, तीनों वृक्षों के पांचों अंगों को ले करके इन्हें अग्नि में तपाते हैं। अग्नि में तपाते रहते हैं, तपा करके इन्हें फिर मानो देखो, पृथ्वी में बहुत नीचा गधेला करके, उसमें मानो देखो, पात्र को दमन कर देते हैं वह मानो देखो, एक माह तक उसमें दमन रहता है। उसको निकास लिया जाता है, निकास करके पुनः मानो देखो, उस रस को हम, उसका रस जो बना है, अग्नि में तपाया हुआ था उस रस को हम एकान्त स्थलियों में, पात्रों में भिन्न-भिन्न पात्रों में परिणत कर देते हैं। मानो वह तीन पात्र है, जिसे हम कंच कुणी के पात्रों में मानो देखो, उसके जितने भाग बन सकते हैं, उतने भाग बनाएं जाएं परन्तु जैसे पंच रंगा होता है, सूर्य की पांच किरणे होती हैं मानो देखो, एक हरित है, एक मानो लोह है, एक पीत वर्ण की है, एक श्वेत वर्ण की है, एक लालिमा वर्ण की है। इन सब वर्णों को ले करके मानो भिन्न-भिन्न पात्रों में इनको स्थिर कर देते हैं। जल को और उसको सूर्य की किरणों में तपाते हैं, तो तपाने से मानो देखो, उसको तपाते रहते हैं दस दिवस मानो एक इक्कतीस दिवस तक उनको तपाते हैं मानो जो प्रथम जो श्वेत वर्ण की है, उसे मानव को पान करना प्रारम्भ कराते हैं। वह गो का घृत हो, गो का दुग्ध हो, दुग्ध को मानो जैसे हम गऊ के घृत दुग्ध को मानो सांयकाल को इसी पात्र में उसको कृतिका कर देते हैं। तो प्रातः काल उसमें से मानो देखो, घृत को उसमें से निकालते हैं, तो वह जो औषध है मानो देखो, वह भी उसमें से उसी प्रकार परिणत कर दी जाती है। मानो देखो, वह उसको जब खरल करते हैं, तो उसमें हमारे आयुर्वेद में तक्र कहते हैं, उस तक्र को लगभग एक वर्ष तक मानव को पान कराया जाएं, और अन्न न दिया जाएं, केवल इसी को पान कराया जाएं तो वह जो तक्र है, उसके एक वर्ष के पान करने से मानो उसके सौ वर्ष का आयु बलवती हो जाता हैं।

तो परिणाम क्या है मानो एक-एक वर्ष इस प्रकार मानो तपस्या करने से ब्रह्मवर्चोसि उसका मन प्रसन्न रहे, एक वर्ष तक, जब तक उसे पान करे, मानो वह ब्रह्मवर्चोसि बन करके ब्रह्मवादी बन करके, ब्रह्म का चिन्तन करें गायत्री की गोद में चल जाएं। तो उसकी आयु में दीर्घता आ जाती हैं। तो परिणाम क्या है यह औषध विज्ञान हमारे यहाँ एक विशेष माना जाता है। उसके तक्र बनाने से मानो उसका पान करने से मानव की आयु में दीर्घता आती है। रहा यह, कि आज हम अपने को कायाकल्प में ले जाना चाहते हैं, कायाकल्प की चर्चा तो, मैं विशेष कल ही कर पाऊंगा परन्तु ये सब कायाकल्प के ही मानो देखो, एक वृत कहलाता है एक नृत्त है जिस नृत्त को हम कायाकल्प के सम्बन्ध में, काया कल्प का अभिप्रायः क्या है? कायाकल्प किसे कहते हैं? काया कहते है। मानव के शरीर का नाम काया है, इसका कल्प कर देना, कल्प कहते हैं मानो इसको पुनः जैसे वस्त्र को हम जल में मानो देखो, उसका धोवन कर देते हैं, उसमें कोई भी, किसी प्रकार की देखो, अशुद्धियां नही रहती, वस्त्र में, इसी प्रकार कल्प का अभिप्रायः यह है कि हम इस शरीर को वस्त्र बना करके वस्त्र की भांति इसे स्वच्छ बना लेते हैं। कैसे स्वच्छ बनेगा? यह स्वच्छ उस काल में बनता है सबसे प्रथम मानो जितना भी अशुद्ध विजातीय पदार्थ है, उन विजातीय पदार्थों को दूरी कर दिया जाएं वह उसको कैसे किया जाएं? उसको वमन के द्वारा किया जाता है, वमन के द्वारा किया जाता है। वमन के द्वारा करते हुए सोम मृचिका यह मानो बहुत क्रियाकलापों में आता रहा है। और इसमें त्रिवर्ण त्रि पुट है जिसको हम त्रिवाण कहते हैं त्रि वंचनी कहते हैं श्वधनी कहते हैं मानो देखो, यह आधुनिक काल, में महानन्द जी तुम इनको क्या कहते होगे।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! इसको त्रि कुटा और त्रि जटा और त्रि वर्ध कहते हैं।

मिथ्यावाद समाप्त करने की औषधि

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या मानो देखो, यह त्रि वर्त तो यह पुनः हो ही गया, परन्तु देखो, इसको त्रि कुटा भी

आप उच्चारण करते रहते हो तो मानो यह जो त्रि कुटा है इसको पान करना चाहिए और यह गऊ के घृत के द्वारा, मानो इसका खरल बाईस दिवस तक इसका खरल बनाना चाहिए। गो घृत के द्वारा, खरल बनाते रहो, बनाते रहो, इसकी लुगदी बन जाती हैं, जब लुगदी बन जाती है तो मानो देखो, इसको जैसे रोहिणी केतु मण्डल की छाया आती है, इसमें मानो इसको स्थिर कर देना चाहिए, एक पात्र में, जिससे इसमें किसी प्रकार का और परमाणु न आ जाएं, कोई जीवाणु न आ जाएं, परन्तु देखो, इसको वस्त्र में, इसको ढ़ाप देना चाहिए। इसी प्रकार देखो, उसकी लुग्दी के द्वारा जब मानो देखो, यह कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष आता है, तो शुक्ल पक्ष में पन्द्रह दिवस तक, चन्द्रमा की कान्ति में, इसे स्थिर करना, और पुनः सूर्य की मानो देखो, श्वेति सूर्य हो, तो जिसे हम शुक्ल पक्ष कहते हैं, शुक्ल पक्ष में प्रतिका होती हैं मानो इसमें तपा करके और इसे छाया में व्रेण करके मानो पुनः इसका खरल कर देना चाहिए। चूर्ण बना लेना चाहिए और इसमें मानो और त्रिफला ले करके चूर्ण करो इसमें त्रिकुटे की पुट लगा देनी चाहिए, इसमें बेल के विलंग जो वृक्ष होता हैं, उसको पांच अंगों को ले करके, उसकी पुट लगा करके मानो देखो, यह आम का जो फलों का वृक्ष होता है, इसमें एक खोखली की जाती है, इसको लगभग छह माह तक, इसकी लुगदी बना करके, गो घृत और दुग्ध के साथ में, इसको उसमें परिणत कर दिया जाएं मानो देखो, लगभग छह माह तक उसमें रहे, उसको निकास करके, आम के वृक्ष से तो मंगलं ब्रहे मानो इसको पुनः खरल करना चाहिए, पुनः खरल करके, बाईस दिवस तक, यह आम के, नीम के जो नीमां होता है परन्तु इसकी खोखली में वृत करके, मानो इसको एक वायु से शून्य कर देना चाहिए, बाईस दिवस तक उसमें रह करके मानो इसका खरल करना चाहिए, उस औषध को पान करने से, ऐसा मुनिवरों! मुझे स्मरण हैं, क्या मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने जब पच्चासी वर्ष तक मिथ्या नही उच्चारण किया था, तो इस औषध का पान किया था।

तो मेरे पूज्यपाद ने और अन्न का पान नही किया, इसको पान केवल जल के साथ में, इसका पान करते रहे, इसके पान करने से हुआ क्या? क्या मिथ्यावाद समाप्त हो गया हृदय से चला गया हृदय में जो मानो सूक्ष्म वाहक नाड़ियाँ जो संसार के वैभव में समाप्त हो गई थी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को अभिमान भी आ गया था उस अभिमान से ज्ञानवाहक नाड़ी जो हैं, वह मानो देखो, वह नष्ट हो जाती हैं अभिमान जहाँ आया मद का जहाँ प्रलोभन आया देखो, द्रव्य का जहाँ अभिमान आया तो मानव की ज्ञानवाहक नाड़ियाँ नष्ट होने लगती हैं।

तो मानो देखो, इस औषध के पान करने से पूज्यपाद गुरुदेव को यह जीवन शक्ति आई, स्मरण शक्ति जागरूक हो गई, मिथ्यावाद से रहित हो गएं और रहित हो करके ब्रह्मवादी बन करके, उनका आयु मानो पांच सौ पैंसठ वर्ष का आयु बना और आयु बन करके उसी में नृत्त करते रहे, तपस्या में रत्त रहे, तो परिणाम मैं इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ, पुत्रों! क्या यह जो औषध विज्ञान है, यह बड़ा विशेष विज्ञान है, जिसके ऊपर मैं मानो काया कल्प की चर्चा तो पुनः ही प्रगट करूंगा, काया कल्प में तो इतना ही उच्चारण किए देता हूँ कि काया कल्प में मानो देखो, पंचीकरण जो है यह भी उतना ही करना चाहिए जितनी इसकी आवश्यकता होती है। पूर्ण रूपेण पंचीकरण करने से भी मानव की ज्ञानवाहक नाड़ियाँ नष्ट हो जाती हैं। मानो देखो, इनमें शोधन करने वाले ऋषि होने चाहिए, जिनको अनुभव हो, अनुभव की प्रतिभा मानो एक महानता में परिणत रहनी चाहिए। आज मैं इस सम्बन्ध में, तुम्हें विशेष विवेचना में मैं तुम्हें ले जाने नही चाहता हूँ, पुत्रो! विचार केवल यह प्रगट करना चाहता हूँ क्या मानो देखो, गो घृत, गो दुग्ध, इनकी बड़ी विशेषता और बड़ा वर्णन आता रहता है। क्योंकि हमारे यहाँ जितने भी दुग्ध देने वाले पशु होते हैं, इनमें भिन्न-भिन्न प्रकार की धातु नृत्त करती रहती हैं, मानो देखो, जैसे गौ घृत में स्वर्ण होता है, मानो जैसे अजा के दुग्ध में औषध विज्ञान मानो कुछ देखो, नृति हेणक एक औषध होती है, एक धातु होती है, जिसका उसमें विशेष होता हैं, देखो, निताम्ब वृक्ष होता हैं, मानो देखो, उसका सम्बन्ध एक पशु से

होता हैं जिस पशु का नाम उंटनी कहलाता हैं। परन्तु उसके दुग्ध में मानो देखो, लोहे की विशेषता विशेष होती हैं। परन्तु देखो, जैसे एक कालिमा एक पशु होता है जिसको भीषणी कहते हैं, परन्तु उसके दुग्ध रणेनकेतु, श्वेत्तानि, इन दोनों मानो धातुओं का मिश्रण होता है और यह जो माह वृतिका मानो देखो, एक वृक्ष होता हैं, जो पर्वतों में प्राप्त होता है, उसके दुग्ध में पारा की विशेषता होती है। परन्तु एक पशु होता है, जिसको हमारे यहाँ घुड़ंग कहते हैं देखो, अश्वानि कहते हैं, वह जो अश्व का जो वह दुग्ध हैं उसके दुग्ध में मानो देखो, तम्ब्रपत का एक विशेष धातु का मिश्रण होता है मानो देखो, इन दुग्धों का भिन्न-भिन्न प्रकार का, एक प्रकार का नृत्त है बेटा! यह जो विशाल वन है, मैं कहाँ चला गया हूँ, यह तो विशाल वन में चला गया हूँ, औषधियों का बड़ा विशाल वन है, पुत्रों! परन्तु मैं केवल इतना उच्चारण करने के लिए तत्पर हूँ, क्या इनके दुग्धों में भिन्न-भिन्न प्रकार के गुण है, कौन-कौन से रूग्ण में, कौन-कौन से दुग्ध का पान किया जाएं, कौन-सी औषधियों का पान किया जाएं यह तो बेटा! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें वर्णन कर दिया था। परन्तु आज मैं इतना समय तुम्हें इतनी दूरी नही ले जाना चाहता हूँ। विचार-विनिमय क्या है? क्या मानो देखो, यह जो जितना भी हमारे यहाँ क्रियाकलाप हैं, अथवा कायाकल्प का क्रियाकलाप है, ये भी बड़ा विचित्र माना गया है।

एक समय देखो, राजा रावण का जीवन तुम्हें स्मरण होगा, राजा रावण एक समय भ्रमण करते हुए वह महात्मा श्वेति ऋषि के द्वार पर पंहुचे थे, तो श्वेति ऋषि महाराज को सौ वर्ष हो गएं थे औषधियों के विज्ञान में रत्त हुए, उसी के ऊपर अनुसन्धान कर रहे थे, भयंकर वनों में, मानो नृत्त करते थे ब्रह्मचारी उनके द्वार पर आते तो एक समय राजा रावण वहाँ पंहुचे। राजा रावण ने कहा-प्रभु! मैं यह चाहता हूँ कि मेरे मस्तिष्क की जो ग्रन्थियाँ हैं, उनका स्पष्टीकरण हो जाएं, तो उस समय स्वाति ऋषि महाराज ने मानो देखो, जाल के वृक्ष का पंचांग, और सोती वृक्ष होता हैं उसका पंचांग एक मानो बेल के वृक्ष का पंचांग एक मानो देखो, कृतिकान औषध होता हैं उसका एक मानो पंचांग उन्होनें वृक्षों के पंचांग का निर्णयात्मक किया। परन्तु उन्होंने उसको निर्माणित किया, और राजा रावण का बारह वर्ष तक ब्रह्मवर्चोसि वृत्त करके पान कराया, उनका जीवन मानो एक विशेष बन गया। वह नाभि केन्द्र में, अपने में मानो योगाभ्यास करते रहे, वह मानो देखो, योग की प्रतिभा में भी कुछ चले परन्तु उसमें भी एक नृतिका आने लगी। तो मानो देखो, ऐसी औषधियों का पान कराने वाले, बहुत से ऋषि-मुनि हुए हैं। जो स्वतः पान करते थे, अपने पान कराते रहते थे, क्योंकि यह तो एक विषय है, एक विचार है, परन्तु एक मानव की कोई दशा है, तो जब उसमें मानव परिणत हो जाता है, संलग्न हो जाता है, जो उसमें लगा रहता है, और एक समय आता है, कि उसमें वह सफलता को प्राप्त होता हैं।

तो मैं आज विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल तुम्हें यह उच्चारण करने के लिए आया हूँ, क्या पुत्रों! देखो, त्रिवर्धा औषधियों का गुण, हमारे वैदिक साहित्य में, विशेषकर आता रहता है। मानो तक्र का वर्णन विशेषकर आता रहा है, यहाँ देखो, सोमलता के सम्बन्ध में, हमारे ऋषि-मुनि सर्वत्रता में सोमरस का पान करते है सर्पकेतनी एक औषध होती है, उसका आसन बनाते थे, जिसके आसन पर मानो देखो, सर्प नही आता, उस औषध में यही गुण होता हैं, परन्तु एक बिछेत्क नामक एक औषध होती है, देखो, उसका आसन बनाने से बिच्छु उसके समीप नही आ पाता। एक मानो श्रृंग वाचक एक वृक्ष होता है उसकी छाल का आसन बनाने से, मानो देखो, आसन पर विद्यमान हैं, अंग संग देखो, उसके समीप सिंहराज विद्यमान है, वह सिंहराज उस महापुरूष को छू नही पाता। परन्तु देखो, इस प्रकार वृक्षों की हमारे यहाँ यह जो स्थावर सृष्टि है, इसका बड़ा विशेष वर्णन आता रहता है। बेटा! मुझे समय मिलता रहेगा, मैं अण्डज सृष्टि के सम्बन्ध में भी मानो इसके ऊपर बारह वर्ष तक अध्ययन किया था। बारह वर्ष तक यह देखो, अण्डज सृष्टि के ऊपर अध्ययन किया एक सौ बीस तक इस मानो देखो, आयुर्वेद के ऊपर अध्ययन

किया वृक्ष विज्ञान के ऊपर मानो इसकी लुग्दियां बना बना करके इसको मानो पान कराते रहते थे, और नाना ऋषि-मुनि इसको पान करते रहे मानो देखो, जंगम सृष्टि और उदभिज सृष्टि हैं यह चारों प्रकार की सृष्टि का वर्णन, वैदिक साहित्य में बेटा! प्रायः आता रहता है यह विशाल वन है, इसमें बहुत तपस्या की आवश्यकता होती है, मौन रहने की आवश्यकता होती है, तो इसीलिए आज का विचार मैं तुम्हें यह देने जा रहा हूँ पुत्रों! क्या हमारे यहाँ, यह विशाल वन में, मैं चला गया हूँ, तो इस वन में से किसी काल में बेटा! अवकाश भी हमें प्राप्त होगा। परन्तु देखो, मैं आज इतना ही विचार तुम्हें देने के लिए आया हूँ, परन्तु जाल का वृक्ष भिन्न होता है, कदम्ब का वृक्ष भिन्न होता है, कदम्ब के कुछ और भी गुण, कदम के कुछ और भी इसके नामोकरण हैं जिसको श्याम श्वेत नामक एक वृक्ष भी कहते हैं कदम्बेश्वर भी कहते हैं मानो देखो, इसकी छाया में विद्या अध्ययन करने से मानो यदि तुम विज्ञान की विद्या का पान करना चाहते हो, और इसकी छाल, इसके मानो पत्र, इसके पांचों अंगों के द्वारा तुम याग करना चाहते हो, और इसी की समिधा के द्वारा अग्न्याधान करना चाहते हो, मजीठ वृक्ष की समिधा हो चन्दन की समिधा हो, और श्वेतकेतु एक वृक्ष होता है, उसकी समिधा हो, मानो इसका एक वर्ष तक देखो, मन को एकाग्र करके याग करने से पंच कोण में याग करने से, मानव को देखो, **अपने पूर्वज देखो, जो अन्तरिक्ष में जिनके शब्द विद्यमान हैं, चित्रों के सहित है, वह स्वप्न में आने तुम्हें प्राप्त हो जाते हैं।** इस प्रकार का बेटा! विज्ञान हमारे औषध विज्ञान में निहित रहता हैं। अश्विनी कुमारों ने इस प्रकार का अध्ययन किया। देखो, महात्मा दधीचि ने भी, इस प्रकार का अध्ययन किया है, इसी प्रकार का अध्ययन, महर्षि वैशम्पायन और कतुक ऋषि महाराज ने भी और महर्षि भारद्वाज इत्यादि देखो, इन वृक्षों के ऊपर अन्वेषण करते रहे, तो आज का विचार हमारा समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, परमात्मा के रचाए हुए विज्ञान के ऊपर कुछ अपने सूक्ष्म (पुस्तक से) विचार अपने में लाना चाहते हैं तो हमारा यह वाक् कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए औषध विज्ञान के ऊपर हम अनुसन्धान करें विचार करें वैद्यराज बनें किरणों को जानने वाले बनें, अग्नि की प्रधानता में अपनी प्रतिभा रहे और परमात्मा का सदैव चिन्तन बनो रहें क्योंकि परमात्मा के आश्रय से यह विज्ञान हमारे समीप आता है तो यह आज का विचार समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

३ वनस्पति से दीर्घ आयु १६ ०७ १९८४

जीते रहो, देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव मानो जो इन्द्रोमयी कहलाता है। वैदिक साहित्य उसे इन्द्रश्चम वर्चोसि की उपाधि प्रदान कर रहा हैं। हम सब प्राणी उस महान देव के याग में आँगन में रमण करते रहते हैं। प्रत्येक प्राणी उस परमपिता परमात्मा का यशो गुणगान प्रायः गाता ही रहता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा एक कण-कण में व्याप्त रहते हैं। तो इसीलिए मानो हमारा हृदय अगम्य ज्योति कहलाता है, वह इन्द्र हैं, मानो वह इन्द्रियों का स्वामीतव करने वाला है, जितना यह संसार प्रायः हमें दृष्टिपात आता रहता है, यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का नेतृतव करने वाला हैं, तो हम उस परमपिता परमात्मा की गोद में मानो अपने आनन्द को मानो अपने में धारण करना चाहते हैं। जिस प्रकार माता का पुत्र मानो व्याकुल हो जाता है, क्षुधा में माता अपनी लोरियों का पान करा देती है, अथवा वह क्षुधा से मुक्त हो जाता है, वह जो क्षुधा से पीड़ित हो रहा था, उससे वह उपराम हो जाता है। जो आनन्दमयी खिलवाड़ करने लगता है, उसे उसी प्रकार हम उस परमपिता परमात्मा की गोद में अथवा उसके आनन्दमयी आभा में हम सदैव रत्त रहना चाहते हैं। हे प्रभु! अनन्तमयी ज्योति के स्रोत तुझे वह वेद इन्द्र कहता है। मानो तू इन्द्र हैं, तू धीमी-धीमी वृष्टि करने वाला है। नाना प्रकार के व्यंजनों को जन्म देने वाला है। मानो देखो, जड़वत संसार, तेरी आभा में जब, रत्त रहने लगता है तो उसमें एक महान, पवित्रता महानता की उज्जलता उसमें ओत-प्रोत हो जाती है। तो हे प्रभु! हम तेरी शरण और तेरे आनन्दमयी उस लोरियों का पान करना चाहते हैं, जिससे हम सर्वत्र रसों का पान करने वाला हों, जैसे वैद्यराज, नाना प्रकार की औषधियों को पान करता हुआ औषधियों को जानता हुआ अपने में रसों धर्मा बन जाता है, वह रसों को उपलब्ध करने लगता है। तेरे नाना प्रकार के व्यंजनों को जान करके, इस संसार सागर की ऊर्ध्वा में एक कल्पना करने लगता है। मानव का बौद्धिक जो जीवन है, वह पवित्र बन जाता हैं। उसमें और तेज की प्रतिभा का जन्म हो जाता है। तो हे परमदेव! तू आनन्दमयी, तू सच्चिदानन्द आनन्दमयी कहलाता है। तू सतचित आनन्द हैं, हम आनन्द के लिए, सदैव पिपासी रहते हैं, हे प्रभु! तू हमारे में महानता की प्रतिभा, ओत-प्रोत करा, जिससे प्रभु! हम इस संसार सागर से पार हो जाएं। कोई संसार में मान की तो कोई अपमान की प्रतिभा में रत्त हो रहा है। तो हे भगवन! हम आपको बारम्बार तेरी महिमा को दृष्टिपात करते हुए, तेरे अनन्तमयी ब्रह्माण्ड की कल्पना करते हुए, हमारा मस्तिष्क नतमस्तक हो रहा है, हम सदैव आपकी महिमा का ही गुणगान गाते रहें।

तो आओ, मेरे पुत्रों! आज का वेदमन्त्र, हमें उस मार्ग का प्रदर्शन करा रहा है उस उस मार्ग के पथिक बनना चाहते हैं, जिस पथ पर ऋषि-मुनि, आज तक अपने याग में परिणत होते रहें है। योगाभ्यास करते हुए, अपने प्राणत्व मनस्तव को जान करके, ऊर्ध्वा को गति करते रहे हैं। तो हे देव! हम उस महानता की, पिपासा मे, सदैव संलग्न रहते हैं, रहना चाहते है जिससे प्रभु! आपका स्मरण हमारे एक-एक अंग-अंग में समाहित हो जाए। जैसे प्रातः काल सूर्य उदय हो करके, नाना प्रकार की किरणों से इस संसार को आच्छादित कर देता हैं पृथ्वी को आच्छादित कर देता है, इसी प्रकार हे प्रभु! आपके नामोकरण से हमारा जीवन इतना परिपूर्ण हो जाएं कि-प्रभु! देखो, आपके नाम के स्मरण की तरंगें हमारे अंग से उत्पन्न होने लगे हमारा जीवन ऐसा महान ऐसा कृतज्ञ होना चाहिए ऐसा निष्पाप होना चाहिए ऐसा निष्कपट होना चाहिए हे प्रभु! जो आपकी देन वह जो आपकी सुगन्धि है। अंग-अंग से उसका प्रसार हो जाए। हम सुगन्धि युक्त बन जाए।

तो हे मेरे प्रभु! तेरा वेद तेरा ज्ञान अनुपम हैं, तू अनन्तमयी कहलाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का

हमारा वेद क्या कहता है मैं बेटा! इससे पूर्व काल में भी, वनस्पति विज्ञान के सम्बन्ध में, मानो मानवीय अपनी विचारधारा को ले जा रहा था, जिस विचारधारा की परम्परा मानों वैद्यराजों के मस्तिष्कों में प्रायः रही है, वैद्यराज किसे कहते हैं? मानो जो औषधियों के मर्म को जानता है, अथवा जो औषध विज्ञान में जो रत्त रहता है, उसको मानो वेदोक्तं ब्रह्मवाहा वेद यह सब वेदान्त धन्वस्ते यह शब्द है, जो आयु के वेद को जानता है उसे वैद्यराज कहते हैं, उसे वैद्यराज कहते हैं उसे वैद्यराज कह करके हैं क्योंकि वह वेद के अंगों को जानता हैं, वेद आयु के मर्म को जानने के लिए तत्पर रहता है, प्रत्येक मानव को यह प्रबल इच्छा बनी रहती है क्या मैं मानो वेद के मर्म को जान करके, मैं वैद्यराज बन जाऊं ये प्रबल इच्छा होती है। क्या मैं वैद्यराज बनना चाहता हूँ वेद कहते हैं मानो वेद प्रकाश को कहते हैं, और वह वेदास्ति मानो देखो, जो उसकी सन्धि में परिणत करता हुआ, मानो देखो, जो वनस्पति विज्ञान को अंग को, प्रत्यंग को, जानता है, उसे वैद्यराज कहते हैं।

मानो देखो, मुझे स्मरण आता रहता है मेरे पुत्रों! देखो, त्रेता का काल तो प्रायः सभी जानते हैं त्रेता के काल की वार्त्ता भी सर्वत्र जानते रहते हैं परन्तु देखो, जब हमारे यहाँ राम और रावण का संग्राम हो रहा था तो रावण के पुत्र मेघनाथ जी मानो बड़े पराक्रमी और बलिष्ठ थे मानो देखो, उनके यहाँ एक शस्त्र था शक्ति अस्त्र उसे कहते थे मानो वह महाराजा इन्द्र को जब उन्होंने विजय किया था तो उससे प्राप्त हुआ था जब वह त्रेता के काल में जब राम और रावण का संग्राम हुआ तो वह जब संग्राम के लिए रण भूमि में अपने को ले गएं रथों में विद्यमान हो करके लक्ष्मण और मेघनाथ दोनों का संग्राम हुआ जब दोनों का संग्राम हुआ तो लक्ष्मण ने बहुत-सी सेनाएं जब नष्ट कर दी तो मेघनाथ ने एक शस्त्र का प्रहार किया था वो शस्त्र ऐसा था वह शस्त्र ऐसा था क्या जैसे मेघ जैसे छाया मान हो गएं मेघों में से अग्नि की वृष्टि होने लगी और निचले स्थान में जलाश्य बन गया जब जलाश्य बन गया तो उसमें सेना लक्ष्मण की समाप्त होने लगी। तो राम के द्वारा एक वरुणास्त्र था, जो महर्षि भारद्वाज उसे उन्हें प्राप्त हुआ था, तो उन्होंने मानो देखो, वरुणास्त्र का जैसे प्रहार किया, अग्नि को उस यन्त्र ने अपने में निगल लिया, अपने में धारण कर लिया। तो धारण करने के पश्चात संग्राम पुनः होता रहा। तो मेघनाथ जी ने एक यन्त्र का और प्रहार किया जिससे संसार रात्रिमय हो गया। जब रात्रिमय हो गया, तो लक्ष्मण के द्वारा एक यन्त्र था मानो जो शबरी से प्राप्त हुआ था, भारद्वाज मुनि ने उसको को निर्माणित किया था, उस यन्त्र को उन्होंने वायुमण्डल में त्यागा तो मानो देखो, एकदम ब्रीहि व्राता प्रकशाम् ब्रहे सूर्य का प्रकाश हो गया अन्धकार समाप्त हो गया। मानो जब संग्राम होने लगा, पुनः तो मेघनाथ जी ने शक्ति का प्रहार किया, लक्ष्मण मूर्छित हो गएं। प्राण शक्ति शून्यतव को प्राप्त हो गई। मानो जब शून्य गति को प्राप्त हो गएं तो वह जब विचारधारा देखो, जब लक्ष्मण को राम के कक्ष में ले गएं, तो उस समय महाराजा विभीषण से यह कहा गया कि तुम इस नगर के वासी हो, तुम लंका के स्वामीतव में भी रहे हो, मानो देखो, यहाँ कौन वैद्यराज है? जो इसको सुसज्जित कर सकता है? हमारी सेना में कोई वैद्य ऐसा नही है कोई वेदाम् ऋतप्प्रीहि जो उसके मर्म को जानने वाला हो। परन्तु वैद्यराज बहुत थे उनके यहाँ, परन्तु ऐसा वैद्यराज नही था, तो उस समय विभीषण ने यह कहा, सम्भो भावा ब्रहे विश्वजंम ब्रीहि संवसुतां भुजु पुत्राणि गच्छतं वेश्म्भे सुधन्वचवचतां भवे मानो देखो, यह कहा गया है कि अश्विनी कुमार भी है यह कहा गया कि अश्विनी कुमार इसको विशुद्ध रूप में नही ला सकते, उन्होनें कहा तो रावण के वैद्यराज है, जिनको सुधन्वा कहते हैं, तुम सुधन्वा को लाओ, और उसको वहाँ देखो, दो ही प्राणी ला सकते हैं या तो महाराज जामवन्त ला सकते हैं या महाराजा हनुमान ला सकते हैं। तो मानो देखो, दोनों ने यह प्रतिज्ञा की कि हम ला सकते है।

मानो देखो, हनुमान जी ने वहाँ से अपने वाहन में वेग से गति की, और वेग से गति करके जहाँ वह विश्राम को प्राप्त हो रहे थे, मानो उसके आसन को ले करके, वाहन में राम की सेना में आ गएं। जब राम की

सेना में आ गएं जब सेना जब उसको जागरूक किया गया तो सुधन्वा ने कहा, यह क्या हो गया? मैं कहाँ निन्दित हुआ था कहाँ मैं जागरूक हो रहा हूँ, महाराजा हनुमान और जामवन्त दोनों ने कहा-प्रभु! हम इसीलिए आए हैं क्योंकि वैद्य जो होता है, वह परमात्मा के तुल्य होता है। जिस समय औषधि का वह मानो देखो, रूग्ण का निदान करता है। तो वह मानो देखो, ईश्वरीय उसकी प्रतिभा होती हैं, निष्कपट होता है मानो देखो, निर्दोष होता है वह उसमें राग द्वेष भी नही होता, मित्र और शत्रुता भी नही होती वह एक रस रह करके मानो उसके रूग्ण हो चूस लेता है अपने में धारण कर लेता है। मेरे प्यारे! देखो, वैद्यराज को जहाँ निन्द्रा से जागरूक हुए, जैसे महात्माओं के उपदेशों की बौछार हो रही हो ऐसे महाराजा सुधन्वा को प्रतीत हुआ, जब सुधन्वा को यह प्रतीत हुआ, कि मेरे ऊपर तो देवताओं की वृष्टि हो रही है, तो मानो मुझे क्या करना है, यह मेरा कर्तव्य तो नही है, परन्तु देखो, यह मेरी प्रतिभा अन्तरात्मा की पुकार है, मानो बाह्य जगत नही कहता है क्योंकि मेरा, मेरे राजा का, राम शत्रु है परन्तु देखो, जब अपनी अन्तरात्मा को विचारता हूँ, अन्तरात्मा एक ही रस रहने वाली है। तो मुझे इसके रूग्ण को शान्त करना चाहिए। तो महात्मा ने मानो देखो, वह वैद्यराज ने उस समय, हनुमान से कहा जाओ, नील पर्वत पर चल जाओ, और वहाँ मानो देखो, एक सुलक्षणा वृत्ति नाम की बूटी है सुलक्षणा नामक एक औषध है और उसी के साथ में एक संग्रीत नामक एक औषध कहलाती हैं, दोनों औषधियों को लाया जाएं, हनुमान ने कहा-प्रभु! उसकी जानकारी मुझे कैसे प्राप्त होगी क्योंकि मैं तो इस विद्या को नही जानता उन्होंने कहा वह औषध ऐसी हैं यह हिमालय की कृतिका में तुम्हें जाने के लिए मैं प्रदीप्त कर रहा हूँ। मानो देखो, जिससे अन्धरात्रि में जब मानो देखो, देखो, तारों के ऊपर भी मेघ छाया मान हो, उस समय मानो देखो, उनसे पत्र उनके पुष्पों पर ऐसे छाया तुम्हें प्राप्त होगी, जैसे कोई यहाँ प्रकाश दे रहा है। तुम औषध को लाओ। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रिय! तो मुनिवरों! देखो, महाराजा हनुमान आज्ञा पा करके राम की वहाँ से गमन किया, और जाते समय महाराजा देखो, सुधन्वा ने यह कहा, क्या यदि सूर्य उदय हो गया है औषध को सूर्य की किरण लग गई है, वह किरण कौतुक नाम की किरण होती है, उसको हम वैष्णाव नाम की किरण भी कहते हैं, वह सूर्य उसको अपने गुणों को धारण कर लेता हैं, और रात्रि के काल में, उस गुणों को, उस औषध को प्रदान कर देता हैं। यह औषध विज्ञान बेटा! बड़ा भयंकर विज्ञान है, बड़ा विचित्र विज्ञान है, इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया जाता है, एक औषध इस प्रकार की होती है, हिमालय में जब सुधन्वा ने यह कहा कि वैष्णाव किरण उसे अपने में धारण कर लेती है, और जब सूर्य अस्त होता है तो उसके गुणों का अपनी धरोहर के रूप में परिणत कर देती है, तो मेरे प्यारे! ऐसा मुझे स्मरण है क्या मानो देखो, हनुमान ने वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए वह मानो कौचुक पर्वत पर जा पंहुचे और कौचुक पर्वत पर जब पंहुचे तो वहाँ सुलक्षणा नामक एक औषध विद्यमान थी, मानो जो उन्होंने गुणों का वर्णन किया, वह उसमें विद्यमान थे, मानो एक क्रति तत्त्व नाम एक औषध विद्यमान थी, तो मानो हनुमान जी क्योंकि बलवान थे, वह शक्ति के स्वरूप को जानते थे, उन्हें उन औषधियों का मानो जो पर्वत जितने गुणों का था वह उस स्थली को ही ले करके गति करने लगे, तो मानो भ्रमण करते हुए वह नाना बाधा भी उन्हें नाना प्रकार की मानो आपतियां भी आई, परन्तु वह गति से भ्रमण करते हुए देखो, सूर्य उदय नही होने दिया, वह सूर्य उदय नही होने दिया और सुधन्वा के समीप आ गएं। सुधन्वा ने कहा धन्य है जिस राष्ट्र में सेना में ऐसे सेना नायक हो क्या उसको संसार का कौन-सा प्राणी है, जो विजय कर सकता है। क्या जो इसमें इतनी संलग्नता हो एक प्राणी के प्रति कितनी सहानुभूति उसके हृदय में है, तो मानो देखो, उस समय देखो, परमात्मा का प्रभु का चिन्तन करते हुए सुलक्षणा नामक औषध श्वेति नामक औषध, सम्भु नामक औषध, मानो इन तीन औषधियों का त्रिकोण बना करके वह जलों के साथ में उसको प्रदान करने से वह जो शक्ति जैसे मानो देखो, सूर्य वैष्णाव नाम की किरण, मुनिवरों!

देखो, उसको अपने गुणों में धारण करने लगती थी, और रात्रि काल में उस धरोहर को उसको परिणत कर देती थी, तो मानो देखो, वह धरोहर के तुल्य मानो देखो, जैसे धरोहर का प्रहार हो रहा हो, ऐसे लक्ष्मण मानो जागरूक हो गएं और जागरूक हो गएं उतना ही बल उतनी ही शक्ति मानो उसमें प्राप्त हो गई। परिणाम यह हुआ कि प्रातःकाल सूर्य उदय होते ही, मानो देखो, उस औषधि का गुण समाप्त हो गया।

तो मैं उच्चारण यह कर रहा था पुत्रों! कि वैद्यराज अपने में कितना मार्मिक होता है, उसकी कितनी विचारधारा विशुद्ध होती है, मानो देखो, वह सूर्य प्राण लक्ष्मण जीवित लक्ष्मण अपने स्वरूप में आ गएं और वह देखो, अपने आसन पर गमन किया। मानो गमन किया, तो सुधन्वा अपने वैद्यराज ब्रहे अपने आसन पर चले गएं तो उच्चारण करने का अभिप्रायः बेटा! मेरा क्या है? मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा था, कि मानव का यह कायाकल्प हो गया। मानो देखो, प्राण शून्य को गति में लाना, औषध विज्ञान एक विशाल है। क्या मानो जिसके ऊपर अन्वेषण करने से, ऐसा प्रतीत होता है, क्या हम अपने में प्रतिभाषित बनते हैं, मानो देखो, इसी प्रहार वृत्तियों से देखो, राम की आयु दीर्घ बनी, और रावण की आयु उससे भी दीर्घ थी। रावण की आयु दीर्घ रहती थी। क्योंकि वह संयमी थे, वह विचित्र थे, उनका भोज भी बड़ा विचित्र था। मानो देखो, रावण केवल क्रियाकलाप करते रहते थे, औषध विज्ञान के ऊपर सुधन्वा के चरणों में विद्यमान हो करके, वह उन औषधियों का पान करते थे, मानो देखो, मुझे स्मरण ऐसा है, क्या राजा रावण की आयु थी जो आयु थी जिस समय वे समाप्त हुए थे और जन्म से समाप्त होने तक उनका जो आयु था वह बाईस सौ वर्ष का लगभग प्राप्त होता है मानो देखो, उनका आयु बाईस सौ वर्ष का आयु रावण का रहा जिन्होंने लगभग मुनिवरों! देखो, इक्कीस सौ सोमवृत्ति देखो, इक्कीस सौ पचास उन्होंने लंका का राज किया। उन्होंने पूर्णतव संलग्न हो करके, लंका का राज किया। क्योंकि पचास वर्ष की आयु थी जब उन्होंने लंका को कुबेर से विजय की और कुबेर से विजय करके मानो लंका उन्होंने इतनी आयु में प्राप्त की जितनी आयु उन्होंने राज किया तो परिणाम क्या बेटा! देखो, इसमे साहित्य में तो जाना नही चाहता हूँ। परन्तु देखो, मुझे तो साहित्य भी स्मरण आ रहा है, परन्तु मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे बारम्बार बाध्य करते रहते हैं, एक वाक्य इन्हें रटंत लगी रहती है, चलो, उसी वाक् पर प्रायः हम अपने विचारों को उदधृत करना चाहते हैं, मानो देखो, हम उसी वाक्यों पर आना चाहते हैं।

मैंने बेटा! तुम्हें वर्णन किया था कि राजा रावण की चर्चाएं चल रही थी, राजा रावण ने मानो लगभग ऐसा उन्होंने कई समय कायाकल्प किया मानो देखो, काया को अपने में शोधन कर दिया, अपने में जैसे जल में वस्त्र को शुद्ध कर देते हैं, इसी प्रकार वस्त्रों को, इसी प्रकार शरीर को, शुद्ध करने का नाम मानो देखो, वह धुरित करने का नाम ही मानो देखो, कायाकल्प कहलाता हैं। कायाकल्प के सम्बन्ध में मैने तुम्हें कल इस सम्बन्ध में तुम्हें बहुत-सी चर्चाएं की, परन्तु प्रथम यह चर्चाएं की क्या मानो देखो, कायाकल्प में, पंचीकरण का तो वर्णन आता है। परन्तु पंचीकरण भी ब्रह्मचर्य से युक्त होना चाहिए, यदि ब्रह्मचर्य से पंच जो क्रियाकलाप हैं, यदि वह ब्रह्मचर्य युक्त नही है, तो पंचीकरण में मानो देखो, यहाँ एक अपने कायाकल्प के करने में मानो देखो, नाना प्रकार का, आपातकाल आ सकता है। उन आपात कालों से हमें ऊर्ध्वा रहने के लिए उपराम रहने के लिए ब्रह्मवर्चोसि का मन्थन करना है, ब्रह्मवर्चोसि हम किसे कहते हैं? हमने पूर्व काल में कई काल में वर्णन किया कि हम मानो देखो, वीरतव की रक्षा जहाँ करते हैं, परन्तु रक्षा हम जब ही कर सकते हैं जब हमारी ऊर्ध्वा गति बन जाएं, तो उससे पूर्व हम काया कल्प से पूर्व लगभग छह माह तक मैं तीन औषधियों का तुम्हें वर्णन कराता हूँ। जो मानो पुरातन काल में तीनों प्रकार की औषधियों का मानो वर्णन होता रहा है, मानो तीन औषधि कौन-सी हैं? एक शैलखण्डा है, एक शैल भूनि है, एक मृचिका है। इन तीनों औषधियों को मानो देखो, इन तीन औषधियों को अग्नि में तपाया जाता है। अग्नि में

तपा करके और इनको मानो अग्नि में तपा करके, जल से शोध ब्रीहि मानो उसके पश्चात इनका खरल किया जाता हैं, खरल करके इनकी मानो देखो, लुगदी का स्रोत बनता है, जब इनकी लुगदी का स्रोत बनता है, तो मानो देखो, अम्बिका एक वृक्ष होता है, अम्बिका वृक्ष में मानो उसकी खोखर करते हुए, उसको उसमें धारण कर देना चाहिए, उसका मुख सस्त होना चाहिए, और उसमें अग्नि मानो उसके जड़ स्रोत में अग्नि का प्रहार किया जाएं, जब अग्नि का स्रोत जब तक उस तक जाएगा, तो मानो देखो, उसको जब वह अग्नि में तप जाएं, उसके पश्चात उसको निकास लिया जाएं, उसका पुनः खरल किया जाएं, खरल करके मानो देखो, गो दुग्ध के द्वारा, उसे पान छह माह तक पान करो, उसके पश्चात ब्रह्मवर्चोसि का पालन, ब्रह्म का चिन्तन होना चाहिए ब्रह्म का चिन्तन, गायत्री की गोद में, परमात्मा का देखो, ध्यानावस्थित होना चाहिए, मानो देखो, उस समय नाना प्रकार के राग, द्वेष, क्रोध, कामना यह सर्वत्र मानो सान्त्वना को प्राप्त हो जाएं।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या प्रभु! यह जो गो घृत आप प्रदान कर रहे हैं क्या उसमें तो इतन वीरतव होता है, कि कैसे हम पालन कर सकते हैं?

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! उसमें गोरतव प्रीहि वृत्तो उसमें वीरतव का अवरोह नही होता, परन्तु उसका पालन करने में, हम सुगम बनते हैं, क्योंकि हम अन्नाद भूतानि अन्न को सूक्ष्म बनायें गौ घृत और देखो, औषधियों का पान विशेष करें, देखो, उसमें एक मानो जिसको अपामार्ग कहते हैं उसको देखो, उसके स्वतः बीजों वृत्तियों को ले करके उनको अग्नि में तपा करके, उनका रस बना करके, हमें मानो देखो, एक-एक माह में तीन-तीन समय पान करना चाहिए, जिससे मुनिवरों! देखो, क्षुधा इस संसार की क्षुधा उसे हमारा बौद्धिक तत्त्व समाप्त न हो जाएं। तो ऐसा मानो आयुर्वेद कहता है। बेटा! मैं नही कह रहा हूँ, यह आयुर्वेद कह रहा है, मानो देखो, आयुर्वेद जैसा कहता है मैं उसी के आधार पर, तुम्हें इसकी युक्तियां प्रगट करा रहा हूँ। उसके पश्चात छह माह के पश्चात वह जो पंच कर्म है मानो जिसे हम रेचक कहते हैं, मानो रेचक है, वमन है, सुहाति अस्तो यह जो पंचीकरण है, इसें हमे करना चाहिए, और करते हुए परन्तु देखो, तक्र को अवश्य पान करता रहे, जब तक्र को पान करते रहोगे उसमें मानो देखो, हम एक संटेत औषध होती है संटेत औषध को ले करके, उसका रस बना करके एक मानो अम्बिका वृक्ष होता है उसके पत्र, पत्रों को ले करके, उसका रस लिया जाएं, और उसका रस ले करके मानो देखो, उसमें देखो, त्रिकुटा, त्रि जटामासी, उनको ले करके त्रिफला मानो देखो, इसका एक अंग बना करके, उसे हमें पान करना चाहिए। मानो देखो, एक वर्ष तक, उसका पान करने से तक्र का पान करने से, मानो देखो, हमारा कायाकल्प की प्रतिभा, हमारे समीप आनी प्रारम्भ हो जाती हैं, उससे हमारा आयु दीर्घ बन जाता हैं। काया कल्प का अभिप्रायः यह है, कोई सा भी अंग अंग से भंग हो गया है, उस अंग की उपलब्धि हो जाती है, मानो उस अंग में से क्रतिका घर्णों की उपलब्धि हो करके गति अस्तो में प्राप्त हो जाता है। जैसा मैनें पुरातन इससे पूर्व काल में कदम्ब के वृक्ष की विशेष मानो देखो, वर्णन की थी, कदम्ब के वृक्ष की मानो देखो, उसका पंचांग पान करना चाहिए, और देखो, यह जो हमने तुम्हें त्रिकान्तक एक देखो, औषध होती है, वह वृक्ष जीवित है मानो देखो, इनके पंचांग, इनके रसों स्रोत्रों को ले करके उनके यशोधर्मा में पान करना चाहिए। पान करते हुए शुक्ल पक्ष में इन औषधियों को का निर्माण करना चाहिए, और कृष्णा पक्ष में इन औषधियों का पान करना चाहिए मानो देखो, निर्माण शुक्ल में हो और पान इनका मानो कृष्णा में हो तो यह औषधियां अपने में गुणकारी प्रतीत होती हैं तो मानो देखो, यह भी विशेषता होती है।

तो विचार-विनिमय क्या मैं विशेष तुम्हें देने नही आया हूँ, हमारे ऋषि-मुनि परम्परागतों से ही, बेटा! देखो, इस क्रियाकलाप को करते रहे हैं इस क्रियाकलाप में भिन्न-भिन्न प्रकार की औषधियों का वर्णन आता है कल मेरे

प्यारे महानन्द जी ने मुझे यह वर्णन कराया कि जाल का वृक्ष कदम का एक ही वृक्ष होता हैं, परन्तु प्रायः ऐसा नही होता, जो हम नामो उच्चारण कर रहे हैं, उनमें बहुत-सी औषध इस प्रकार की हैं, जिनका हो सकता है, आधुनिक जगत जहाँ हम उच्चारण कर रहे हो वहाँ न हो, जैसा महानन्द जी कहते हैं, परन्तु कुछ औषध ऐसी है, जो वर्तमान में मानो प्रायः विशुद्ध रूप में परिणत होती है। कुछ भाषान्तर भेदों से भी उनका भेदन हो सकता है। परन्तु मैं इस सम्बन्ध में अनभिज्ञ हूं विचार केवल यह है क्या उन औषधियों के पान कर्म करने से मानो देखो, हमे प्रतिभा होती है हमें देखो, वमन करना है तो वहाँ देखो, एक वृक्ष होता है, जिसका वटिका वृक्ष कहते हैं उनको बालि वृक्ष भी कहते हैं, उनके बीजों को बीजवन को ले करके उनके पत्रों को ले करके, उनका पिपाद मानो मानो खरल करके विशुद्ध करके जब हम पान करते हैं, तो मानो वमन हमारे यहाँ स्वतः मानो देखो, एक आभा कृत बन जाता है। देखो, वह वमन उधृत बन जाता है।

तो विचार-विनिमय देखो, यह औषध है इसी प्रकार जैसे अम्बिका वृक्ष होता है अम्बिका वृक्ष उसके प्रत्येक देखो, फल उसका पत्र उसके मानो देखो, छाल भी उसका गुदकेत मानो उसकी जड़ा कृति इन सबको ले करके जब पंचांग बनाते हैं, तो जिस समय हमें कायाकल्प करना है, मानो देखो, करते समय उसके पंचांग को पान करना है, और पान करते हुए मानो देखो, जैसे हमारे ये केश है यह श्वेत्ता वर्ण के हो जाएं तो यह मानो देखो, कालिमा रात्रि के समान हो जाते है। और मानव के दन्त समाप्त हो गएं हैं तो मानो देखो, दन्तों की प्रतिक्रिया पुनः जागरूक हो जाती है। मानो जो अस्थियों में मानो देखो, हीनता आ गई है, वह पूर्णता को प्राप्त हो जाती है।

तो परिणाम क्या है मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ क्या मानव में एक रूग्ण होता है सम्भो क्या इन्द्रो शनं जनं ब्रीहि देखो, मधु पांचानी कृतियों का उद्घोष होने लगता है, उसके लिए हम गुलमानक औषध और शैलपुत्रिका और सत्यनाशी इन तीनों औषधियों का चूर्ण बना करके हम मानो पान करते हैं तो वह रूग्ण हमसे दूरी हो जाता है। तो परिणाम क्या है? मैं तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ, कि सोम ब्रीहि वाचो सम्भविता देवं मृ ब्रीति अस्तो तो हरद ब्रीहि उच्चा ऐसा हमारे आयुर्वेदाचार्य वर्णन करते हैं, क्या औषधियों को जाना जाएं, औषधियों को जानने से मानो देखो, हमें एक प्रतिभा का जन्म होता है। मैं एक समय बेटा! बहुत पुरातन काल हुआ, एक समय महात्मा दधीचि के यहाँ पंहुचे, परन्तु बहुत से महापुरूषों का वहाँ गमन हुआ, उन्होने एक समय पितर याग किया था। मानो पितर याग के साथ, एक अतिथि याग भी किया था। तो अतिथि याग मानों हम कृतियों से गए, राज स्थलियों से उन्होंने हमने गमन किया, तो जब वहाँ पंहुचे तो महर्षि विभाण्डक महर्षि स्रोतकेतु ऋषि और केम कृतिका मानो देखो, सब वन को चले गएं। जब वन को चले गएं तो मानो देखो, वहाँ कुछ औषधियां वनस्पति विद्यमान थी। वह पान करने में मधु लगी, परन्तु आन्तरिक जगत में जा करके वह इतनी विषैली बन गई, क्या मानो देखो, रक्त का प्रहार हो गया, जब रक्त का स्रोत प्रारम्भ हो गया, तो मानो देखो, हम महात्मा दधीचि के समीप आए दधीचि से बोले कि यह महाराज क्या हो गया? दधीचि ने कहा कि तुमने गुड़ोब्रासि नामक औषध का पान कर लिया है, यह तो बड़ी भयंकर है। मानो तुम जाओ, इसके साथ में एक इसके साथ में औषध उत्पन्न होती है, जिसका नाम मुन्दरिक नामक एक औषध जिसको हम मुद्रिका कहते हैं मुद्रिका जैसे मानो उसके पत्र होते हैं, तो तुम उसके पत्रों को पान करो, मानो देखो, जल के सहित पान करो, मानो देखो, हमने उसको पान किया तो रक्त जैसे जा रहा था, जहाँ का तहां वह शान्त हो गया तो परिणाम मानो देखो, एक-एक औषध इस हिमालय और पर्वतों में और इस पृथ्वी में मानो वसुन्धरा के गर्भ में पुत्रों! कौन-कौन-सी वस्तु विद्यमान हैं, इसका कोई प्रमाण नही दे सकते हैं, यह अनन्त विज्ञान में हम चले जाते हैं। परन्तु देखो, उत्तर हमसे बन नही पाता। क्योंकि इतना विशाल यह वन है, इस वन में जाने के पश्चात मानो देखो, हमारा क्रियाकलाप मौन हो जाता है। मानो देखो, इसी प्रकार इस औषधियों के पान

करने से, मानो उनके गुणों का मानो देखो, वह इतनी तीक्ष्ण है हम तीक्ष्ण से तीक्ष्ण औषध को ले करके नम्र से नम्र बना सकते हैं, नम्र को तीक्ष्ण बना सकते हैं, मानो क्योंकि एक दूसरे के निदान में, प्रत्येक औषध आती है, यदि निदान नही करोगे इतने का उसका इतना गुण नही होता, जितना उसके निदान से मानो देखो, मिलन से होता है। जैसे मानव के शरीर में प्राण और मन दोनो ही है मानो देखो, जड़ तत्त्व है, एक चेतन तत्त्व है। दोनों के मिलान से शरीर गति करता है, इसी प्रकार दोनों का निदान होता है, दोनों की सम्भूति होती है। सम्रुरत होता है। इसी प्रकार मानो देखो, औषधियों में, एक दूसरे के समन्वय से, एक दूसरे के मिलन से, उनके गुणों की बलवती हो जाती है। और वह मानो देखो, रूग्ण के लिए, शान्त करने के लिए मानो एक गुणातीत बन जाती हैं तो परिणाम मानो देखो, इसी प्रकार हमें विचार-विनिमय करना चाहिए। क्या हम अपने में कायाकल्प के सम्बन्ध में उच्चारण कर रहे थे, हम कायाकल्प किसे कहते हैं? कायाकल्प कहते हैं, काया को, पुनः से हम विशुद्ध देना, विशुद्ध रूप आभा में परिणत करना है। मानो देखो, इस असतो में अप्रतियां आता रहता है।

पूज्य महानन्द जीः- क्या भगवन! मैं यह जानना चाहता हूँ आपको इतना औषध विज्ञान का एक विशाल वर्णन कर रहे हैं परन्तु जैसा हमारे यहाँ पातंजलि जी ने कहा है आयु और जाति और भोग यह पूर्वले जन्म के संस्कारों से प्राप्त होते हैं तो क्या औषधियों से आयु इतनी दीर्घ बना ली जाती है या वैसे ही उच्चारण कर रहे हैं। मेरे विचार में यह नही आ रहा है, क्योंकि जब आयु जाति और भोग यह पुनः पूर्वले जन्म के संस्कार से पातंजलि जी कहते हैं आप इसके विपरीत तो नही जा रहे हैं

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! इसमें कोई विपरीतता नही है क्योंकि मानव के आयु और जाति और भोग यह वाक् विशुद्ध है, और यथार्थ है। परन्तु आयु और जाति का इस कायाकल्प से कोई सम्बन्ध नही मिलता हैं क्यों नही बनता इसका सम्बन्ध इसीलिए नही है, क्योकि जैसे हमे आयु प्राप्त हुई है आयु हमें श्वासों के ऊपर प्राप्त हुई है। अब हमारा जो श्वास है वह हमारा समाप्त हो गया है अब देखो, उसके पश्चात हमारे शरीर का अन्त होना है। परन्तु यदि श्वास की गतियां रह रही हैं, तो यह जो प्राण शक्ति है और प्राण वर्धक जो औषध है उनका पान करने से हमारे श्वास धीमे बन करके हमें पुनः मानो श्वासों की प्रतिभा प्राप्त हो जाती है इसी प्रकार यह सिद्धान्त तो नही शान्त हुआ, परन्तु रहा यह कि आयु जाति मानो आयु का निदान तो इसीलिए हो गया रहा जाति कि हम मनुष्य बनेंगें पशु बनेंगें क्या है? भिन्न-भिन्न जातियां है, परन्तु रहा भोग की वार्त्ता क्या मानव का शरीर भोगों से प्राप्त होता है, या श्वासों से प्राप्त होता है, यह प्रश्न बन जाता है, परन्तु उसका उत्तर यह है कि भोग और श्वासों का दोनो का समन्वय हो जाता है। जब दोनों का समन्वय होता है, तो आयु और भोग श्वास प्रहे श्वास की गति प्राण और देखो, वह भोगवाद मानव के समीप रहता है, तो भोगवाद की सूक्ष्मता होती रहती है, जैसे एक मानव को बालक को हमने आहार करने की कोई वस्तु प्रदान की वह उसको धीमे-धीमे पान करता है, तो उसको बहुत दीर्घ समय लगता है, परन्तु उसे एक ही समय चट कर दिया जाता है, अपने में भक्षण कर लेता है। तो मानो उसे कई गुणे समय में वह वस्तु को समाप्त करता है इसी प्रकार भोगवाद का यह विवाद है, भोगवाद की यह विशेषता है, क्या हम भोगवाद को हम धीमे-धीमे मानो हम शुभ कर्म करते हुए भोगते हैं। शुभ कर्मों में संलग्नता होती है, तो वही भोग मानो हमारे मोक्ष के लिए मोक्ष का निकटतव का समन्वय बन जाता है। मानो देखो, वही प्राण शक्ति जो प्राणों से हम भोगों से आयु और मानव के जीवन की स्थिरता स्वीकार करते हैं। उसका मानो देखो, उसका दोनों का समन्वय धीमे-धीमे हो जाता है, यदि हम नाना प्रकार के जो अभक्ष्य पदार्थों का पान करते रहते हैं, जैसे एक मानव ने तीक्ष्ण पदार्थों का पान किया जैसे मानो एक मानव ने रक्त का पान किया है। उसको अपनी रसना का स्वादन बनाया है, दूसरों के गर्भों को पान करने के लिए अपनी वासना की पूर्ति करने के लिए वह केवल जब

इतना क्रियाकलाप करता है, तो वह अपने भोगों को वह मानो भोगों में एक प्रकार का विष आभा को उत्पन्न कर रहा है, जैसे विष की एक बेल उत्पन्न हो जाती है। मानो देखो, दूसरे भोगवाद का जन्म हो जाता है, क्योंकि उसकी वासना की तरंगें विशेष बन जाती हैं। जैसे एक परमात्मा ने एक औषध को नियुक्त किया है, रूग्णों में क्रियाकलाप में आती है, उस तीक्ष्ण औषध को मानो देखो, मानो देखो, अपने शरीर के पोषण के लिए परिणत करने लगता है। तो उससे आयु उसकी सूक्ष्म बन जाती है, इसी प्रकार देखो, मांस भक्षण करने वाले की आयु में सूक्ष्मता आ जाती है। यदि उसमें ऐसे तीक्ष्ण पदार्थों का मिश्रण करता है, तो और आयु सूक्ष्म बन जाती है। परन्तु मैंने जैसे अभी-अभी तुम्हें नाना प्रकार की औषधियों के निदान का वर्णन किया है, इनको पान करते रहोगे तो वह शुभ कर्म भी है। विचारधारा भी विचित्र है, ब्रह्म का चिन्तन भी होता है, और ब्रह्म के चिन्तन के साथ में वासना की हमें शान्ति होती है। वह जो ऊर्ध्वा शक्ति है एक ही मार्ग से हो करके जाती है, वह जल के सदृश्य रहती है, और जल के सदृश्य रह करके मानो देखो, वह जितनी भी शीतलता हमारी मानो ऊर्ध्वा शक्ति जहाँ से शान्त होती है, और निकल जाती है, जितनी वह शीतलता में रहेगी, विचारों में परिणत रहेगी, मन उतना शान्त बुद्धि उतनी विचित्र मानो तार्किक बनी रहेगी। ब्रह्म के चिन्तन में लगी रहेगी, उतना ही मानव का शुभ कर्म और देखो, वह श्वास भी धीमा हो जाएगा, और वह जो तुम्हारा भोगवाद है वह भी शनै-शनै तुम्हें वह भोगवाद धीरे-धीरे सूक्ष्म बनता रहता है। जैसे एक बहुत बड़ा स्थूल है उस स्थूल को हम अग्नि में तपाते रहते तपाते रहते हैं, तपाते रहते हैं, एक समय वह आता है कि उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है। **इसी प्रकार जैसे मानो देखो, हम स्थूल हमारा कर्म है देखो, अशुभ कर्म है, यदि हम देखो, उसको हम शुभ कर्मों की बौछार देते रहेंगे ज्ञान रूपी अग्नि की तरंगों में उसे तपाते रहेंगे तो बेटा! वह सूक्ष्म होता-होता तो मानो एक समय वह आयेगा क्या हमारी दीर्घ आयु बन जाएगी प्राण शक्ति हमें पुनः प्राप्त हो जाएगी संकल्प शक्ति के द्वारा और मानो देखो, वह भोगवाद सूक्ष्म बन करके उसको हम भोग भी सकते हैं और वह हमें प्रतीत भी नही होगा**। तो इस प्रकार देखो, बेटा! औषध विज्ञान मानो देखो, जिसके ऊपर मैं इसलिए विशेष टिप्पणी नही देना चाहता हूँ केवल विचार यह तुम्हारे आँगन में आ गया होगा, क्या यह जो तुम्हारा वैदिक सिद्धान्त हैं, जो हमारे क्रियाकलाप मानो देखो, अन्तरात्मा की वृत्तिका और वह ऐसा उच्चारण करती रहती है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह तो कुछ हमारे विचार में आया है क्या प्रायः ऐसा होता रहता है, परन्तु देखो, इस कायाकल्प के सम्बन्ध में, मानो देखो, इतना आयु कैसे बन सकता है आधुनिक काल में तो नही बनता।

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या पुत्र! इसका मैंने कोई मानो इस प्रकार असुतो तो नही ली है क्या आधुनिक काल में नही बनता तो विद्या लुप्त हो गई है, विद्या तो सदैव बनी रहती है। विद्या तो लुप्त नहीं होती परन्तु जो विद्या के ऊपर जो अध्ययन किया जाता है, वह लेखनीबद्ध किया जाता है। मानो उसको प्रयोग में लाने का प्रयास करो। यह तो तुम जानते हो कि मानव की आत्मा के तीन शरीर कहलाते हैं, यह तो अकाटय है इसको कोई शान्त नही कर सकता, परन्तु इसी प्रकार जब तीन शरीर कहलाते हैं, तो तीनों गुणों का प्रतिस्रोत भी होता रहता है परन्तु रहा यह कि एक दूसरे शरीरों में प्रवेश होना भी अनिवार्य है पंच महाभौतिक यह पिण्ड कहलाता है, अस्थियां मानो देखो, अस्थिंयं के कण वायुमण्डल में परिणत रहते हैं, जब यहाँ तक हम स्वीकार करते हैं, विज्ञान यह सिद्ध कर देता है, क्या मानव का शब्द, मानव का शरीर, मानव की अस्थियां, मानव वायु मण्डल में एक सूक्ष्म महारूपों में तत्त्वों के रूप में गति करती रहती हैं। तो क्या पुत्र! यह जो मैंने क्रियाकलाप मानो यह जो पंचीकरण का वर्णन किया है, अथवा यह जो कायाकल्प का वर्णन किया है, क्या यह अशोभीनीय हो जाएगा यह कैसे हो सकता है?

हमारे विचार में तो आ नहीं पा रहा है, परन्तु रहा यह कि जैसा मैंने तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दिया मानो जो दार्शनिक प्रश्न है, दार्शनिक विचारधारा है, ऐसे ही कायाकल्प भी दार्शनिक एक सिद्धान्त है, वह भी अपने में एक अनूठा एक रहस्य माना गया हैं। जिसके ऊपर वैद्यराजों ने अथवा वैद्यराजों का भी यह विषय नही रहा है, यह विषय तो ऋषि-मुनियों का रहा है, जिन्होंने मानो तपस्याएं की है, तपस्या करके एक-एक औषध को जानने का प्रयास किया है, कौन-सी औषध क्योंकि संसार में जितना भी अन्न है, अन्न से ले करके प्रत्येक सूक्ष्म वृक्ष है ये सब औषधियां कहलाती है, यह अन्न भी औषधि है, परन्तु यह स्थूल अन्न है इससे हमारा वीरतव उत्पन्न होता है, तमोगुण की प्रतिभा का जन्म होता है। इसीलिए इस स्रोत को शान्त कर देना चाहिए एकादशों इन्द्रियों का मानो देखो, विजय करके जब हम गति करते हैं तो मानो यह तपस्वियों का जीवन बन जाता है, तुम्हें प्रतीत होगा कि जब हम आदि ऋषियों के समीप जाते थे, तुम्हें तो यह प्रतीत होगा, एक समय हम महाराज अश्वपति के यहाँ, जब सो विशुद्ध ऋषि के द्वार पर पंहुचे थे, तो विशुद्ध ऋषि को निमन्त्रण देने जब वनों में पंहुचे, तो भयंकर देखो, दण्डक वन में उनका आसन रहता था, तो उस आसन पर मानो वह सर्पकेतु एक औषध होती है उसका आसन बनाएं हुए विद्यमान थे तो यह जब प्रश्न किया था क्या महाराज! तुम इस सर्पकेतनी औषध पर क्यों विद्यमान हो, इसका आसन ही क्यों हैं? उन्होंने कहा निकट सर्प नही आता मानो देखो, मेरे भिन्न-भिन्न औषधियों के आसन निर्माणित है, मानो देखो, उस पर मैं विद्यमान होता हूँ वही मेरे समीप नही आता, उसकी यह शैलखण्डा मानो जो औषध है, उसके तन्तुओं का एक वस्त्र निर्माणित कर लेते हैं, तो मानो देखो, कोई अशुभ परमाणु उसके निकट नही आता। तो इस प्रकार जो औषध विज्ञान है, यह ऋषि-मुनियों का यह विषय है यह मानो साधारण प्राणियों का विषय नही हैं, यह जो क्रिया हमने उच्चारण किया है, साधारण प्राणियों का इतना है, क्या रूग्ण हुआ है, उनको औषध दिया शान्त हो गया, परन्तु देखो, रूग्ण हुआ औषध दिया शान्त हो गया, अमृता सम्भे मानो देखो, इसको पान करने के लिए मानो पुनः से बहुत विशिष्ठता बनानी होती है, हम क्रियाकलाप के आँगन में प्रायः प्रवेश करते रहे हैं, प्रवेश करते रहते हैं। परन्तु देखो, हम इसकी विशेषता तो कल प्रगट करेंगें। आज का विचार हमारा यह है कि हम अपने में विशुद्ध बन करके मानो औषध विज्ञान को जाने जिससे मानो देखो, हमारा अन्तरात्मा हमारा क्रियाकलाप हमारा पंचीकरण इतना विचित्र होना चाहिए, जिससे हमारे शरीर में किसी नस नाड़ी का अंग भंग न हो जाएं अंग भंग जब होता है, क्या हम मानो देखो, जिस विद्या को नही जानते उसको करने लगते हैं। उसके रूपों में परिणत होने लगते हैं, तो वह औषध एक दूसरी नाड़ी को अपने में निगलना प्रारम्भ कर देती है। तो वह क्रियाकलाप अशुद्ध बन जाता है, तो इसीलिए आज का हमारा वाक् यह कहता है, हमारा वाक् यह कहता है कि हम नाना प्रकार की औषधियों का पान करने में सदैव तत्पर रहें। परन्तु देखो, उससे पूर्व हम उसको गो घृत को, गो दुग्ध को पान करने वाले बनें। औषध विज्ञान को जान करके मानो स्थूल अन्न को पान न करें, तो यह आज मैं अपने विचारों को विराम दे रहा हूँ पुत्रों! शेष चर्चाएं तो मैं कल ही चर्चाएं प्रगट करूंगा। आज का हमारा वाक् क्या कहता है क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए अपने में महान बनते रहें।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या प्रभु! राजा रावण को योगी था जिसकी आयु बाईस सौ वर्ष की हुई।

पूज्यपाद गुरुदेवः- पुत्र! वह योगी नही थे, परन्तु यह उनका एक क्रियाकलाप बना रहता था, वह विशुद्ध मानो ब्रह्मवर्चोसि नही रहते थे, तो उस काल में तो रहते थे। वह पर स्त्री गमन नही करते थे परन्तु देखो, वह विशुद्ध रहते थे और यह मानो देखो, सदैव तपस्या में मानो देखो, संलग्न और राज्य का क्रियाकलाप करते थे। इसमें क्या? देखो, वह स्वयं कृषि करके अपने उदर की पूर्ति करते थे, उसी गो दुग्ध को पान करते थे, तो ऐसा मानो राजा कहाँ प्राप्त होता है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह आपके वाक्यों को यथार्थ स्वीकार कर लें, जबकि आधुनिक काल उसे राक्षस कहता है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- तो क्या पुत्र! मेरा अभिप्रायः यह नही कि आधुनिक काल क्या कहता है, किसी प्राणी को मेरा तो यही अभिप्रायः है, क्या जो जिसमें गुण हैं, उन गुणों का वर्णन करना हमारा कर्तव्य है, हम किसी के मानो देखो, राक्षस पने में या उसकी त्रुटियों में जाने के लिए हम नही आए हैं। क्योंकि जो जिसमें जो गुण प्रतीत होते हैं, उन गुणों का आवाधान करना हमारा कर्तव्य रहता है। परन्तु रहा यह कि आधुनिक काल न प्रतीत कि कौन किसको राक्षस कहता है, परन्तु देखो, राक्षक की विशेषता और व्याख्या तो तुमने श्रवण प्रायः श्रवण की होंगी, राक्षस किसे कहते हैं? क्योंकि राक्षस नामक देवता को भी राक्षस कहते हैं, परन्तु राक्षस उसे भी कहते है, जो कुरिति देखो, परा गमन करने वाला होता है, उसे भी हम राक्षस कहते हैं, परन्तु राक्षस की व्याख्या क्या है? नामोकरण से भी तो राक्षस बन सकता है। परन्तु क्रियाकलापों से उसे पुत्र! दैत्य कहते हैं, राक्षस की व्याख्या देखो, वीर कहलाती है, मानो देखो, वीरतव में राक्षस प्राप्त होता है, और वह जो अशुभ कर्म करने वाला उसे हम दैत्य कहते हैं, दैत्य कौन है, जो मानो देखो, अशोभनीय कर्म करने वाला हो जो सदैव इसका आत्मा देखो, जिसके अन्तर्हृदय में सदैव छल कपट बना रहता है, दूसरों के प्रति मानो एक दूसरे की प्रति क्रोध की भावना बनी रहती है, दूसरे की त्रुटियों को दृष्टिपान करता है, उसे हम देखो, उसे हम दैत्य प्रवृत्ति का कहते हैं, परन्तु यह तो अपने विचारने का माध्यम है। हम किसी को कुछ कहते हैं, संसार किसी को कुछ कहता है, रहा यह कि राजा रावण को राक्षस कहते हैं, यह किस दृष्टि से कहते हैं, क्योंकि देखो, राजा राजाओं का संग्राम होता है, एक राजा मानो विजयी हो जाता है, एक किसी को विजय कर लेता है। तो जो विजयी बन जाता है, उसको देवता कहते हैं, और जो मानो पराजय हो जाता है उसको दैत्य कहने लगते हैं। यह कोई ऐसा वाक् नही हैं मानो देखो, यह तो साधारणतव वाक् है। इसके ऊपर मैं कोई टिप्पणी करना नही चाहता हूँ। विचार-विनिमय केवल यह क्या मानो देखो, उसका आयु उसका देखो, संग्राम से कोई समन्वय नही होता, इसी प्रकार आज का हमारा यह वाक् अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए हम मानो देखो, कायाकल्प के सम्बन्ध में अपना विचार दे रहे थे, कल मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ समय मानो देखो, उस कायाकल्प के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करेंगें आज के विचार अब समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

४ वनस्पति से दीर्घ आयु १७ ०७ १९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह देवतव है, वह देवता कहलाता है। उसे हमारे यहाँ महा देवां भवि वर्णा स्वस्ते व्रहे मानो देवताओं का देवता और महादेव कहलाता है। मानो उसे महादेव इसीलिए कहते हैं, क्योंकि वह देवताओं का भी देवता कहलाता है। वह महा वृणी वर्णा स्वस्त मानो उसे हम महादेव कहते हैं, देवत्वां भवितां महा वाचो महा वरूण व्रता मानो जो वरण करने वाला है, जो वरणीय है, उसी को हमारे यहाँ देवतव कहा जाता है। तो हे महामना देवतं देवाः तू हमे देता रहता है, और क्या देता है कि संसार की प्रत्येक वस्तुओ का तू हममें भरण करता रहता हैं, अथवा प्रदान करता रहता है। मानो तू देवों का भी देव हैं। तू देवतव कहलाता गया है। तू कैसा अनन्तमयी देवता हैं, मानो हमें देता ही रहता हैं, रात्रि समाप्त हो जाती हैं, तो प्रातः काल प्रकाश आ जाता हैं, प्रकाश का अस्त होना ही मानो रात्रि काल आ जाना है उसमें भी वह हमें देता ही रहता हैं, रात्रि के काल में जब निद्रा की गोद में चले जाते हैं, तो वह मेरा देव शक्ति प्रदान करता रहता है, प्रातः काल आया शक्ति का संचार भरण हो गया। तो प्रातः सूर्य उदय हो गया प्रकाश आ गया देवता आ गया आदित्य उदय हो गएं हैं, उषा काल आ गया, हमें उष्णता प्रदान कर रहे हैं, तो मानो वह देता ही रहता है, क्या देता है, वह सर्वत्र एक ओजस्वी शक्ति हमें प्रदान करता हैं, वह ऐसी शक्ति को प्रदान करता है, जिस शक्ति को हमे मानो देखो, हमें कहीं प्राप्त नही होती, वह शक्ति हमे स्वतः प्रदान की जाती है। वह देव देने वाला हैं, वह रात्रि के रूप में भी विद्यमान रहता हैं और दिवस के रूप में भी प्रकाश बन करके रहता हैं। मानो वह देता ही रहता है मनो वंचतं मन को प्रसन्न बनाता रहता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, हमें प्रभु की आराधना अथवा देव की महिमा का गुणगान सदैव गाना ही चाहिए। क्योंकि वह देव कहलाता हैं वह महादेव कहलाता हैं

वह देवताओं का भी देवता, महादेव हैं, जो हमारे अन्तर्हृदय में विद्यमान रहता है, जो हमारी अन्तर्मुखी भावना में परिणत रहने वाला हैं, तो उसे मुनिवरों! हम महादेव कहते हैं। देवताओं का देव कहते हैं। तो हम प्रभु से ही शक्ति प्राप्त करते हैं, वही हमारा न्यायाधीश कहलाता हैं। न्याय कौन करता है? वह मेरा प्यारा प्रभु करता है। एक संसार में न्यायवेत्ता है, राजा है वह न्याय करता है मानव का उन वस्तुओं का। परन्तु उन कर्मों का करता है जो मानो क्रियाकलाप हमें दृष्टिपात आ गएं हैं, जो शरीर के क्रियाकलाप है, परन्तु यदि वह जो मेरा देव हैं, वह जो न्यायाधीश है, जो मानव को न्याय करने वाला हैं, मानव एक अन्धकार की आशा में अन्धकार के क्षेत्र में विद्यमान रहता हैं, अन्धकार की प्रतिभा में रत्त रहता है, परन्तु वह उस प्रभु का चिन्तन कर रहा हैं, वही मन में अशुभ संस्कारों को जन्म दे रहा हैं, तो वह जो अशुभ संस्कार, उसके आन्तरिक जगत में हो रहा हैं राजा उसका न्याय नही कर सकता, उसका न्यायाधीश कौन है? वह मेरा प्यारा प्रभु हैं। जो अन्तर्हृदय मैं नियमन कर रहा है, मानो जो उस क्रिया का जो आयतन कहलाता हैं वही तो मुनिवरों! देखो, उसे न्याय देने वाला है। परन्तु राजा स्थूल कर्मों का न्याय देता हैं, न्यायाधीश स्थूल कर्मों का न्याय देता हैं, परन्तु जो आन्तरिक हमारा मन, सदैव कर्म करता रहता हैं, शुभ कर्म करता हैं, अशुभ कर्म करता है, नाना प्रकार की तरंगें जागरूक हो रही हैं, उन तरंगों में हम रत्त रहते हैं तो उनका न्यायधीश राजा नही बन सकता, उसका वह जो मेरा प्यारा प्रभु हैं, सूक्ष्मतम जो मानव इस संसार को, अपने में धारण कर रहा हैं, जो संसार को अपना आयतन बना रहा है। वही तो मुनिवरों! देखो, न्यायाधीश कहलाता हैं। तो न्याय करने वाला कौन है? वह प्रभु हैं इसीलिए प्रभु के ऊपर हम जितने क्रियाकलाप

है, जितने मानो कर्म बन्धन है उन सबको हमें प्रभु को अर्पित कर देना चाहिए। मानो प्रभु के आश्रित बन करके, हमें इस संसार में विचरण करना चाहते। प्राणों की सत्ता में हम रत्त रहना चाहते हैं।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! यह आज का हमारा वाक् यह क्या कह रहा है, हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, अपने मानवीय जीवन को ऊँचा बनाएं। प्रभु की प्रतिभा में सदैव रत्त रहें, क्योंकि यही हमारा कर्तव्य है, इसमें हम अपने प्रभु का यशोगान गा-गा करके अपने में मानो शुद्ध वायुमण्डल का भरण कर रहे हैं, मेरे पुत्रों! अपने को शोधन कर रहे हैं वही तो शोधन हमें महान और पवित्र बनाता हैं। तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ विचार-विनिमय यह प्रगट करना चाहते थे हम चाहते क्या है संसार में प्रत्येक मानव की इच्छाएं, बलवती होती रहती है मानो उन इच्छाओं को अपने में इच्छित करना चाहते हैं, अपने में मानो उनका मन्थन करना चाहते हैं। तो मेरे पुत्रों! मैंने कई कालों में तुम्हें वर्णन किया हैं, करता चला आ रहा हूँ क्या प्रत्येक मानव संसार में, महानता की, प्रकाश को अपने में धारण करना चाहता है, प्रत्येक मानव अपने में आयु को ऊँचा बनाना चाहता है, मानो देखो, आयु का वास्तविक स्वरूप क्या है? यदि हम आयु की व्याख्या करने लगें, तो आयु हम किसे कहते हैं? परन्तु जीवन किसे कहते हैं? तो वेद के आचार्यों ने आज के वेदमन्त्र में आ रहा था, कि आयु उसे कहते हैं, मानो देखो, जो अपने दीर्घ जीवन काल तक इस संसार को सुख पूर्वक, इस संसार को दृष्टिपात कर सके। मानो उसको आयु कहते हैं। और वह आयु ही हमारे जीवन का प्रतीक बनता है वही कर्म बन्धन से मानो वह बन्धनों से मुक्त करा सकता है।

तो विचार क्या मानो देखो, मानव के हृदय में यह आकांक्षा बनी रहती है, कि मेरा आयु दीर्घ होना चाहिए, मैं इस संसार में दीर्घ आयु को प्राप्त करके, इस सागर से प्राप्त होना चाहता हूँ। यह मनोनीत इच्छा रहती है, इसीलिए मानव नाना प्रकार के क्रियाकलापों में परिणत होता है। नाना औषध विज्ञान में मानो अपने को ले जाता है औषध विज्ञान के तथ्यों को जानने की लिए, मानो अनुसरण करता है तो वह उसका एक क्रियाकलाप बन गया है, उस मानो दीर्घ आयु वाले का क्रियाकलाप बन गया। प्रभु, उसके स्मरण रहता है मानो देखो, औषध विज्ञान जो प्रभु का बनाया हुआ विज्ञान है, जो मानो ऋषि-मुनियों ने एक अनुसन्धान किया, अन्वेषण किया हो विचारा है परन्तु देखो, वही तो एक महानता की वेदी पर ले जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, हमें औषध विज्ञान को विशेष रूपों से जानना चाहिए यहाँ नाना ऋषि इस प्रकार के हुए है मानो जिन्होंने आयुर्वेद के ऊपर बहुत अनुसन्धान किया मानो देखो, मुझे स्मरण है, मुझे स्मरण आता रहता है मुनिवरों! देखो, एक महर्षि मुंचक ऋषि हुए हैं, मेरे प्यारे! देखो, मुंचक ऋषि महाराज एक समय अपने आचार्यों के समीप विद्यमान थे, जब वे विद्यालय काल में थे तो मुंचक ऋषि महाराज ने, बाल्यकाल में अपने आचार्यों से कहा प्रभु! मैं अपने जीवन में आयु के स्वरूप को जानना चाहता हूँ। उन्होंने कहा बहुत प्रिय। तो आचार्यों ने उन्हें निर्णय कराया कि आयु का जो स्वरूप है वह क्या है? आयु का स्वरूप मानो उसकी प्रसन्नता है, और उसकी महानता है, मानो जब वह मनों में किसी प्रकार का वैश्व ब्रहे मानो देखो, राग और द्वेष क्रोधग्नि नही रहती, ममता नही रहती, परन्तु केवल कर्तव्यवाद रह जाता है तो उसके जीवन में नवीन-नवीन पुष्पांजलियां आने लगती हैं। मानो उसकी स्मरण शक्ति एक महान बनने लगती है। स्मरण शक्ति का जो स्रोत है, वह चित्त का मण्डल कहलाता है, परन्तु जब वह चित्त मण्डल में औषध विज्ञान में करता हुआ प्रवेश करता हुआ चित्त मण्डल में प्रवेश करता है, तो मानो देखो, स्मरण शक्ति जागरूक होने लगती है, मुझे ऐसा स्मरण है क्या मुंचक ऋषि जब अध्ययन करने लगे तो मानो देखो, अध्ययन करते-करते वह अन्नादन भूतानि अन्नत प्रहे वह अन्न को ग्रहण नही करते थे, इस स्थूल अन्न को ग्रहण नही केवल औषधियों का अन्न बना करके मानो उसको आहार में लाते थे। ऐसा

मुझे स्मरण है कि मुंचक ऋषि महाराज जब आचार्यों के समीप विद्यमान थे, तो वह एक औषध का पान करते थे, जिसको हमारे यहाँ सुकृति कहते हैं, सुकृति औषधि उसे कहते हैं, जो मानो जो सुखे हुए को मानो जो जीर्ण हो गया हो उसको हरित बना देती है। उसको मानो सुक्रेति औषध कहते हैं। वह सुक्रति का औषध वह मानो वह उसको पान करते हैं, वह उसको पान करके वह बुद्धि का वर्धक था वह औषधि कई पिपादों से निर्माणित की जाती है मानो सुक्रत औषध में एक मानो देखो, ब्रह्म वादिनी, जो औषध है उसका मिश्रण होता है और देखो, उसमें तुलसा कृतिकानी मानो देखो, उसका रस उसमें पिरोया जाता है, और मुध के मानो देखो, मधु के साथ, उसकी कृतिका बना करके, वह गो दुग्ध के द्वारा उसका आहार किया जाता है तो मानव की मानो देखो, पिछड़ने वाली जो स्मरण शक्ति है उसका जागरूक हो जाता है। मानो देखो, ब्रह्मवर्चोसि का दर्शन होने के लिए, मानो वह तत्पर रहता है और उसको वह औषधियों का पान करते हुए मानो देखो, आयु में दीर्घता, स्मरण शक्ति उनकी जागरूक हो जाती है। ऐसा मानो हमारे आचार्यों का यह मत माना गया है। तो वहाँ देखो, मुंचक ऋषि महाराज जब अपने में मानो देखो, अध्ययन कर रहे थे, अध्ययन करते-करते वह इन औषधियों का पान करते थे, अन्न को बारह वर्ष तक, उन्होंने अन्न को स्पर्श नही किया। परन्तु देखो, उन औषधियों का पान किया, तो उनमें मानो मानो तीन जन्मों की स्मरण शक्ति, उनके अन्तःकरण, चित्त के मण्डल में बेटा! जागरूक होने लगी मानो तीन जन्मों का उसे मानो भान होने लगा और जब उसे यह कि मैं क्या था तीन जन्मों में परन्तु देखो, वह चित्र उनके समीप आने लगे। क्योंकि चित्त मण्डल में चित्र तो विद्यमान रहते ही हैं यह तो सार्वभौम सिद्धान्त हैं परन्तु देखो, उसकी प्रतिभा, इसी प्रकार उनके स्थिति मस्तिष्क में आने लगी। तो वह उसकी स्मरण शक्ति जागरूक होने लगी तो विचार-विनिमय क्या मानो देखो, उसका वह अध्ययन करते हुए, गायत्राणी छन्दों का अध्ययन करते हुए, वह भी एक औषध बन करके रहता है। वेदमन्त्र जब उच्चारण किया जाता है, तो यह देव वाणी में, एक विशेषता मानी गई है, प्रत्येक अंग से वेद की ध्वनि का जन्म होता है, और वह जो वेदज्ञ ध्वनि है, मानो इसीलिए हमारे यहाँ इसको देव वाणी कहते हैं मानो यह देवता की रूपणी इसको अध्ययन करके देवता बनता है, देवता क्यों बनता है? क्योंकि इससे स्मरण शक्ति भी जागरूक होती है, क्योंकि अंग से, प्रत्येक अंग से इसका उद्घोष होता है। मैंने बहुत पुरातन काल में, एक वाक् मानो ऋषि-मुनियों के मस्तिष्को में प्रायः उनके क्रियाकलापों में दृष्टिपात किया, एक समय मानो जब महाराज अश्वपति के विद्यालय में जब अध्यापन का क्रियालाप प्रारम्भ था तो एक समय भ्रमण करते हुए मानो देखो, मगध राष्ट्र में चले गएं जब मगध राष्ट्र में पंहुचे तो वहाँ कुछ मानो देखो, वैद्यराज एक नदी के तट पर नदी के तट पर वह कुछ अध्ययन कर रहे थे, अध्ययन करते-करते वह औषधियो के गुणों का गुणवादन करने के लिए तत्पर होना चाहते थे, तो मानो देखो, जब उनके द्वार पर पंहुचे, तो उन्होंने मानो देखो, एक औषध का हमें चूर्ण कृतिका मानो देखो, हमें पान कराया, पान करा करके क्षुधा समाप्त हो गई, क्षुधा नही रही तो मानो ब्रह्मेवर्चो उन औषधियों को हम जानते हुए भी नही जानते, क्योंकि वह औषधि इतनी गम्भीर तथ्यों में रत्त रहती है, उनका गुण इतना महान, विचित्र बना रहता है कि उसमें हम असमर्थता भी दृष्टिपात करते हैं। परन्तु देखो, आज मैं विशेष चर्चा न करता हुआ, आज मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ दो शब्द उच्चारण करेंगें, आयुर्वेद के सम्बन्ध में, जो प्रकरण चल रहा है मानो यह कुछ कहते हैं हम कुछ उच्चारण करते हैं यह हमारे विचारों से भिन्न चले जाते हैं, हम इनके विचारों से भिन्न चले जाते हैं, तो उसके मूल में क्या है? तो हम यह जानना चाहते हैं।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् सम्भवा देवो ब्रह्वे अस्वतां वाचन्नमो ब्रह्मणा स्वस्ति वस्सतं क्रतो अस्वनं ब्रह्म वाचा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! कई समय हो गएं हैं, चर्चाएं प्रारम्भ हो रही हैं, विषय का स्रोत उसी प्रकार बह रहा है, परन्तु जब मैं चिकित्सा के गर्भ में प्रवेश करने के लिए तत्पर होता हूँ, तो आपके समीप मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है

जैसे सूर्य को एक सूक्ष्म सी ज्योति का भान होता हो, क्योंकि जितना अध्ययन महापुरूष करते रहे हैं, क्योंकि अध्ययन दो प्रकार से होता है, एक अध्ययन की प्रतिक्रिया तो यह है, कि हमने एक औषधि को दृष्टिपात कर लिया परन्तु देखो, द्वितीय अध्ययन वह कहलाता है जो उसके गुणों का गुणवादन करता है। उसको मानो देखो, जल के सहित, उसको दुग्ध के सहित, उसको पान कर-कर के उसको अनुभव की लेखनी बद्ध कर देता है। एक अनुभव वह होता है जो अन्तर्मुखी बन जाता है और अन्तर्मुखी बन करके वह समाधिष्ट हो जाता है, और समाधिष्ट हो करके, वह उन औषधियों के गुणों को अपने तथ्य में लाने का प्रयास करता है अपने में उन्हें लाना प्रारम्भ करता है। परन्तु जब पूर्ण रूपेण उनका अध्ययन मानो पूर्ण रूपेण बन जाता है। तो अपनी लेखनी को बद्ध करने लगता है। तीन प्रकार हैं औषध विज्ञान के तीन प्रकार किसी भी विषय को ले लिया जाएं उसके प्रायः तीन प्रकार होते हैं। परन्तु आज का जो विषय हमारा है, वह इस प्रकार है, जैसे बड़ी विचित्र एक आभा में हम परिणत हो रहे हैं, हमारे समीप दो प्रकार मानो देखो, चिकित्सा विज्ञान विद्यमान हैं। प्रायः वास्तव में तो चिकित्सा बहुत प्रकार की होती है, परन्तु मैं जो आज अपने पूज्यपाद गुरुदेव के समीप अपने विषय को लाना चाहता हूँ, वह केवल विषय यही है जिसको हम जान करके कुछ कल्याण के उस मार्ग पर जा सकें जहाँ हमारे पूर्वज, उस अन्नाद को पान करके उस औषध विज्ञान को जान करके मानो सागर से पार हो गएं हैं।

आज हमारा जो उद्देश्य मैं आधुनिक काल, जिस आधुनिक जगत में हमारा जिस वर्तमान में, यह आकाशवाणी का उद्घोष हो रहा है, पूज्यपाद गुरुदेव जिस स्थली पर मानो शरीराणां ब्रहे वाचो ब्रहे देखो, हमारी आकाशवाणी जा रही है, मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ जिस स्थली पर आकाशवाणी का यह स्रोत बह रहा है, मैं प्रायः गृह पति के लिए प्रायः धन्यवाद का एक पात्र बनना चाहता हूँ और मैं यह कहता हूँ। क्या धन्यवाद है वह मेरे पात्र हैं जिनको धन्यवाद देना चाहता हूँ। क्योंकि मैंने बहुत पुरातन मानो अन्तरात्मा की चर्चाओं में, तो मैं विशेषकर मैं जाना नही चाहता हूँ, परन्तु केवल यह कि उनकी अन्तरात्मा में शान्ति का उद्घोष होता रहे, शान्ति के उद्घोष के साथ परन्तु जिस मार्ग पर वह अपने को ले जाना चाहते हैं, उनके क्रियाकलाप में मानो सूक्ष्मतम् हमें दृष्टिपात आता है। मानो सबसे प्रथम ममता की मानो अहं भाव की भावना मानव को अपने हृदय से त्याग देनी चाहिए, वह जो अहं भावना है, वह गृह वृत्तिका में मानो देखो, वह उनके हृदयों में, हृदयो से दूरी हो जानी चाहिए। क्योंकि हमारे यहाँ जो भी आयुर्वेदाचार्य बने हैं वह नदियों के तटों पर, मानो गिरी पर्वतों के शिखर पर जा-जा करके मानो देखो, उन्होंने परमात्मा की कृति को यह भी सृष्टि का एक अंग हैं यह परमपिता परमात्मा की सृष्टि का विशाल अंग कहलाता है। क्योंकि यह इतना विशाल अंग कहलाता है कि इसके ऊपर मानवीयता की धारा विद्यमान रहती है। इसीलिए मानव को नम्र बन करके, क्योंकि औषध विज्ञान हमें नम्रता के क्षेत्र में ले जाता है, हमें मानो एक अनुसन्धान के क्षेत्र में ले जाता है, एक पार्थिव तत्त्वों की गम्भीर तथ्यों में रमण करने में हमे ले जाता है।

एक वैद्यराज मुझे स्मरण आते रहे हैं जो मानो उन वैद्यों ने उन वैदिक अब्रहो वेद के अध्ययन करने वालों में मानो स्मरण आए वह एक-एक औषधियों का पान कर-कर के उनके गुणों की लेखनी बद्ध करते रहते थे मानो देखो, वह बारह-बारह वर्षों तक मानो देखो, वह भंयकर वनों में भ्रमण करते औषधियों को पान करते-करते उदर की पूर्ति हो जाती थी। उदर की पूर्ति का केवल साधन वह बन गया क्या वह उन औषधियों का ही पान करते रहे, परन्तु देखो, हमारे यहाँ बहुत-सी त्रुटियां आयुर्वेद में आ गई, क्योंकि आयुर्वेद में त्रुटियां क्यों आईं क्योंकि देखो, यहाँ जिस भूमि पर हमारी आकाशवाणी जा रही है मानो देखो, उसमें वैद्यराज औषध विज्ञान की विशेषज्ञ रहे हैं यह आयुर्वेद का विज्ञान मानो देखो, हमारे यहाँ त्रेता के द्वापर के काल में मानो देखो, महाराजा दुर्योधन के गुरु देखो, वह दुर्वासा भी आयुर्वेद के मर्म को जानते थे, आयुर्वेद की विद्या को मानो देखो, बहुत रूप में मन्थन करते

थे, आधुनिक काल में मानो जहाँ वह रहते थे, आधुनिक काल में तो वह यवनों के मानो देखो, मोहम्मद के मानने वालों में उनका गृह चला गया, परन्तु देखो, उनको आधुनिक जगत में अपने को आर्य पद्धति को उच्चारण कर सकते हैं। परन्तु देखो, पौराणिक प्राणियों ने मानो देखो, उस प्रतिभा को न ला करके मानो देखो, उसे पुरातन काल में आर्यतन कहते थे देखो, द्वापर के काल में आर्यतन कहते थे फिर देखो, वही ईरान बन गया आधुनिक काल में उसको ईरान की पद्धति उच्चारण करते हैं परन्तु देखो, यहाँ नाना देखो, अपृतियों ने बहुत-सी औषध विज्ञान उसके आधार पर मेरे पूज्यपाद गुरुदेव उच्चारण करते रहते हैं परन्तु देखो, कुछ इस प्रकार का निदान क्योंकि हमारे यहाँ इस भारत भूमि में जहाँ हमारी आकाशवाणी जा रही है मानो देखो, यहाँ भी भिन्न-भिन्न, एक-एक औषधियों के भिन्न-भिन्न नामोकरण माने गएं हैं, जैसे तुलसी है, हमारे यहाँ तुलसी को हम जब दक्षिणाय के भारत भूमि में जाते हैं वहाँ तुलसी को मृचिका कहते हैं परन्तु देखो, जब हम उत्तरायण में जाते हैं तो उसको तुलसी का व्रेण कहते हैं तो मानो देखो, इनके भिन्न-भिन्न नामों का उच्चारण किया जाता है। जब पूर्व दिशा में प्रवेश करते हैं तो वहाँ तुलसी का पत्र कहते हैं, तो मानो देखो, एक-एक रूप कितने बन गएं आधुनिक काल की चर्चाएं मैं प्रगट कर रहा हूँ, जैसे वट वृक्ष है, हम इसको वट वृक्ष कहते हैं कहीं बरगद कहते हैं कहीं बरिका कहते हैं कहीं बरख कहते हैं तो इसको भिन्न-भिन्न प्रकार के नामो उच्चारणों की पद्धति में भेदन आ जाता है। परिणाम क्या जैसे पीपल का वृक्ष है, इस पीपल के वृक्ष को हम पीपली कहते हैं, कहीं पीपली कहते हैं, कहीं पीपल कहते हैं, कहीं प्राणित कहते हैं, कही प्राण वर्धक कहते हैं, कही स्वाति कहते हैं मानो देखो, इसके भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूप बन जाते हैं।

तो परिणाम यह कि इन औषधों को जानने के लिए हम निघण्टु में या किसी भी विष्कृतियों में जाएं तो मानो देखो, हमारे मत भेदन बन जाते हैं, वह क्रिया भेद बन गया है, इसी प्रकार हमारे यहाँ जैसे जाल वृक्ष है, जाल वृक्ष को यहाँ जाल वृक्ष कहते हैं, देखो, और हम यदि दूसरे राज्यों में जाते हैं तो वहाँ कोशिक कहते हैं, कही इसका नाम कोतिक है, कहीं कोतुक नामक है, कहीं कुस्तवानी है, तो मानो इसके चार भेदन एक भाषा के अवान्तर भेदों से हमें दृष्टिपात आते है। तो मानो देखो, इस प्रकार हम बहुत-सी इनका जो क्रियाकलाप है वह भिन्न बन गया है। जैसे मृचिका हम कहते हैं तो मानो देखो, उसको हम आधुनिक काल में हम मानो काली मृचि के, रूप में वर्णन करते हैं मानो देखो, श्वेताम्बिनी हम मानो देखो, हम जो श्वेत्ता जो श्वेत वर्ण की मिर्च होती है, उसको कहते हैं साम्भूनि मानो देखो, हम लाल मिर्च को कहते हैं, सरीचिका हम मानो हम शैलखण्डा को कहते हैं। और शैलखण्डा के नाना रूप बन जाते हैं।

कैंसर निदान

तो परिणाम क्या जैसे लक्ष्मणा का वर्णन मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कर रहे थे तो लक्ष्मणा को मानो कहीं लक्ष्मणा बूटी कहते हैं, कहीं स्वाति कहते हैं, कहीं कटिका कहते हैं, कहीं श्वधन कहते हैं तो मानो देखो, उसके अवान्तर भेद बन जाते हैं परिणाम क्या त्रिकुटा का वर्णन किया मानो देखो, त्रिकुटे में मृचिका, शुधेनि, सतवत कहते हैं मानो देखो, त्रिफले को कहीं त्रिफला कहते हैं कहीं त्रिजटा कहते हैं कहीं त्रिमासी कहते हैं, मानो इस प्रकार भेदन बन जाते हैं तो परिणाम क्या मानो देखो, मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव ने जैसा वर्णन किया आधुनिक काल में मानो देखो, नामों का अवान्तर भेदन बन जाता है। प्रयोग की प्रतिक्रिया का परिवर्तन हो जाता है, मानो मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णन किया कि हमारे यहाँ बहुत से इस प्रकार के रूग्ण है, जिन रूग्णों का मानो कोई भी हमें स्रोत प्राप्त नही होता। जैसे हमारे यहाँ आधुनिक पुरातन काल में तो खुशवन्त कहते थे, परन्तु उस रोग का नाम खुशवन्त था, आधुनिक काल में उस रूग्ण का नाम मानो देखो, स्वाति कहते हैं, जहाँ मानव के उदर में मानो देखो, पशा हो जाना, उदर में एक प्रकार का देखो, रूधित बन जाना रूधिर में मानो देखो,

विजातीय पदार्थों की उत्पति हो जाना, मानो देखो, उसको पुरातन काल में सौमिक देखो, रूग्णा कहते थे, आधुनिक काल में उसका नाम हमारे यहाँ मानो देखो, फुड़ित कहते हैं। कहीं फुड़ित रूग्णा भी कहते हैं, कहीं-कहीं मानो देखो, आधुनिक काल में भयंकर रूग्णा बन गया जिसको हम कैंसर कहते हैं। मानो देखो, जब मुझे यह वाक् आता है, तो कैंसर का औषध क्या है? इसके सम्बन्ध में बहुत परिश्रम की आवश्यकता है, मैंने इसका अनुसन्धान पूज्यपाद गुरुदेव ने बहुत पुरातन काल में किया यह रूग्णा परम्परागताओं से चला आ रहा है। परन्तु इस रूग्णा का औषध यह है, क्या हम त्रिकुटे को लेते हैं, त्रिफले को लेते हैं, इनको मानो देखो, अग्नि में जल को तपा करके यह देखो, मानो इसका जल समाप्त हो जाएं, तो इसको खरल करके इसकी लुगदी बनाई जाती है। लुग्दी बना करके आम जो वृक्ष है, इसके पांचों अंग ले करके इसको भी अग्नि में तपा करके इसका क्षार बनाया जाता है। इसको खरल कर लिया जाता है, परन्तु इसी प्रकार एक जंडिका वृक्ष होता है, जंडिका वृक्ष हम देखो, उसके पांचों अंग ले करके अग्नि में उसको तपा करके उसकी मानो देखो, भस्म बना लेते हैं। भस्म बना करके उसको लुग्दी में मिश्रण कर देते हैं, मिश्रण करके एक मानो देखो, एक वृक्ष होता है। जिसको शौनक नामक वृक्ष कहते हैं, उस शौनक वृक्ष में मानो देखो, उसको हम सबकी पुटिका बना करके उसमें उसकी खोखर में मानो इसको परिणात कर देते हैं। छह माह तक जब मानो यह पुट उसमें लगी रहेगी तो उसको हम निकास लेते हैं, निकास करके उस वृक्ष के पांचो अंगों को ले करके उसको भी खरल करके मानो देखो, उसको हम सूक्ष्म सूक्ष्म गुटिका बना लेते हैं। और गुटिका बना करके देखो, उसे हम नित्यप्रति देखो, एक वर्ष तक मानो उसे देते रहें तो वह मानो देखो, रूग्णा वह शान्त हो जाता है।

तो परिणाम क्या यह मानो देखो, बहुत परिश्रम चाहता है, औषध विज्ञान मैंने बहुत पुरातन काल में वर्णान किया कि एक यक्ष्मा रूग्णा हो जाता है, यक्ष्मा को मानो देखो, जिसको मानो देखो, श्वास की गति मे भिन्नता आ जाती है, मानो देखो, उसमे विपरीतका को नष्ट हो जाते हैं, तो उस काल मे मानो देखो, आधुनिक काल का जो वैद्य है, आधुनिक काल का जो विज्ञान है, वह कहता है कि इसको इसके अंग से दूरी कर दिया जाएं परन्तु देखो, आयुर्वेद के जब मर्म में जब हम प्रवेश करते हैं, तो दृष्टिपात होता है कि हम मानो इसके औषध के जानने का प्रयास करें। परन्तु देखो, आधुनिक काल में क्या मानो देखो, कृतिका औषधियों को ले करके कृतक कराते हैं, जैसे मानो देखो, हमारे यहाँ दो प्रकार की आयुर्वेद की शाखा बन जाती है, एक आयुर्वेद वनस्पति विज्ञान है, यह वनस्पति विज्ञान सदैव बना रहता है, आदि काल से चला आता है, परन्तु मध्य काल में इसमें परिवर्तन आया, परिवर्तन यह आया कि हिंसा का प्रारम्भ हो गया। हिंसा का प्रारम्भ हो गया कहीं मानो देखो, मेंढ़क के अंग को लिया, अंग को ले करके बकरी के अंग में परिणात कर दिया है। बकरी के अंग को लिया तो कबूतर के अंग में परिणात कर दिया। मानो उसका जो गन्ध है उसको ले करके मानो हल्दी के साथ में परिणात कर दिया, तो यह सब देखो, इस प्रकार का औषध विज्ञान बन गया है, क्या यह औषध विज्ञान पूर्ण रूपेण नही कहलाता। क्योकि देखो, इसमें हिंसा का प्रारम्भ होता है, जो जल में मछली रहती है, वह जल में मछली संसार का शोधन करती हैं। परोपकार करती है। वह मछली जो भगवान मनु जैसे ऋषियों ने जिसकी रक्षा की हो, राजा परम्पराओं से रक्षा करते चले आए हैं। आधुनिक काल में उसका चूर्ण बना करके उसको देखो, अन्न के अभाव में उसको पान करता है। प्राणी अन्न के अभाव में तो नही कह सकते उसे रसना के स्वादन होने में पान करता रहता है। तो यह कोई विशेषता नही हैं मछली के रक्त को मानो ले करके यक्ष्मा के रूग्णा में देखो, वह उसको पान कराया जाता है। यदि हम यह कहते हैं यक्ष्मा के रूग्णा में यदि यह न हो तो त्रिकुटा ले करके और त्रिफला और त्रिकुटा ले करके इन ओषधियों को ले करके सम्भूनि नामक एक औषध होती है, और पीपल के पांचों अंग ले करके मानो देखो, इनका

रस तपा करके अग्नि में उसी रूग्ण को शान्त किया जाएं। तो मछली के रस की आवश्यकता नही हैं। मछली का रस एक न होने के तुल्य बन जाता है। आधुनिक जगत में मानो देखो, मैंढ़क के अंग को ले करके इस आधुनिक काल में उच्चारण कर रहा हूँ, शब्दों को क्या वह फेफड़े प्रणास्त हो जाते हैं। मानो देखो, उसका रस बना करके और वह कीकाम वृत्ति के रूपों में परिणत किया जाता है। यदि मानो देखो, हम मैंढ़क को न ले करके हम केवल उसमें स्वर्ण भस्म ले करके एक मृगिका भस्म होती है, इन सब भस्मों को ले करके एक मूंगा है, इस भस्म ली जाएं, परन्तु भस्म बना करके इसको मानो देखो, जल में परिणत करते हुए यदि इसको पान कराया जाएं तो मुनिवरों! देखो, वह मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे बहुत पुरातन काल में वर्णन कराया तो वह उसकी पूर्ति हो सकती है। तो यह हिंसा इन रूग्णों में नही रह पाती।

तो परिणाम यह है कि आज मैं यह जो उच्चारण कर रहा हूँ, जहाँ हम नाना प्रकार के वृक्षों की चर्चा औषध विज्ञान में यह औषध विज्ञान प्रायः वैसे वन का कार्य करता है, इसमें जो मानव जाता है, वह भयंकर वन की कल्पना करने लगता है, मैं भी करता हूँ। पूज्यपाद गुरुदेव भी करते रहते हैं। क्योंकि इतना विशाल यह विज्ञान है, इतना विशाल मानो औषध विज्ञान है कि इसको जानता हुआ मानव कही जन्मों की आवश्यकता बनी रहती है। परिणाम यह है कि आज मैं तो उच्चारण कर रहा हूँ, केवल यह कि मानो देखो, कदम्ब का जो रूग्ण ब्रहे कदम्ब का जो वृक्ष जो मेरे पूज्यपाद वर्णन कर रहे थे। इसके पांचों अंग को ले करके एक शोभणी वृक्ष होता है, जिसको मृचिका वृक्ष भी कहते हैं, मानो देखो, कंजी वृक्ष होता है, इन वृक्षों के पंचांगों को ले करके रस बना करके इनको रस बना करके तपा करके रस बना दिया जाता है। जब पृथ्वी के गर्भ में छ माह तक इसको मानो देखो, अन्तर्मुखी बना दिया जाएं उसके पश्चात उस रस को ले करके यदि उसका पान कराया जाएं, तो मानो देखो, यह जिसका अंग भंग हो जाता है, प्राणी मानो उसमें पुनः से प्राण शक्ति का संचार हो जाता है। तो परिणाम क्या है जिसका देखो, आधुनिक जो वैद्यराज है, उस मानो देखो, औषध को नही जान पाए हैं, विचार क्या है मानो देखो, यह नाना वृक्षों की मिश्रणता का मानो देखो, औषध बन जाता है। एक वृक्ष होता है जिसको झटिका वृक्ष कहते हैं, झटिका वृक्ष को ले करके हम मानो देखो, क्रील जो वृक्ष होता है, उसकी पतियों को उसकी फुंग वृत्ति को ले करके हम उसका भस्म बना लेते हैं, और जटिका वृक्ष की हम मानो देखो, दोनों को ले करके इसकी भस्म की लुगदी बना करके हम पीपल के वृक्ष में हम इसको सुटित कर देते हैं। तो छह माह के पश्चात उसको ले करके खरल बना करके गुटिका बना करके इसको मानो एक गो घृत के साथ प्रदान करने से, मानव के जो अंगम ब्रहे जो देखो, स्वाति सम्भवा माचि वृणिका देखो, एक रूग्ण होता है, जिसमे, गठिका हो जाती है, जैसे अंगों में एक मानो जुड़ापन हो जाता है। उसको वह शुद्ध पवित्र बना देता है।

तो परिणाम क्या मानो देखो, इस प्रकार का औषध विज्ञान मेरे विचार में शेष है, आधुनिक काल का जो वैद्यराज है वह इन औषधियों पर विचार नही कर रहा है अनुसन्धान कौन करे? परिश्रम कौन करे? परन्तु वह नही हो पाता, आधुनिक काल में क्या करते हैं औषधियों के बहुत-बहुत विशाल मानो नृत्त हो रहे हैं, उनमें पशुओं के अंगों को ले लेते हैं, जहाँ वृक्षों के अंगों को लेना था, वहाँ पशु के अंग को ले करके उसका औषध बनाते हैं। मानो देखो, वह उस रूग्ण के लिए पूर्ण रूपेण नही हो पाता, आधुनिक काल में यह सूक्ष्मता होती है। क्योंकि हिंसा की प्रवृत्ति बलवती हो गई है, आज एक मानव जो अपने गृह को अपने उदर को जो मानो देखो, एक हिंसा का क्षेत्र बना लेता है, एक मानव नाना प्रकार के देखो, प्राणियों का भक्षण करके अपने उदर को जैसे देखो, हम देखो, कृतिका में कहते हैं। कि इसको हम शरीर का कब्रिस्तान बना लिया जाता है। कब्रिस्तान उसे कहते हैं, जहाँ मृतक प्राणियों का वृत होता है, जहाँ प्रत्येक प्राणी के अंग और देखो, उसके रस को पान करके उसके उदर में भरण

कर देते हैं। तो उसका मानो देखो, निदान क्या हो सकता है, निदान भी उसका इसी प्रकार का है, कहीं मछलियों के रस को ले लिया है, कहीं मानो अजा के रक्त को ले लिया है, कहीं गऊ के रक्त को ले लिया है, कहीं भसीका के रक्त को ले लिया है, कहीं सोमतीति असुतों के रक्त को ले लिया है, कहीं उड़ने वाले पक्षियों के मानो रक्तों को ले करके मानो एक स्वात बना करके उसको पान कराते हैं। जिस कारण से वह रूग्ण आया, उसी कारण मानव की हिंसा से वह जाता है। तो इसीलिए देखो, आधुनिक जगत और पूर्व काल में बहुत अन्तर आ गया है, तो इसीलिए देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से तो प्रश्न तो करता रहता हूँ, परन्तु वह औषधियों के भण्डार में चले जाते हैं, हम भी चले जाते हैं, परन्तु देखो, आधुनिक काल में उसकी विशेषताएं इतनी नही मानी जाती जितनी होनी चाहिए। परन्तु देखो, जब अप्रतं देखो, जितने वैद्यराज है, हिंसा ले करके और देखो, द्रव्य को एकत्रित करते रहते हैं। मानो रूग्ण चाहे कहीं चला जाओ देखो, यह विशेषता बन गई है, आधुनिक काल में परन्तु देखो, मछली के अंग को ले करके उसका रस बना करके रोगी को दिया जाता है। मानो जब वह पान करता है, तो उसमें उतना उस्रुत नही हो पाता जितना होना चाहिए इसीलिए यदि वृक्षों के पंचांगों अवृत्तियों को बना करके यदि गुटिका बना करके उसको पान कराया जाता है। आधुनिक काल में मैं एक रूग्णासुते जैसे बादाम है, जिसको हम प्रष्ट कहते हैं, परन्तु देखो, उसको वेद में भूषणांत जीवन शक्ति कहते हैं, यदि हम उसको मानो देखो, उसको हम वज्र पर उसको घिसते रहे, चंटिका करते रहें, तो उसकी लुगदी बना लें, परन्तु उसकी जब लुगदी बना लेते हैं, तो लुगदी बना करके उसमें एक अम्बिका श्वेति होती है, उसको भी हम उसमें खरल कर लेते हैं देखो, एक फटीव्रंत होता है। उसको भी हम उसमें लुगदी बना लेते हैं। और देखो, उसको लुगदी बना करके उसमें मानो मोम वृत्तिका होती है, उसकी भी एक मानो खरल में मानो देखो, उसकी लुगदी बना लेते हैं, इनकी लुगदी बना करके देखो, नीम के अंग में देखो, उसको ओझल कर देते हैं, और छ माह तक हम उस औषध को ला करके मानो देखो, उसको खरल करके और उसको देखो, नेत्रहीन प्राणियों को दी जाएं तो नेत्रों के सर्वत्र रूग्णों का वह समापन करने वाली औषध होती है।

तो परिणाम क्या मैंने अपने पूज्यपाद जैसे पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहे, मैं भी उसी क्षेत्र में चला गया हूँ, मैं भी मानो उसी आभा में परिणत हो गया हूँ। जहाँ मुझे यह वाक् ले जाना नही था विचार-विनिमय क्या है मैंने पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुओं से बहुत प्रश्न किया हैं परन्तु हमारे यहाँ पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहे हैं, पुरातन काल में ऋषि-मुनियों का आयु दीर्घ इसीलिए होता था इसी कारण से होता था आज किसी मानव से कहो एक मानव शुक्र हीन हो गया है, और यदि वह शुक्रहीन से वह मानो देखो, मृत्यु के गृह में जा रहा है, तू शुक्रहीन बनने वाला है, तू अपने शुक्रत की रक्षा कर, तो मानो देखो, उसको ऐसा प्रतीत होता है जैसे मेरे ऊपर वज्रपात कर दिया हो। क्योंकि वह संसार की लोलुपता में इतना लुप्त हो गया है, वह संसार के विलासों में इतना विलसनीय बन गया है, क्या उसको मानो देखो, अपनी शक्ति के पुनः संचार करने के लिए वह तत्पर नही होता। तो इन औषधियों के विज्ञान में कहाँ जा सकता है, परन्तु देखो, मैं यह उच्चारण अपने पूज्यपाद गुरुदेव से उच्चारण कर रहा हूँ, क्या यह मानो देखो, भाषान्तर भेदों में भी इनमें भेदन आ जाता है। परिणाम क्या है मैंने कुछ आधुनिक काल की चर्चाएं की है, कुछ पुरातन काल की चर्चाएं की हैं, परन्तु देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष समय तो चाहता नही हूँ, जैसा मैंने अभी-अभी अपने पूज्यपाद गुरुदेव से समय लिया और समय क्यों लिया क्योंकि आयुर्वेद की संसार में आवश्यकता है। आयु चाहता है, प्रत्येक प्राणी आयु में रत्त रहना चाहता है, आयु कहाँ से प्राप्त होगी, आयु वनस्पति विज्ञान से प्राप्त होगी, क्योंकि एक-एक वृक्ष इस प्रकार की आयु वाला है, जिसकी सहस्रों वर्षों की आयु बन जाती है। मानो देखो, सहस्रों कई वर्षों की आयु बन जाती है। एक वट वृक्ष है परन्तु

उसकी आयु का प्रमाण हमें यहाँ तक प्राप्त होता है, उसकी आयु का प्रमाण लगभग देखो, पचास हजार वर्षों तक का देखो, यह वृक्ष बन जाता है, इसका आयु दीर्घ है। पीपल के वृक्ष की यदि सुरक्षा की जाएं तो मानो यह भी तीस हजार के लगभग आयु वाला बनता है। कदम्ब का वृक्ष है, उसकी आयु लगभग सतर हजार वर्षों के लगभग बन जाती है। परन्तु देखो, एक मृचिका वृक्ष होता है, जो पर्वतो में प्राप्त होता है उसकी आयु मानो देखो, लगभग अस्सी हजार के लगभग बन जाती हैं। तो इस प्रकार के देखो, वृक्षों का पंचांग पान करके हमारा आयु वास्तव में दीर्घता को प्राप्त होता है, क्योंकि वृक्षों का आयु विशाल है एक विलंग होती है, उस विलंग का नाम सोमवाणित वृक्ष विलंग कहलाती है, जो मानो देखो, कदम्ब के वृक्ष पर चली जाती हैं, उसका आयु मानो इतना दीर्घ है, उसकी आयु को माताओं को देखो, उसे पान कराना चाहिए, जैसे अशोका अन्वाषण वृक्ष है, इस वृक्ष की यदि सुरक्षा की जाएं, तो यह लगभग देखो, इसको जल इत्यादियों से स्वातिस किया जाएं, तो इसका आयु भी लगभग पैंतीस के लगभग बन जाता हैं। तो इसी प्रकार बहुत से वृक्ष है देखो, इस-इस प्रकार के, विलंग भी इस प्रकार की है ऐसी-ऐसी बूटी है मानो देखो, जो पृथ्वी पर उसकी जड़िका नही है, परन्तु वह वृक्ष से सहायता ले रही है एक मानो सत वृत्तिका एक विलंग है एक मृचिका विलंग है, जो हिमालय में प्राप्त होती है। परन्तु उसकी जटिका नही होती, वह केवल देखो, वृक्षों के पतों से ही अपने आहार को प्राप्त करती है। इसी प्रकार बहुत से वृक्ष इस प्रकार है जो मानो देखो, यह जो चैतन्य प्राणी है, इनको अपने में शोषण कर जाते हैं, तो ऐसे यह वृक्ष यह जो वनस्पति विज्ञान है यह तो विशाल वन है, मैं इस वन में जाना नही चाहता हूँ मैं तो अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा करता हूँ, क्या इसमें जाना तो व्यर्थ ही प्रतीत होता है। मानो देखो, मैं व्यर्थ तो इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ, क्योंकि यह एक बड़ा विशाल एक ज्ञान विज्ञान है, इसको जान करके आयु दीर्घ बनता है, और विज्ञान में मानव प्रगति कर सकता है। इसको जान करके इसी विज्ञान वनस्पति विज्ञान को जान करके हम मानो देखो, इस विज्ञान इस भौतिक विज्ञान यानो ब्रह्मणो वाचो हम अन्तरिक्ष में गति कर सकते हैं। इन औषधियों का पान करके हम मानो देखो, वायु में गमन कर सकते हैं, हम अन्तरिक्ष में मानो देखो, यानों की भांति गमन कर सकते हैं।

विचार यह आता है कि हमारा देखो, इस प्रकार का औषध विज्ञान हमारे मस्तिष्कों में रहना चाहिए, जिसको पान करते-करते आयु को दीर्घ बनाते रहें, सूर्य की किरणों के साथ में मानव देखो, गमन कर सकता है सूर्य मण्डल की भी यात्रा कर सकता है मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान इस प्रकार की प्रतिभा प्राण शक्ति ओजस्विता इन मानो औषधियों में विद्यमान रहती है मैंने बहुत पुरातन काल में कहा है, बहुत-सी प्रायः मेरी माता पुत्र से विहीन बन जाती हैं मानो देखो, पुत्र नही हो पाता, अशोक के पंचांग को ले करके, पीपल के पंचांग को ले करके, मानो देखो, इसका खार बना लेना चाहिए खार बना करके वट वृक्ष के अंगों को ले करके इसका खार बना करके इसकी लुगदी बना करके गो घृत में इसकी लुगदी बनाई जाएं, और लुगदी बना करके इसको मानो देखो, मानो अशोक के वृक्ष में इसको मानो ओझल कर दिया जाएं, छह माह के पश्चात उस मानो देखो, लुगदी को निकास करके उसका खरल बना लेना चाहिए, और खरल बना करके इसमे सत्यानाशी और जालिका वृक्ष होता है, एक कंजी के देखो, कुछ पत्र ले करके इनकी भस्म बना करके स्वर्ण की कृतिका का इसमें श्वेत लगता है मानो देखो, पारा की भस्म बना करके, इसमें मिश्रण करने के पश्चात इसमें मानो गुटिका बन जाती है। यदि देखो, वह गऊ के दुग्ध के साथ में उसको पान किया जाएं, तो माता पुत्रवती बन सकती है। तो इस प्रकार के देखो, औषध विज्ञान हमारे प्रायः वैदिक साहित्य में दृष्टिपात होते रहते हैं। जब मैंने ऋग्वेद का अध्ययन किया था बहुत पूज्यपाद गुरुदेव की शरण में विद्यमान हो करके इसका अध्ययन किया कुछ शाखाओं का अध्ययन किया कुछ स्मृतियों का अध्ययन किया तो मानो देखो, उनमें इस प्रकार का विज्ञान प्राप्त हुआ, जैसे सुधन्वा का पूज्यपाद

गुरुदेव वर्णन कराते रहते हैं। सुधन्वा की जिस समय लक्ष्मणा को उन्होंने देखो, लक्ष्मणा बूटी प्रदान की थी, उस समय उनका आयु मानो देखो, उनका आयु सत्रह सौ वर्ष का आयु था, जिस समय सुधन्वा को देखो, हनुमान वहाँ से लाए परन्तु उन्होने औषधि दी और वह युवा की भांति रहते थे, क्योंकि देखो, वह सदैव साधना में देखो, और औषध का पान करते रहते थे। अपने क्रियाकलापों में सदैव परिणत रहते थे, इस प्रकार का क्रियाकलाप उनके हृदयों मे परिणत रहा है परन्तु उनका अध्ययन इस प्रकार का गम्भीर रहा बारह-बाहर वर्षों के उन्होंने पच्चीस अनुष्ठान किए थे। और वह केवल किसलिए भयंकर वनो में रहना औषधियों के अनुभव में क्या कौन-सी औषध कहाँ प्राप्त होती है। कौन-सा गुण है, वह समाधि में प्राण और मन को एकाग्र करके भी मानो उनके गुणों का गुणावादन उनके समीप होता रहा है। जब मेरा बाल्यकाल था तो मैंने एक समय सर्पकेतनी औषध और शुद्ध बोधिनी औषध होती एक मानो कृतिघानु औषध होती है, इन तीनों औषधियों को ले करके इनका जाल बनाया, परन्तु आसन बना करके उसके गुणों का जब एक वैद्यराज से जब मैं इनका वर्णन करने लगा, मैंने कहा भगवन! इनके गुणों का वर्णन कीजिए, तो उन्होंने इसका कोई रूप रेखा वर्णन नही की, परन्तु मैं मग्न हो करके वहाँ से अपने पूज्यपाद गुरुदेव के समीप आया, गुरुदेव ने कहा कि तुम सुधन्वा के समीप चले जाओ, जब मैं सुधन्वा के द्वारा गया तो सुधन्वा उस समय हिमालय की कन्दरा में इसका औषधि विज्ञान का अध्ययन कर रहे थे। जब मैं हिमालय में पंहुचा, तो हिमालय में जा करके मैंने कहा-प्रभु! इस सर्प केतनी औषध के गुणों का वर्णन कीजिए इस केतु अस्तां मानो यह जो तीन औषघियों को मैं लाया हूँ। तो उन्होंने उनको जब वर्णन करने लगे परन्तु उनके भौतिक जगत में उनका विशेष वर्णन नही हुआ, परन्तु वह जब समाधिष्ट हो करके विद्यमान हो गएं, तो औषधियों ने उनके मस्तिष्क में अपने गुणों का वर्णन करना प्रारम्भ किया यह जो सर्पकेतनी औषध है, इसमें यह गुण है कि सर्प निकट नही आता, परन्तु जब सर्प निकट नही आता है, तो इसमें मानो देखो, विष विद्यमान विष कृतिका विद्यमान रहती है, उसका हम देखो, खरल करते हैं, खरल करके स्वाति बनाते हैं। उसकी गुटिका बना करके मानो देखो, उसमे केंचनी सम्भूनिका इन औषधियों का और मिश्रण करते हैं, तो मानो देखो, इसको पान करते-करते कोई भी विषैला प्राणी हो वह उसको मानो देखो, उसको स्पर्श कर जाएं। उसको कटिका कर जाएं तो उसका विष उसके ऊपर प्रहार नही कर पाता। तो मानो देखो, इस प्रकार के औषध विज्ञान यह सुधन्वा नाम वैद्यराज भी जानते थे, अश्विनी कुमारों ने तो वर्षों अध्ययन किया, आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव से यही आज्ञा पा रहा हूँ क्या हे प्रभु! हम भयंकर वनो में चले गएं है कल मुझे समय प्रदान करेंगें तो कल कुछ और उच्चारण करेंगें।

तो विचार-विनिमय क्या है कि हम परमपिता परमात्मा की महान सृष्टि में औषध विज्ञान को इतना महत्व देते रहे हैं, परम्परागतों से ही, क्योंकि यह मानव का आयु है, मानव को दीर्घ बनाता है अन्न भी एक आयु है, गो घृत भी आयु है, घृत भी और देखो, दुग्ध भी एक औषधि कहलाती है। ये भी जैसे आयु है। तो यह आयु वृत्तियों में वर्णन करना है, इसी प्रकार हमें वनस्पतियों को पान करना है। आज मैं विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूं। पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाना चाहता हूँ। क्या मुझे इतना उच्चारण करना था, मैं मानो आयुर्वेद का कोई विद्वान नही हूँ न व्याख्याता हूँ क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव के समीप तो ऐसा है जैसे एक मानव देखो, सूर्य के समीप, एक ज्योतिका को मैं प्रकाशित कर रहा हूँ। तो अब मुझे पूज्यपाद गुरुदेव आज्ञा देंगें समय देंगें तो कल मैं इसके ऊपर व्याख्या प्रगट कर सकूंगा। आज का विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बहुत से विचार ऐसे प्रगट कराए हैं जिनके हम नही जान पाते, जिनका हमैं बोध भी नही हैं। मानो जैसे हिंसक प्राणियों का औषध बनाया जाता है,

तो इसका हमें भान भी नही हैं। परन्तु कोई वाक् नही, यह वनस्पति विज्ञान की चर्चाएं चल रही हैं यह वनस्पति विज्ञान तो इतना विशाल है क्या हम इसके ऊपर अपनी टिप्पणियाँ करते रहे विचार देते रहे तो एक विशाल बन जाएगा मेरे पुत्र ने बहुत-सी वार्त्ताएं प्रगट कराई हैं। जिनका नामोकरण भी हम उन विशुद्ध रूपों में नही ले पाते परन्तु आधुनिक नामों का इन्होंने वर्णन कराया हम प्राचीन आधुनिक जगत मानो देखो, इसमें कोई अन्तर्द्वन्द्व नही होता क्योंकि ज्ञान वार्त्ताएं सदैव नवीन और वर्तमान कहलाती हैं। यह आज का विचार अब समाप्त होने जा रहा है। समय मिलेगा कल इसी विषय की चर्चाएं प्रगट करेंगें महानन्द जी का दो प्रश्न भी होंगें। आज का विचार अब समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

५ औषध विज्ञान १८-०७-१९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है नाना प्रकार का प्रकृति का जो आभूषण है जिसमें मानो सजातीय रहता है। कोई तो मानो इस प्रकृति को आभूषणों के रूप में स्वीकार कर रहा है और कोई इस प्रकृति में इतना रत्त हो जाता है कि अपने को इसमें मानो संलग्न करा करके अपने अस्तित्व को समाप्त कर देता है परन्तु ये जो परमात्मा का अमूल्य जगत, जिसमें हम संलग्न हो जाते है जब हम प्रभु को अपने से दूरी कर देते है तो प्रकृति में लिप्त हो जाते है। परन्तु जब हम परमात्मा को अपने समीप ममतामयी मातामयी, मानो उसको एक स्रोत स्वीकार कर लेते हे तो प्रकृति के आभूषणों में हम इतने संलग्न नहीं होते। उससे हमारा जीवन उपरामता को प्राप्त हो जाता है। और अपने देव को हम स्मरण करने लगते है। जो संसार का नियन्ता अथवा निर्माण करने वाला है।

अशुद्ध प्रवृत्ति

जो इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड को अपने में धारण कर रहा है और ब्रह्माण्ड की एक माला बना देता है। परन्तु वह कैसी विचित्र माला है, जिसको धारण करने के पश्चात मानव का जीवन पवित्र और महान बन जाता है। परन्तु हमें वह माला धारण कर लेनी चाहिए, जो परमपिता परमात्मा की माला को अपने में धारण करना नहीं चाहते, वह केवल एक अशुद्ध प्रवृत्ति वाले कहलाते है। परन्तु यह माला क्या है? जिस माला के सम्बन्ध में वेदज्ञ ध्वनि भी आती है, परन्तु जब व्याकरण की दृष्टि में, व्याकरण के उस अनहद रूपों में परिणत होते है तो एक माला-सी हमें, दृष्टिपात आने लगती है।

मुझे स्मरण आता रहता है पुत्रों! एक समय महर्षि श्वेनकेतु, अपने में अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन करते करते कहीं, इन्होंने एक अक्षर, अनहद का श्रवण किया। परन्तु श्वेनकेतु अपने पूज्य गुरुदेव के समीप पहुंचे। वे कहीं हिमालय की कन्दराओं में, तपस्या में तल्लीन थे। परन्तु उन्होंने कहा हे भगवन! मैं ये जानना चाहता हूँ कि अनहद किसे कहते है? स्वर ध्वनि किसे कहते है? और स्वर ध्वनि की उपलब्धि क्या है?

व्याकरण सूत्रों का विकास

तो मानो जब यह वाक् ऋषि ने प्रगट किया, तो उनके पूज्य गुरुदेव बोले कि हे ब्रह्मचारी! तुम यह वाक् क्यों प्रगट कर रहे हो? उन्होंने कहा-प्रभु! मैंने यह शब्द श्रवण किया, मैं इसके गर्भ में नहीं जा सका हूँ। उन्होंने कहा-कि अनहद ब्रह्मे वाचप्रवि शिव ब्रहा मानो वह जो परमपिता परमात्मा शिव है, वह जो विष्णु है, जो पालन करने वाला है मानो देखो, जिस समय सृष्टि का प्रारम्भ हुआ, तो सृष्टि के प्रारम्भ में, प्रत्येक प्राणी के मस्तिष्क की, इस प्रकार रचना की, इसमें ज्ञान और प्रयत्न निहित रह सके। जिसमें ज्ञान और प्रयत्न की धारा, एक विशुद्ध रूप से गति करती रहे। परन्तु उसी स्वरूप को ले करके, पुनः जब सब प्राणियों को मस्तिष्क प्रदान कर दिया तो पश्चात में मानो देखो, इस देव का, मानव के मस्तिष्क का निर्माण किया और वह ऐसे तन्तुओं से निर्माण किया, जिससे और प्राणियों का भी किया। परन्तु देखो, जब इसका निर्माण होने लगा, तो इसमें नाड़ियों का एक ऐसा समूह, एक ध्वनि रचित की, जिसको व्याकरण की दृष्टि से मानो देखो, सूत्रों का निकास हुआ और वह मानो जैसे महाराजा शिव का मानो देखो, दण्डवत् नृत्य कहा जाता है। वह जो नृत्य है, वह नृत्य यही है कि परमात्मा का नृत्य, आत्मा रूपी शिव का जब नृत्य होता है मानो प्राणां मनश्चप्रह्रे जब इनकी स्वरध्वनि एक सूत्र में आती है।

तो मानो इसमें से सूत्रों का निकास होता है। तो व्याकरणवेत्ताओं ने, उस अनहद, जो ध्वनि उत्पन्न होती है

उसी अनहद के स्वरों को ले करके, एक दूसरा जो स्वर माला में पिरोया हुआ था, उस माला को एकोकीकरण करके मानो देखो, उससे व्याकरण की उत्पत्ति का मूल बनता है। परन्तु जब मूल बना तो उस मूल में ही मानो देखो, यह प्रतिभाषित हो गया। शिकां ब्रह्वे श्वेतकेतु ने कहा-धन्य है प्रभु! आपने मुझे जो मेरा विचार रहा था, वहीं मुझे स्मरण पाया। वही आपके हृदयों में पाया। परन्तु विचार विनिमय क्या कि मुनिवरों! देखो, हमारा जो तपस्या का अथवा साधना का एक स्रोत माना गया है। वे परमपिता परमात्मा के आश्रित हो करके, हम अपने उस श्रोत्तीय विज्ञान में परिणत हो जाए। मानो देखो, हमारा जीवन परमात्मा से कटिबद्ध रहा है। उसी से कटिबद्ध हो रहा है।

प्रभु की महानता

परन्तु देखो, आज बेटा! मैं विशेष चर्चा न प्रगट करता हुआ, केवल यह वाक् की, हम परमपिता परमात्मा के आश्रित अथवा उसे अपने में स्मरण करने वाले बने और वह स्मरणीय कहलाता है। जब क्षुधा लगती है तो मानव उसी की गोद में जाता है। जैसे माता का पुत्र, व्याकुल हो रहा है, क्षुधा से पीड़ित हो रहा है, माता उसे अपनी लोरियों में आलिंगन करा देती है। उसे लोरियो का पान करा देती है वह आनन्दित हो करके मानो देखो, माता की लोरियों से, अपनी क्षुधा की शान्ति, क्षुधा में अमृत हो करके मानो उसको प्राप्त कर लेता है। तो मैं आज तुम्हें विशेष वाक् न देता हुआ, मानो देखो, यह सर्वत्र जो वायु मण्डल बना हुआ है यह मानव का जो मस्तिष्क का निर्माण हुआ है यह प्रभु की एक अनुभूति है, प्रभु की महानता है। इसके ऊपर प्रत्येक मानव को परम्परागतो से विचार विनिमय करके, अपनी आभा में परिणत हो जाना चाहिए।

सृष्टि विज्ञान

तो आज मैं मुनिवरों! विशेष वाक्यों में न जाता हुआ, वाक् क्या प्रारम्भ हो रहा था। वाक् क्या कह रहा है मानो बेटा! मैं उसी विज्ञान में जाना चाहता हूँ, जिस विज्ञान की मानो मैंने एक गाथा, एक रूपरेखा का निर्माण किया है, एक रूपरेखा की मानो एक कृति को ले करके, एक अंग को ले करके मैं मानो प्रभु की सृष्टि में पहुँच गया था और वह सृष्टि विज्ञान क्या, वह जो स्थावर सृष्टि है, इसका जो मानवीय विज्ञान है, यह बड़ा विशुद्ध और विचित्र माना गया है परन्तु देखो, आज मैं पुनः से उसी क्षेत्र में जाना चाहता हूँ जहाँ मुनिवरों! देखो, मानव अपने में साधक बन करके, साधना करता हुआ, नाना प्रकार के वृक्षों का, नाना वनस्पतियों का अपने में अध्ययन करता हुआ मानो देखो, उसमें नृत्त करना, उसने उनके गुणों की प्रतिभा को अपने में धारण करना है मानो उन्हीं को धारण करने वाला प्राणी, इस समूह सागर से पार हो जाता है।

तो आओ मुनिवरों! देखो, आज मैं तुम्हें, उस क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि मुनि साधना में परिणत हो करके, अपनी साधना में रत्त रहते। मानो देखो, मुझे ऐसा स्मरण है आयुर्वेदाचार्यो के मतां में नाना प्रकार की वार्त्ताएं आती रहती है। परन्तु उन वार्त्ताओं में, मैं आज जाना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल यह है कि हमारे चहां लेपन, शोधन, आहार, विचारा, सम्भूति, प्रतिभा, वाचनकृत्तिका मानो धेनु वृत्तिका सम्भेनकेत, सम्भिविका मानो देखो, यह प्रकृति के सर्वत्र नामो का वर्णन आता है। क्या मानो देखो, इसी प्रकार मानव के शरीर में, इस प्रकार की अनूभूतियां, इस प्रकार की विचित्रताएँ मेरे पुत्रों! आना प्रारम्भ हो जाती है।

महात्मा कुक्कुट मुनि का जीवन

तो मानव इस संसार सागर में अपने को सफलता के मार्ग पर ले जाता है और विचारता रहता है कि मानो देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। मुझे स्मरण है महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का जीवन, मैंने तुम्हें कई काल में कुक्कुट मुनि के जीवन की चर्चाएं की, परन्तु राजा रावण भी उनके यहाँ साधना के लिए, प्रवेश करते रहे। परन्तु महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का आयु, जब केवल मानो सौ वर्ष का हुआ, तो वह साधना तो पूर्व ही करते

रहते थे और जब उनका आयु केवल पन्द्रह वर्ष का था, माता के आंगन में खिलवाड़ करते थे, विद्यालयों में शिक्षा अध्ययन करते थे। परन्तु उसी समय से साधना में, अनुष्ठान में उनकी बड़ी प्रवृत्ति रहती। तो वह एक समय, माता-पिता की आज्ञा पा करके, वह मानो पर्वतों में चले गएं और पर्वतों में एक मानो जलाशय का, क्षितिज स्थली थी, वहाँ मानो एक आसन पर विद्यमान हो करके वह मानो देखो, माता गायत्री की गोद में चले गएं और अपने में यह संकल्प कर लिया कि मैं अपने आन्तरिक और बाह्य प्रकाश दोनों का समन्वय चाहता हूँ। आन्तरिक जगत और बाह्य जगत दोनों प्रकाश को, अपने सामूहिक, दोनों का समन्वय करता हुआ अपने इस सागर संसार की प्रतिभा से ऊर्ध्वा गति में प्रवेश करना चाहता हूँ।

तो महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज तपस्या में तल्लीन हो गये। परन्तु वह प्रभु के सम्बन्ध में विचार विनिमय करते रहते और विचार यह करते रहते, उनके जो श्वास की गति मानो कभी धीमी बन जाए, कभी ऊर्ध्वा में बन जाए, मानो कभी मध्यम हो जाए और कभी कृतिका मानो उग्र बनती चली जाए। इस प्रकार मानो जब श्वासों की गति पर अन्वेषण करने लगे, तो करते-करते इस स्थली पर जा पहुंचे कि यह जो प्राण स्वरूप है, यह मन चित्त के आधार, यह जो चित्त मण्डल बना हुआ है इसकी जो प्रतिभा है वह मन पर आती है, मन प्राण से समन्वय करता है, परन्तु इसी प्रकार यह देखो, मन की धीमी मध्य और उग्रुत गति बनी रहती है।

औषध का प्रभाव

एक वाक्, दूसरा मूल उन्होंने जाना कि हम जो भी आहार करते है मानो यदि हम वनस्पतियों में प्रवेश करते है, तो एक वनस्पति ऐसी है, जिसमें देखो, अग्नि तत्त्व प्रधान माना गया है, अग्नि की उष्णता विशेष होती है जब वह उसको पान कर लेती है तो प्राण की गति मानो गति विशाल बन जाती है और यदि हम मध्यम, शीतल औषध का पान करते है तो प्राण की गति शीतल बन जाती है। परन्तु देखो, मन की प्रवृत्ति उसमें परिणत हो जाती है। यदि हम मानो उत्तेजित औषध का पान कर लेते है तो हमारे रक्त की गति भी विशाल बन करके प्राण उसमें मिश्रित हो जाता है मानो वहीं प्राण एक आभा में रत्त रहने वाला है यदि हम मानो देखो, शीतल श्वेत्तामी औषधियों का पान करते है तो मानो हमारी कामवासना, उत्तेजना, नाड़ी की धीमी गति बन जाती है, देखो, उससे हमारे विकार समाप्त हो जाते है।

तो परिणाम, मानो देखो, इस प्रकार का जो विचार महात्मा कुकुट मुनि महाराज के चिन्तन में आया। महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने विचारा कि यह जो हमारा चित्त का मण्डल है, इस चित्त के मण्डल में तो संस्कार निहित रहते है अंकुर, तरंगें भ्रमण कर रही है वह जो सूक्ष्म अंकुर तरंगें, भ्रमण कर रहे है, उन तरंगों का जो समावेश, मन में प्रवेश करता है तो मन की गति भी, उसी प्रकार की बन जाती है। मानो देखो, मानव का आहार, व्यवहार में परिणत हो जाता है। मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने, इससे पूर्व काल में, अपने जो विचार हमें व्यक्त कराए वे बड़े विचित्र वाक् थे, उनके, परन्तु देखो, इनका एक विचार ऐसा महान, मार्मिक हमारे दर्शन शास्त्रों से सुगठित होता है। जैसे इन्होंने आहार की चर्चाएं की, क्या आहार मानव के प्राणों की रक्षा के लिए होना चाहिए।

सूक्ष्म आयु का कारण

परन्तु देखो, जब दूसरे के रक्त को हम पान करते रहेंगे, दूसरे के गर्भो को पान करते रहेंगे, तो रक्त की गति में भी विशालपन आ जाएगा, रक्त की गति में भी दूषित पना आ जाएगा और प्राण उसी के अनूकुल बरतने लगता है। प्राण में मानो देखो, मध्यपन, वृद्धपन, स्वातिपन, वाचीपन, भिन्न-भिन्न प्रकार की देखो, श्वास की प्रति गतियाँ बन जाती है क्योंक उसके मूल में यह है कि हमारा जो आन्तरिक जगत बना हुआ है, इस मानव शरीर का है, जो मानो देखो, जिसको ऊहा अपने में ला करके, रस नही बना सकता, उसका भी मानो देखो, संसार के

ओभो अप्रत्तियों में रमण करता हुआ, दूसरे के रक्त को भी, वह अपने में पचाना चाहता है, अपने में संग्रह करके, उसे वितरण करना चाहता है। तो वितरण करने में, आन्तरिक जगत में मानो देखो, कठिनाईयाँ आती रहती है। वह जो प्राण को, कठिनाईयाँ आती रहती है मानो सामान्य जो प्राण है, जो सात्विक पदार्थो को रस बना करके प्रदान कर सकता था वह रजोगुणी, तमोगुणी पदार्थो को भी उनका मानो देखो, उनको भी वितरण करना चाहता है। वह वितरण न हो करके, कहीं मानो देखो, पदार्थो में प्राण की न्यूनता हो जाती है, कहीं प्राण की ऊर्ध्वा गति बन जाती है तो मानो देखो, उस मानव का जैसे प्राण की गति देखो, धीमी अथवा दीर्घ बनती रहती है तो मानव का आयु सूक्ष्म बनता रहता है, मानव की आयु में सूक्ष्मपना आता रहता है। इसीलिए मानव में जब, रक्त में रक्त का मिलन होता है तो रक्त का विशेषकर, उनका एकोकी वर्ग नहीं, एकोकी करण न हो करके, मानो देखो, वह उत्तेजना में परिणत हो जाता है, उस उत्तेजना से क्रोधाग्नि, कामाग्नि, जागरूक जितनी होगी, उतना मानव का आयु सूक्ष्म बनता रहेगा। उतना ही सूक्ष्म बना रहेगा।

तो आज मैं बेटा! दर्शन शास्त्रों में, तुम्हें उस मानवीय क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ मानव अपने अन्तिम चरण में प्रवेश कर जाता है मानो देखो, इससे उसकी उत्तेजना में बलबती हो करके, मानव की कामप्रही प्रवृत्तियाँ बन करके आयु सूक्ष्म बनी रहता है। एक दूसरे के श्वासों में, श्वासों को मिलाना भी आयु में सूक्ष्मता बन जाती है।

मानव जीवन की उच्चता

तो परिणाम क्या है मानो देखो, विशेषताओं में जाना नहीं चाहता हूँ पुत्रों! यह महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का अनुसन्धान किया हुआ एक वक्तव्य है। महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने कहा है, कि हम मानो देखो, स्वाभाविक जो हमारा शरीर, भोजन को पान करना चाहता है, जिस वायु में रमण करना चाहता है, उसी में अपने स्वभाव से, अपने मानवीय जीवन को, जितना बरतता रहेगा, उतना ही मानव का जीवन ऊंचा और धीमा और आयु दीर्घता में परिणत होता चला जाएगा।

कन्दमूल के औषध गुण

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, मैंने बहुत पुरातन काल में अपने विचार देते हुए कहा है कि महात्मा बृणी व्रत्तो नाना महापुरुषों का एक ही वक्तव्य रहा है कि वनस्पतियों को मानो उनका औषध बना करके पान करोगे तो जीवन का संचार ऊंचा रहेगा। मानो महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज का यह वक्तव्य है क्योंकि कोई महात्मा, महापुरुष ऐसा नहीं होता जिसमें यह गुण न हो, औषधि का गुण भी उसमें होता है। औषध विज्ञान भी मानो उसे विशेषकर कृत करता रहता है। मानो देखो, कन्द मूल ये जो फल है अथवा वृक्षों का जो कन्द मूल है, इसको जो मानव पान करता है मानो जो पृथ्वी के अंग में मानो देखो, पौधों में फल होते है, उनमें रजोगुणी रस होता है क्योंकि वे पृथ्वी के, आन्तरिक रस से रसित होते है जो रस सूक्ष्म बन करके, वृक्ष की नस नाड़ियों में परिणत हो करके, फल में रस को प्रदान किया जाता है। वह, जो कन्द मूल है वह सात्विक होते है। मानो जितने भी रस, पृथ्वी से लिए जाते है मानो देखो, उन रसों में रजोगुण होता है, उन रसों में वायु प्रधान होता है, परन्तु उनका वायु प्रधान होने से वह कन्दमूल मानो देखो, उनको हम रवन्प्रह्वे व्रातं बृहि यत्ताहः उनको मानो देखो, हमारे यहाँ देखो, रसिता को ले करके अपने में रजोगुणी बन जाते है और जितने भी ऋतुगामी, फल होते है, कन्दमूल होते है, जो वृक्षों के ऊर्ध्वा में रसित होते है और वह ऋतु के अनुकूल मानव पान करता है तो वह रस, उस शरीर के लिए आवश्यक कहलाता है। उसमें मानो आयुता ही नहीं होती है उसमें सुसज्जिता भी होती है जो पृथ्वी पर मानो देखो, जितने भी फहलाव करने वाले, जितने भी पौधे है अथवा उनका जो फल है, उन फलों में भी मानो देखो, जो रजोगुण की मात्रा होती है उनमें वायु प्रधानता है, वह वायु प्रधान होते है।

परन्तु देखो, कन्दमूल भी देखो, इसी प्रकार, जो पृथ्वी में अप्रेत करते है, वह कन्दमूल और ये कन्दमूल का मिलन मानो देखो, इनको किसी किसी काल में एक-दूसरे से मिलान करके रस को रसित बना करके, इनका सोमरसों में क्रियाकलाप होते रहते है मानो देखो, जैसे मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें वर्णन करते हुए कहा था कि यह जो मानो, जितना औषध विज्ञान है, यह बड़ा विचित्र विज्ञान माना गया है।

महात्मा दधीचि का जीवन

मुझे स्मरण आता रहता है, महात्मा दधीचि के जीवन में प्रायः ऐसा आता है कि जब वह अनुष्ठान करते थे तो मानो वह सायं काल को देखो, भ्रमण करने जाते। प्रातःकालीन भ्रमण करने जाते। तो नाना औषधियों को ले करके वह उनका रस बना करके, उसको पान करते थे। उस रस को पान करके मानो वह लेखनियाँ बद्ध करते रहते थे। जैसे हमारे यहाँ महर्षि कणाद के जीवन में, मुझे स्मरण कराया, एक समय महानन्द जी ने, कि महर्षि कणाद के जीवन में, उन्होंने मानो देखो, पतंजलि जी के जीवन में, अनुशासन के ऊपर जब लेखनी बद्ध करने लगे, तो लेखनी बद्ध करते करते योग की प्रतिभा में चले गएं मानो परन्तु देखो, आहार क्या करते थे, यह विचारना है। मानो देखो, आहार क्या करते थे, वह स्वयं देखो, कनक को ले करके, उस कनक को मानो देखो, जल में रसित करके उसका मानो दुग्ध बना करके, प्रातःकालीन पान करते थे।

सूक्ष्म आहार का प्रभाव

एक समय मानो देखो, अश्विनी कुमार और महात्मा सुधन्वा एक स्थान पर विद्यमान थे। तो मानो एक स्थान पर जब विद्यमान थे तो एक वृक्ष, पीपल का वृक्ष था, उस पीपल के वृक्ष पर मानो एक पक्षी गान गा रहा है वह कौरुक कह रहा है कौरुक, कौरुक कह रहा है। परन्तु देखो, सुधन्वा ने अश्विनी से कहा, यह पक्षी? क्या कह रहा है उन्होंने कहा-प्रभु! हम तो इस भाषा को जान नहीं पाए। परन्तु देखो, कुमार ने कहा कि भगवन्! यह कह रहा है कौरुक, कौरुक, ऋतु अस्तु ब्रह्माः मानो देखो, वह क्या कह रहा है प्रभु! इसको नहीं जानते। तो महात्मा सुधन्वा ने कहा, वैद्यराज सुधन्वा ने कहा कि यह कहता है कौरुक, कौरुक, कौरुक तीन समय कौरुक कह करके वह पक्षी शान्त हो गया। तो पक्षी जब कौरुक कहता है तो वह कहता है कि ऋतभुक, मितभुक, और मानो देखो, सोवृत्ति कृतिभा मानो देखो, यह उच्चारण करके सुधन्वा ने कहा देखो, एक तो हित भुक, और मित, भुक, और ऋतभुक ये तीन मानो देखो, पदार्थ होते है। मानव को जब क्षुधा लगे मानो देखो, हित भुक पान करना चाहिए। जो हित में आने वाला पदार्थ है, उसका पान करो। परन्तु देखो, जो मित भुक, जो मित्र की दृष्टि से प्रिय लगने वाला हो। और एक वह जो ऋतु के अनुसार हो, जो ऋतु में, छह ऋतु है, ऋतु में जो अन्न हो, कन्दमूल हो उसे पान करना चाहिए। परन्तु देखो, मानव कहता है ऋतो भवति हित, भुका वृत्ते मानो देखो, सूक्ष्म आहार करना चाहिए। सूक्ष्म आहार करने वाला मानो देखो, संसार में रुग्ण नहीं होता।

महापुरुषों की देन

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है। जब मानो हम पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा अध्ययन करते थे, तो गुरुदेव जब मानो प्रातःकालीन अन्न का पान कराते तो ऋतु के अनुसार आ जाता है और देखो, मित के अनुसार जो उन्हें प्रिय लगता परन्तु देखो, लवण युक्त रहता, उस पदार्थ को देते मानो उससे तृप्ति हो जाती। मानो सूक्ष्म आहार देना और साधना में परिणत रहना, अध्ययन कराना मानो जब ब्रह्मचारी का यह आहार बन गया, सूक्ष्म मानो अन्न बन गया, प्राणों की रक्षा के, सुयोग्य अन्न की पान किया जाता तो वह मानव उत्तेजित नहीं होता। वह मानव सदैव, उसके रसों में, शरीर में मानो वह बुद्धिमानों, परमात्मा प्रदान करता है, उस मानव को, जो मानव सुन्दर, सुन्दर लेखनियाँ बद्ध करके, संसार को कुछ दे करके चले जाते है मानो देखो, अब्रहे व्रातम् मुझे स्मरण आता रहता है

बहुत से महापुरुषों का जीवन, मैं महानन्द जी के कल के विचारों के ऊपर एक टिप्पणियाँ दे रहा हूँ।

मानो देखो, वह काल स्मरण है, महर्षि वाल्मीकि का जीवन स्मरण आता रहता है बाल्मीकि महाराज! मानो देखो, वह नदी के तट पर रहते थे, तट पर रह करके मानो देखो, जल को पान करना और जल को शक्तिशाली बना लेना मानो देखो, उसमें आम, पीपल, और देखो, वह सोमनी वंचितिका और त्रेती वर्णश, श्वेतम्भरी मानो देखो, उन सब औषधियों को ले करके, उनके पत्रों को ले करके, उनका रस बना करके बाल्मीकि जी पान करते थे। परन्तु देखो, राम का जीवन मानो उन्होंने लेखनियाँ बद्ध की, क्या दे करके चले गये, महापुरुषों का जीवन दे करके चले गये।

औषध मिश्रण

तो मैं उच्चारण यह कर रहा हूँ कि पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा, जब अध्ययन करते थे तो प्रायः इस प्रकार का अध्ययन हमारे जीवन में रहा। मानो देखो, सूक्ष्म आहार करना ही मानव की यौगिकता है। मानो देखो, उससे शरीर मानो ओजस्वी बना रहता है और ऊर्ध्वा में गति करता रहता है जब मानो देखो, ऋतु वत्सं ऋतु और देखो, मित और देखो, वह सौ कृत्ति कृतोकर्णावस्तुति ये तीनों रूख्यकों का पान करता है, भोक्ता बनता है वह भोगतव्य को प्राप्त हो करके, ज्ञान, विज्ञान की उड़ाने उड़ता है तो यह वाक् जब उन्होंने वर्णन किया। वैद्यराज ने जब यह वर्णन किया तो अश्विनी कुमार नतमस्तिष्क हो गये। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! यह वाक् हमें हमारे पूज्यपाद गुरुदेव भी अध्ययन कराते थे, जब आयुर्वेद का अध्ययन कराते थे। जब माता लोरियों का पान कराती, जब हम कुछ जानने के योग्य हुए तो माता भी यही वाक् कहा करती थी। क्योंकि माता सदैव मानो देखो, चन्द्रमा की पूर्णता, कान्ति में, वह गौ रस को ले करके, वह चन्द्रमा में तपा करके पान कराती रहती थी। उस चन्द्रमा के गुणों का, रसो का रसित प्राप्त हो जाता है। मानो देखो, हमारे यहाँ ऐसे ऐसे, मानो इस प्रकार के जानने वाले हुए, सम्भवा देवो ब्रह्म वाचा मानो हम जल को, रात्रि समय देखो, भयंकर वन में जल को स्थित कर देना और जल को स्थित करके उस जल में देखो, शैलखण्डा, औषध का मिश्रण करा देते थे प्रातःकालीन, मानो देखो, सायंकाल को भी कर देती थी, वह दिवस समय में, सूर्य की किरण तपाती, रात्रि समय प्राणी, भिन्न-भिन्न प्राणी उस जल का, अपने में सेवन करते रहते थे और जब सेवन करते तो मानो देखो, वह प्रातःकाल, अगले प्रातःकाल उस जल को ले करके उसे मानो देखो, उस जल को मानो देखो, वत्रते व्रेत पर करके रस को मानो चरणामृत के नाते मानो देखो, उसमें तुलसी का सेलानी अंचकेतु, अंकेतु सत्यानाशी के और स्वाति के पत्रों का मानो उसमें मिश्रण करके, उनका रस बना करके पान किया जाता।

औषध से विभिन्न प्राणियों का भाषा ज्ञान

तो ऐसा हमारे यहाँ आया है कि इन औषधियों के कृत से, जलों के व्रणे संस्कारों से मानो जितने प्राणी, उस जल को पान करते थे, रात्रि के काल में, उन औषधियों से, उस जल का संस्कार करने के पश्चात प्राणी पान करता रहता था, यदि छह माह तक इस प्रकार जल को पान कर ले तो जितने भी प्राणी, उस औषधि के जल को पान करते है उतने ही प्राणियों को मानो भाषा का वह रूपान्तर जान लेता है। मानो उन भाषाओं का विशेषज्ञ बन जाता है, कि सर्पराज यह कह रहा है और यह सर्पराज की भाषा है मानो यह कीट की भाषा है, यह मृग की भाषा है। नाना प्राणियों की, जितने प्राणी उसको पान करेंगे, उन प्राणियों की भाषा का विशेषज्ञ, बुद्धिमान बन जाता है।

सोम रस

तो यह प्रायः देखो, इस प्रकार का अनुष्ठान, प्राचीन काल में, हमारे यहाँ प्रायः होता रहा है। मेरे पूज्यपाद

गुरुदेव क्या, आदि ऋषिवर देखो, एक कुम्भक ऋषि महाराज का आसन था पूज्यपाद गुरुदेव के आसन के निकट वह मानो देखो, कुम्भक ऋषि, इस प्रकार का अनुष्ठान करते थे। छह छः माह तक, जब भी अनुष्ठान करते तो जल को मानो स्वच्छ जल को, किसी पात्र में प्रदान कर देना और मानो देखो, उसको सूर्य की किरण का अवधान, संस्कार होना, फिर चन्द्रमा की कान्ति का संस्कार होना और मानो देखो, प्राणी उसे रात्रि समय, जल को अपने में पान करते रहते थे। उसी जल में इन औषधियों का मिश्रण करके मानो उसका पिपाद बना करके उस पान करते रहे है। वह सोम रस कहलाता है। उसको भी हमारे यहाँ सोम रस कहते है। सोम रस क्यों कहते है? क्योंकि उससे हमें सौम्यता प्राप्त होती है। उस जल से, हमें प्राण शक्ति प्राप्त होती है, वह औषधियों का संस्कार है और प्राणियों के विचारों का संस्कार, हमारे उदर में जा करके, स्मरण शक्ति में देखो, वह जागरुक हो जाता है।

तो परिणाम क्या बेटा! यह मैं भयंकर वन में चला गया हूँ, बेटा! मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, विचार तो बहुत ही विचित्र है ये, परन्तु देखो, जब बहुत गम्भीर साधना में एकत्रित हो करके, इन विचारों का अनुष्ठान करते रहे है। तो विचार विनिमय क्या मानो देखो, सोमरस की एक प्रतिभा तो यह कहलाती है। एक सोमरस और बनाया करते थे पूज्यपाद गुरुदेव, एक सोमरस और बनाते थे। वह सोमरस क्या था? कि गऊ के दुग्ध को लिया और गऊ के दुग्ध को ले करके, उसमें तन्दुल लिए और तन्दुल ले करके मानो देखो, बीस भाग उसमें मानो दुग्ध हो और एक भाग उसमें तन्दुल हो। एक भाग मानो देखो, उसमें अपामार्ग का जो बीज होता है उसको लिया जाता है और तुलसी का, मानो सौवाँ भाग, तुलसी का लिया जाता है और उसे ले करके और उसमें मानो देखो, प्रतिपदा शैल खण्डा के चौथाई भाग उसमें मिश्रण किया जाता है। और देखो, उसमें एक गंगा तटो का कुछ जल ले करके उसमें परिणत किया जाता है। मानो देखो, उसको चन्द्रमा के दिवस मानो देखो, अग्नि में तपा करके, सायं काल को पूर्णिमा के चन्द्रमा में उसे परिणत कर देते थे। मानो देखो, परिणत करके वह रात्रि समय, चन्द्रमा की कान्ति लगती रहती और वह मानो देखो, प्रातःकालीन मानो देखो, उस रस को, उसका रस बनाते, उसमें देखो, खरल करके रस बनाते रहते और रस बना करके मानो देखो, तुलसी के पत्रों का उसमें मिश्रण करते रहते और सत्यानाशी के पत्रों का मिश्रण करते। एक सोम बेल होती है उसका मिश्रण करते, एक जटामांसी होती है उसका मिश्रण करते, एक सोम कृतिका होती है उसका मिश्रण करते। परन्तु देखो, इन सब औषधियों का मिश्रण करके, उनको खरल बना करके, रस बना करके उसको पान किया जाता था तो उसको भी बेटा! सोम रस कहा जाता है।

तो मुनिवरों! देखो, सोमरस की, सोम रस का अभिप्रायः यह है जो मानव को प्रतिभा देने वाला हो, मानो प्रकाश देने वाला, वहीं अन्नाद हमारे जीवन का सोमरस बन करके रहता है। परन्तु देखो, इन विषैले पदार्थो को सोम रस नहीं कहा जाता है मानो देखो, इनको तो दूषित रस कहा जाता है। इनको दूषित रस कहना चाहिए। परन्तु विचार विनिमय इस सोम रस का पान करना, यह मानव, एकान्त में इस प्रकार के अनुष्ठान करने वाला देखो, यहाँ यदि बारह अनुष्ठान इन रसो के कर लेता है तो मुनिवरों! मानो देखो, उसका लगभग एक हजार वर्ष का आयु बन जाता है। इसी प्रकार अनुष्ठान करते चले जाओ, अहा देखो, ऋतभुक मितभुक और हितभुक का पान करते रहो तो मानव के जीवन में मानो देखो, रुग्ण होने का एक मूल कारण नही बनता है, एक मूलता में यह है कि मानव को प्राणशक्ति को ऊर्ध्वा बना लेना चाहिए, देवतव में ले जाना चाहिए।

ब्रह्मचर्य के दो ही प्रकार के स्वरूप माने गएं है। एक ब्रह्मचर्य की ध्रुवा गति होती है, एक ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वा गति होती है। ध्रुवा गति वाला पितर यागी भी बन जाता है। परन्तु वह ध्रुवा गति, देव यागी भी बन जाता है। वह मानो देखो, जब विचारों को मन्थन करता करता, ब्रह्मरन्ध में जब उसकी कृतिका चली जाती है देखो, ब्रह्मरन्ध में रस लेना प्रारम्भ हो जाता है तो मानो देखो, प्राण सूत्र में पिरोया हुआ, ब्रह्मरन्ध उस मानो देखो, चरी की, उन

परमाणुओं की जब ऊर्ध्वा गति बन जाती है तो मानो देखो, ऋषि जन, रसना के अग्र भाग को मानो देखो, वह ब्रह्मरन्ध के अग्र भाग में परिणत करते हुए, सोमरस का पान करते है। एक सोमरस वह होता है जिसको हमारे यहाँ, आध्यात्मिक रूप दिया जाता है। तो बेटा! मैं कहा चला गया हूँ, तुम्हें यह प्रतीत हो गया होगा, मैं बहुत दूरी चला गया हूँ, तुम्हारे विचारो में, इससे पूर्व विचारों में, तुम्हें मैं ब्रह्माण्ड की, मेरे शरीर रूपी ब्रह्माण्ड की, ग्रन्थियों में स्पष्टीकरण कर दिया है। मुझे कुछ ऐसा भाव हो रहा है परन्तु देखो, मेरे जो संस्कार देखो, जो सुषुप्ति में चले गये, वह भी जागरूक हो गएं है। परिणाम मुझे यह दृष्टिपात आ रहा है कि यह जो ज्ञान, विज्ञान की चर्चाएं, यह मानो देखो, औषध विज्ञान से ही प्रारम्भ होती है। मानो देखो, मानव उड़ान उड़ने लगता है विचित्र, विचित्र उड़ाने उड़ता हुआ, अपने ब्रह्मरन्ध में, अपनी आभा को परिणत करने लगता है।

तो आओ मेरे पुत्रों! मैं विशेषता में न ले जाता हुआ, तुम्हें उस क्षेत्र में ले गया हूँ जहाँ मानवीयता की प्रतिभा का जन्म होता है। आनन्दत्व की प्रतिभा का जन्म हो करके, मानव सागर से पार हो जाता है। तो आओ मेरे पुत्रों! आज मैंने तुम्हें कुछ सूक्ष्म महापुरुषों की चर्चाएं की, कुछ औषधि विज्ञान की चर्चाएं की है, कुछ अपने अनुभव, पूज्यपाद गुरुदेव के चरणों में विद्यमान हो करके, जिन रसों का पान करते रहे है मानो देखो, उस प्रतिभा को भी जान करके, हम मानो सोम की प्रतिभा में परिणत हो गएं है। परिणाम क्या है, हम मानो देखो, जब आत्मा, मन और प्राण दोनों का सम्मिश्रण करते है। साधना में, अनुष्ठान में, परिणत हो करके मानो देखो, सन्तुलित करके, जब इसमें परिणत हो जाते है तो मानो देखो, एक मन और प्राण के सम्मिलान से जब देखो, इस ब्रह्मरन्ध्र में, एकता के सूत्र में परिणत होते है तो वह भी हम एक सोम रस को पानकर रहे है। जो प्रभु का दिया हुआ, अनन्य सोम रस है, जिसको योगी जन पान करके अपनी आयु को दीर्घ बना करके, इस संसार सागर से पार हो जाते है।

प्रभु क प्रतिभा

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल विचार यह चल रहे है कि हमारे यहाँ देखो, जिस मानव को स्वस्थ रहना है, जिस मानव को महान बनना है उसको अपने जीवन में अनुष्ठान करने चाहिए औषधि विज्ञान को विशेषकर जानना चाहिए मानो देखो, इस प्रकार की प्रतिभाशाली पुरुषों का हमें संग प्राप्त हो, जिससे जीवन की प्रतिभा एक महान बन करके रहे। मानो क्रोधाग्नि में हमारा जीवन नहीं समाप्त होना चाहिए, यह संसार की प्रतिभा में मानव को रत्त नहीं रहना चाहिए। मानव को यदि रत्त रहना है तो प्रभु! की प्रतिभा में रत्त रह करके बेटा! अपने मानव जीवन को सुसुज्जित बना करके मानो देखो, उस सागर से पार हो जाना है। यह है बेटा! आज का वाक्, अब मुझे समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि भिन्न-भिन्न प्रकार की औषधियों के पिपाद बनाए जाते है, सौम्यता में प्रदान किए जाते है, नाना प्रकार से हम वायुमण्डल, ऋतभुक मितभुक और हितभुक को हमें पान करना चाहिए। जिससे जीवन पवित्र बन जाए।

जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी ने कहा है कि मानव शरीर को दूसरे प्राणियों का गृह नहीं बनाना चाहिए मानो इससे पूर्व काल में, यह प्रगट कर रहे थे कि दूसरे मानव के रक्त को पान करने वालों का आयु सूक्ष्म होता है। उनका आयु दीर्घ नहीं होता, यह हम भी उच्चारण करते है। मानो देखो, बहुत प्रकार के दैत्य हुए है, त्रेता के काल में, दैत्य राज हुए है। जिन्होंने मांसों का भक्षण करके, दूसरे प्राणियों का भक्षण करके, अपनी आयु को उन्होंने सूक्ष्म बनाया है उनका आयु सूक्ष्म बन गया है। परन्तु देखो, इसी प्रकार मानव को, आयु को हमें सूक्ष्म नहीं बनाना चाहिए, विशाल बनाना चाहिए। आयु का अभिप्रायः यह है कि शरीर को त्यागने का नाम आयु नहीं है, आयु उसे

कहते है जो मानो देखो, अपने जीवन में आहार पान कर रहा है, उसके पश्चात रुग्णता में परिणत हो रहा है। वह रुग्ण वाला जो प्राणी है, वह पाप का मूल बन रहा है पाप के मूल में परिणत हो रहा है और वह मानो देखो, उससे आयु सूक्ष्म बनती रहती है।

तो यह आज का हमारा वाक् समाप्त होने जा रहा है, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह, कि हमें ऋतभुक, मितभुक और हितभुक का पान करते, हमें अपने जीवन की ऊंचा बनाना है देखो, हित ऋत, मित भूक ध्वस्ति ब्रह्मवा वाचन्नेम देवो ब्रह्मा ये बेटा! सब वैद्यराज अपने में अनुभव करते है ये आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन। दिनांक-०६-०७-१९८५-३८, जोरबाग, नई दिल्ली

६ वनस्पति से दीर्घ आयु १५ १२ १९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है, क्योंकि उसकी सर्वत्र महती ओत-प्रोत हो रही है, कोई भी स्थली ऐसी नही हैं, जहाँ वे परमपिता परमात्मा न हो, परन्तु वह सर्वत्र विद्यमान है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव अपने स्मरण करें, और अपनी जो मनोनीत जो ज्ञान और विज्ञान की धाराएं है उन्हें अपने अन्तःकरण में जागरूक करें, क्योंकि बिना परमपिता परमात्मा की महती के अथवा उसकी महानता के बिना हम अपने अन्तःकरण की जो वृत्तियाँ हैं, अथवा जो धाराएं है, उन्हें हम जागरूक नही कर सकते। तो इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती अथवा वह जो विज्ञानमयी स्वरूप प्रभु है, उसे हम अपने में स्मरण करते रहे, और अपने में मानो अपनी मनोनीत भावना को मानो उसमें एक-दूसरे में ओत-प्रोत एक दूसरें में मानो समाहित होता हुआ मानो देखो, उसे हम प्रायः अपने में दृष्टिपात करते रहे, जिससे हमारे जीवन की जो मौलिक धाराएं हैं, जो हमारे जीवन में मानो एक प्रतिभा बनी हुई, वह मानवीयता में परिवर्तित होती रहे, और अपने में उन्हें हम सदैव अपने में धारण करते हुए, उस महानता का प्रायः दिग्दर्शन करते रहे। क्योंकि हमारे ऋषि-मुनियों एक बहुत ऊर्ध्वा में उड़ान उड़ी है, क्या पिण्ड और ब्रह्माण्ड की कल्पनाएं की गई है, जितना यह ब्रह्माण्ड है मानो उतना ही सूक्ष्म रूपों से यह मानो जीवन की रचना है, और ऋषि-मुनियों ने इसमें बड़ी विशेषताएं हैं, इसका चिन्तन करते हुए दोनो का एक दूसरे में समावेश करने का प्रयास किया। कुछ बाह्य जगत में इस ब्रह्माण्ड को जानने का प्रयास किया है, कुछ मानो जब बाह्य ब्रह्माण्ड अपने से उपराम होता है, तो आन्तरिक जगत में बेटा! हम प्रवेश कर जाते हैं, जब आन्तरिक जगत में प्रवेश करते हैं, तो वहाँ हम नाना प्रकार की आभा बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों का समावेश एक दूसरे में मानो देखो, वृत्तियों में हम दृष्टिपात करते रहते है। परम्परागतों से ही, नाना प्रकार का अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करना ये हमारा कर्तव्य है, जब प्रत्येक वस्तु पर मानव अनुसन्धान करता है तो उसमें अनन्तमयी ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगता है।

मानो जैसे एक मानव जैसे चार प्रकार की सृष्टियां कहलाती हैं सबसे प्रथम सृष्टि का नामोकरण मानो देखो, यह स्थावर कहा जाता है तो स्थावर सृष्टि के ऊपर, जब मानो उसके गर्भ में प्रवेश करता है अथवा अनुसन्धान करने लगता है अनुसन्धान करता-करता बेटा! बहुत दूरी चला जाता है मानो जैसा मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें अश्विनी कुमारों की चर्चाएं, महात्मा दधीचि की चर्चाएं, मानो देखो, उनका व्याख्यान, उनके विचारों की आभाएं, हमारे समीप आती रही। क्योंकि स्थावर सृष्टि पर, प्रत्येक मानव का, मानव अन्वेषण करना तो बहुत अनिवार्य है, परन्तु उसके ऊपर, उसके गुणाधानम् मानो गुणों को अपने में धारण करना, और अपने गुणों की उसमें पुट प्रदान करना यह मानो देखो, स्थावर सृष्टि की आभा में मानव सदैव रत्त रहा है। आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विवेचना देने नही आया हूँ, मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे बारम्बार मानो एक वृत्तियों में मुझे ले जाते हैं, परन्तु इनका परम्परागतों से, एक सिद्धान्त रहा है, क्या यह उन प्रवृत्तियों में ले जाते हैं जिन प्रवृत्तियों का भान प्रायः हमें भी इतना नही हो पाता। परन्तु जैसे हमारे यहाँ परन्तु जैसे हमने दृष्टिपात किया, और ऋषि-मुनियों के सम्पर्क में मानो उनके द्वार पर विद्यमान हो करके, अन्वेषण भी किया है। अथवा विचार-विनिमय भी किया है, तो मानो उससे यह प्रतीत होता है, कि यह जो स्थावर सृष्टि है, मानो जैसे चार प्रकार की सृष्टियों में प्रथम सृष्टि का जो निर्माण है, वह मेरे प्यारे! मेरे देव ने, स्थावर सृष्टि के रूप में परिणत किया है। ऐसा कुछ अनुभव होता रहा है, ऐसा कुछ

दर्शनों में आता रहा है, क्या जब परमपिता परमात्मा ने ये ब्रह्माण्ड की रचना की अथवा इस संसार की रचना करने के पश्चात मानो देखो, इस पृथ्वी की भी रचना हुई, तो मानो देखो, जिसको शीतल होने के लिए, मानो देखो, प्रभु ने, समय की आवश्यकता को जाना, तो कुछ समय के पश्चात मेरे प्यारे! उसी स्थावर सृष्टि का जन्म सबसे प्रथम हुआ, क्योंकि जब मानो देखो, जब अग्नि की तरंगों में, कोई वस्तु उपज नही पाती, जब तक उग्र तेज होता है, जिस भी काल में उग्र गति वाला मानो तेज होता है, उस उग्र गति में मुनिवरों! देखो, कोई भी सृष्टि उसमें उपज नही पाती। इसी प्रकार हमारे यहाँ मानो आज का वेदमन्त्र यह कह रहा है, वेदमन्त्र कहता है कि जब यह धीमी-धीमी मानो शनै-शनै यह इसमें शीतलता पृथ्वी में आती रही आते-आते मुनिवरों! देखो, प्रभु ने अपने उग्र तेज के द्वारा इसमें मानो देखो, नाना बीजों की स्थापना की अंकुर रूपों से मानो देखो, एक दूसरे का मिलान करते हुए मुनिवरों! देखो, एक परमाणु एक परमाणु में मिलान करता हुआ, उसका एक अंकुर रूपों में उन अंकुरों को बेटा! पृथ्वी के इस अग्नि अग्रहा तीव्रता में प्रदान किया, जब प्रदान किया तो मुनिवरों! देखो, उसमें यह सबसे प्रथम मुनिवरों! देखो, यह स्थावर सृष्टि का जन्म हुआ। स्थावर सृष्टि का जन्म मानो देखो, स्थावर किसे कहते हैं? जितना भी संसार का यह मानो वनस्पति सृष्टि में बेटा! यह सबसे प्रथम इन्हीं का जन्म होता है, और मुनिवरों! देखो, उन वृक्षों का मानो वनस्पतियों का सबसे प्रथम जन्म हुआ, जिनमें बेटा! देखो, सबसे प्रथम, अग्नि तत्त्व प्रधान थे। मानो जिसमे अग्नि की प्रतिभा, अग्नि की ओजस्विता मानो देखो, इसमें विशेषतम मानी गई। तो वह अंकुर वह सबसे प्रथम उपजने लगे, वह इस मानो देखो, एक स्थावर सृष्टि के रूप को धारण करते रहे और वह इतनी विशाल मानो सृष्टि बन गई।

मुनिवरों! देखो, एक-एक स्थलियों पर, मानो देखो, पर्वतों के आँगन में, जलचरों के आँगन में समुद्रों की तरंगों में बेटा! उनके गम्भीर रूप में, मानो देखो, स्थावर सृष्टि का जन्म हुआ, जब स्थावर सृष्टि का जन्म हुआ, तो मानो सबसे प्रथम मुनिवरों! देखो, तीन वृक्षों का जन्म हुआ था जिसका हमारे यहाँ मेरे प्यारे! उसको आकाकृत कहते हैं, आको कृत सबसे प्रथम मानो देखो, वृक्ष है, उसके पश्चात मेरे प्यारे! मानो पीलावाचिका मानो द्वितीय वृक्ष है, और मुनिवरों! देखो, ब्रीच नामक एक वृक्ष है, जो पर्वतों की तरंगों में मानो देखो, पर्वतों की मालाओं पर, जिसने जन्म लिया, और चौथा जो वृक्ष है, वह बिलावाचिका वृक्ष कहलाता है। तो मानो देखो, चार प्रकार के वृक्षों का जन्म, सबसे प्रथम हुआ मानो देखो, जो एक मानो देखो, अनन्तमयी बेटा! देखो, यह स्थावर सृष्टि का जन्म हुआ। जब यह जन्म हुआ, तो यह विचार आता है, हमारे यहाँ क्या जब मनुष्य नही था, तो इसको किसने चिन्तन में लाया कौन प्राणी ऐसा है जो इसको चिन्तन में लाया कि सबसे प्रथम मानो आकेश्वर यह वृक्ष सबसे प्रथम है तो मुनिवरों! देखो, इसके लिए मानव समाज ने, जब यह मानो देखो, जंगम सृष्टि का जन्म हुआ, तो जंगम सृष्टि के जन्म होने के पश्चात मानो देखो, उसमें ऐसे मानव का जन्म अति मानव का जन्म हुआ देखो, जो मानव मुनिवरों! देखो, बिना माता-पिता के मानो देखो, अश्वेत्तों में मानव ने, अब्रीहि और ऐसा मुझे प्रतीत है, क्या बिना माता-पिता के कौन जो मानो मैंने पुरातन काल में भी मैंने विचार दिया है, क्या इस सृष्टि के सम्बन्ध में, मानव समाज के सम्बन्ध में, भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार हमारे समीप आते रहते हैं कोई तो कहता है एक शब्द उच्चारण एक ध्वनि हुई और ध्वनि के आश्रित ही इस मानव समाज का जन्म हुआ परन्तु देखो, कोई प्राणी कहता है, जैसे एक विलंग होती है, और विलंग में एक फल होता है, और वह मानो परिपक्क हो करके पुनः ही मानो देखो, अपने विलंग से वह दूरी हो जाता है। कोई ऐसा कहता है, परन्तु देखो, किन्हीं आचार्यों के किसी प्रकार के सिद्धान्त है, परन्तु जब हम मुनिवरों! देखो, हम पुरातन के वैदिक सिद्धान्त पर प्रवेश करते हैं, उसके ऊपर अधिपथ्य करते हैं, मानो देखो, मुझे मेरे प्यारे! एक समय महानन्द जी ने ऐसा भी वर्णन किया है, कि कुछ मतावलम्बी ऐसा वर्णन करते हैं, क्या

मानो देखो, परमपिता परमात्मा, एक स्थली पर विद्यमान है, मानो देखो, उसने पांच प्राणियों को उत्पन्न करके अपनी कला से उसे संसार में मानो वृत्तियों में प्रवेश करा दिया, इस पृथ्वी मण्डल पर जब उनका आगमन हुआ, तो मानो एक दूसरे में एक दूसरा मानो देखो, ओत-प्रोत होने के लिए तत्पर हो गया। अपने ध्वनि एक दूसरे में ध्वनित करने लगा, मानो जैसे स्वाति ने अपने में मानो ध्वनित किया तो उसका आधुनिक काल के प्राणियों ने तो यह मेरे प्यारे महानन्द जी ने यह एक समय वर्णन कराया था और यह कहा था कि मानो वह ऐसा कहते हैं कि एक मानव हुआ अति मानव हुआ उस मानव के एक मानो अस्थि को ले करके मानो देखो, माता का निर्माण किया, और वह निर्माण किसने किया? परन्तु यह देखो, धूली वाले सिद्धान्त की आभा समाप्त कर दी।

तो मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार के इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय मुझे कुछ महानन्द जी ने कुछ मानो देखो, मुझे जो ऋषि-मुनियों का सिद्धान्त मानो मुझे स्मरण आया वह मानो ऐसा प्रतीत हुआ कि जब प्रलय काल होता है, तो प्रलय के काल में मानो देखो, नाना प्रकार के प्राणी, उस प्रलय काल में, नाना विचारों के मानो देखो, कुछ मोक्ष के निकटतव प्राणी होते हैं उन प्राणियों का जब मानो देखो, जब वृत्ति उस प्रलय काल में ह्रास हो जाता है, परमाणुवाद मानो कुछ प्राणी जीवन मुक्त प्रवृत्ति वाले रहते हैं, मानो जीवन मुक्त की विवेचना, मैंने बहुत पुरातन काल में मैंने तुम्हें वर्णन की जीवन मुक्त वह प्राणी होते हैं मानो देखो, शरीराम ब्रहे वाचा एक वेद की आख्यिका कहती है सवर्णं ब्रहे वाचा प्रही वंचकेतु वसुतां शरीराणां भवे वाचं शंका वृत्ति देवाः हमारे यहाँ एक सिद्धान्त माना गया है, मानो देखो, संकल्प कहते है संकल्प ध्वनि का यह ध्वनित हुआ कि संकल्प अहो वाचाः मानो देखो, यह वास्तव में हम संसार के ऊपर विचार करते हैं, तो यह जगत मानो एक संकल्प में कटिबद्ध हो रहा है, संकल्प की त्रिवृतों में मानो देखो, यह कटिबद्ध हो रहा है और यह संकल्प कटिबद्ध होता हुआ, मानो देखो, माता के रूप में पिता के रूप में, पत्नी के रूप में, मानो पुत्री के रूपों में, पुत्र के रूपों में, पुत्र वधु के रूपों में यह नाना रूपों में बेटा! संकल्प एक दृष्टिपात आता रहा है। एक संकल्पमयी जगत हमें जब दृष्टिपात आता है, तो सर्वत्र जगत एक संकल्प मानो देखो, ध्वनि है, उस ध्वनि में एक संकल्प अपनी आभा में परिणत हो रहा है। मानो देखो, यह संकल्प ही संकल्प दृष्टिपात आता है। जब यह विचार आता है कि हमारे यहाँ एक विद्या थी, जिसको हमारे यहाँ संकल्पोमयी विद्या कहते हैं, मानो देखो, कुछ ऐसा स्मरण आया क्या संकल्प मात्र से अपनी आयु का भी आदान प्रदान करने वाले प्राणी रहें है। इस संसार में मानो देखो, ऐसा मुझे स्मरण है मानो पुत्र समाप्त होने लगा है, माता अपनी आधी आयु मानो संकल्प मात्र से पुत्र को प्रदान कर दी है, वह संकल्पोंमयी वह मानो प्राणों में ओत-प्रोत हो करके वह संकल्प बन करके मानो मानव देखो, मानो उसका भोग चक्र माता का भोग चक्र उस मानो पुत्र के साथ-साथ मानो सुगठित हो करके, ओत प्रोत हो करके वह आयु वर्धक आयु में परिणत हो गया। तो ऐसे भी कुछ मानव अवान्तर भेदों की कल्पनाएं हमें प्राप्त होती रहती है इसी प्रकार हमारे यहाँ जीवन मुक्त प्राणी रहे हैं।

जीवन मुक्त

मानो जीवन मुक्त उन्हें कहते हैं, मानो देखो, जो जीवन शक्ति हो अपनी सूक्ष्म शरीर से ही उपजा देते हैं, जैसे माता के गर्भस्थल में, एक शिशु, एक बिन्दु पंहुचता है उस बिन्दु और शिशु के जाते ही मानो देखो, उसमें जीवन शक्ति का सन्निधान मात्र से ही मानो संचार हो जाता हैं उसी प्रकार जब जीवन मुक्त प्राणी, उसी को कहते है। मानो जीवन परमाणु मानो उसके अंग संग भ्रमण करते रहते हैं। जहाँ उसने मानो देखो, सूक्ष्म शरीर और कारण शरीर दोनों का जहाँ समन्वय हुआ, और मानो दोनों जहाँ एक दूसरे में तो ओत-प्रोत होते रहते हैं, परन्तु देखो, जीवन शक्ति, अपने में जागरूक हो जाती है, और जागरूक हो करके, मानो देखो, वह स्थूल शरीर को वह

केवल संकल्प मात्र से ही, अपने में प्राप्त कर लेते हैं। उससे सृष्टि का चक्र, पुनः मानो देखो, परिणत हो जाता है। मानो देखो, रहा यह, कि यह एक मानव ही कर सकता है या मानो देखो, नाना प्रकार के और जो नाना प्राणी हैं, नाना प्राणी जैसे मानो देखो, गो है, अश्व है, मानो देखो, अजा है, नाना प्रकार के जो प्राणी है इनको कौन इस प्रकार की जीवन पद्धति में परिणत करेगा? क्या मानो यह प्रभु में क्या यह ऋषि-मुनियों का अपनी आभा में एक रचना की प्रतिभा का एक मानो देखो, संकल्पोमयी माना गया है।

आज मैंने बहुत पुरातन काल में बेटा! इन वेदमन्त्रों के ऊपर अन्वेषण होता रहता है, तो विचारा मुनिवरों! स्थावर सृष्टि के सम्बन्ध में, उन प्राणियों में, जो जीवन मुक्त थे, और जीवन मुक्त प्राणियों ने अपने मानो संकल्पोमयी शरीर को धारण किया और संकल्पोमयी शरीर को धारण करके और वहां संकल्प मानो जहाँ मानव का कर सकते हैं वहाँ और भी पशुओं का भी कर सकते हैं मानो देखो, संकल्प मात्र से ही मुनिवरों! देखो, सन्निधान मात्र से अपनी प्रतिक्रियाओं का जन्म होने लगा मानो देखो, उन्होंने सबसे प्रथम इस सृष्टि को जब वह जीवन मुक्त परम्परा में थे।

तो उन्होंने सृष्टि रचना के विधान को मानो देखो, अपना दृष्टिपात किया और उन्होंने यह जाना क्या यह सबसे प्रथम यह जो वृक्ष का जन्म हुआ है वह आकेश्वर का है, आकेश्वर मानो देखो, सबसे प्रथम मानो देखो, यह वृक्ष वृत्तियों में माना गया है पीपेलेशवती मानो देखो, द्वितीय आभा में रत्त होता रहा है तो परिणाम क्या है क्योंकि उनकी आयु भी दीर्घ होती है आयु बड़ी दीर्घ उन वृक्षों की होती हैं उन स्थावर सृष्टि में मुनिवरों! देखो, अपने में रत्त रहने की प्रतिभा का एक अनुपम जीवन की धाराओं का जन्म होता रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह नाना प्रकार के जो मानवीय सिद्धान्त है, देखो, मानवीय तरंगें है, उन तरंगों की प्रतिभा का विनाश हो जाता हैं। तो परिणाम क्या है एकोकी सिद्धान्त हमारे जीवन में रहना चाहिए, एकोकी विचारधारा है, क्योंकि नाना प्रकार की विचारधाराएं, मुनिवरों! देखो, एक दूसरे में ओत-प्रोत हो करके केवल सर्वत्रता का एकोकीकरण हो जाता है, एकोकीकरण हो करके वही उद्बुद्ध अपवित्र क्रियाओं का जन्म हो जाता है। तो मेरे प्यारे! विचार क्या आज मैं देखो, स्थावर सृष्टि के सम्बन्ध में, अनन्तमयी ब्रह्माण्ड में जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल तुम्हें यह देने के लिए आया हूँ, क्या मानो इस स्थावर सृष्टि के सम्बन्ध में, नाना ऋषि-मुनि इस प्रकार के हैं, जो बेटा! उन्होंने इसके ऊपर अन्वेषण किया है, विचार किया है मानो देखो, अनुसन्धान करके एक-एक स्थावर सृष्टि के ऊपर अपना अधिपथ्य किया है।

तो मेरे प्यारे! देखो, उनके प्रत्येक अंग को ले करके, उन्होंने मानो उसमें जल की पृट लगाई, मानो अंग को ले करके जल की पुट लगा करके और अग्नि की पुट लगाई है, अग्नि की पुट मानो लगा करके पुनः से जल की पुट लगाई है, और जल की पुट लगा करके पुनः मुनिवरों! देखो, अग्नि की पुट लगा करके, मानो देखो, उसे पुनः पृथ्वी की पुट लगा देते हैं, तो इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, यह औषध विज्ञान मानो देखो, यह वनस्पति विज्ञान की प्रतिभा, एक मानवीयता में सदैव परिणत रही है। आज मैं वनस्पति विज्ञान में विशेष तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, यह चर्चाएं तो महानन्द जी कुछ प्रश्न करेंगें मैं कल ही दे सकूंगा। परन्तु इसके सम्बन्ध में हमारे यहाँ मैंने कई काल में बेटा! मैंने तुम्हें महात्मा च्यवन ऋषि की चर्चाएं की, मानो देखो, इसी सन्दर्भ में, मुनिवरों! हमारे यहाँ, एक श्वेत्ताश्वेतर ऋषि हुए थे, जो ब्रह्मा के काल में हुए, जो अथर्वा के काल में हुए, मानो देखो, उस काल में श्वेत्ताश्वेतर भृंगी कहलाते थे तो मानो देखो, श्वेत्ता श्वेतर भृंगी मुनि महाराज मानो देखो, वह भी अपने में, इस प्रकार के अन्वेषण में लगे, जब वह मानो देखो, याग के अन्वेषण मे लगे, वह याग मानो देखो, याग में वनस्पतियों को ले करके उसे अग्नि में तपा करके, मानो उसके ऊपर अनुसन्धान करते थे।

क्या प्रायः इन वनस्पतियों का देखो, क्या-क्या समन्वय रहता है, वह श्वेत्ताश्वेतर भृंगी ऋषि महाराज, एक समय मानो देखो, भ्रमण करते हुए, वह मानकेतु ऋषि के द्वार पर पंहुचे, मानकेतु ऋषि महाराज से बोले कि महाराज! मैं आज कुछ मानो आपके समीप इसीलिए आया हूँ, क्या आप याग करते-करते बारह वर्ष हो गएं हैं याग कर रहे हैं, अग्नि का चयन कर रहे है। और अग्नि मैंनें श्रवण किया है, कि आप आकेश्वर, वृचिका, सोमब्रीणि, वाचकेतु और देखो, बलिंगा, श्वेतु भाचन, मानो देखो, कुछ औषधियों को ले करके, उसे अग्नि में तपा करके अग्नि में स्वाहा कह करके वायुमण्डल को पवित्र बनाना चाहते हैं। उन्होंने कहा क्या महाराज विश्व ब्रहे हे भृंगी जी! वास्तव में ऐसा ही कर रहा हूँ। मुझे बारह वर्ष हो गएं हैं उन्होंने कहा तो प्रभु! आपने क्या पाया है? उन्होंने कहा कि मैं यह अनुसन्धान कर रहा हूँ कि याग से इन औषधियों में, मैं अग्नि में प्रवेश करने से अग्नि में इनकी तरंगें देने से मानो देखो, हमारे शरीरों में, किसी प्रकार के रूग्ण हो जाते हैं, मानो वह याग के द्वारा कैसे हम समाप्त कर सकते हैं, तो मानो देखो, उन्होंने कहा भृंगी जी ने क्या महाराज! आपने क्या पाया है? उन्होंने कहा कि मैं बारह वर्ष में, बारह वर्ष हो गएं हैं याग करते-करते परन्तु मेरा वायुमण्डल तो पवित्र बन गया है, याग से वायुमण्डल तो पवित्र बन गया है, परन्तु देखो, उस वायुमण्डल में, मैं योगाभ्यास मानो देखो, प्राण और मनस्तव मनों वाचो प्रीहि वाचो ब्रह्मा आत्मा मैं आत्मा को जानने के लिए मानो देखो, मैं योगाभ्यास में परिणत होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि आध्यात्किवाद क्या होता है? उन्होंने कहा आध्यात्मिकवाद वह होता है, जहाँ सर्वत्र ब्रह्माण्ड का, सर्वत्र मानो एकोकीकरण हो जाता हैं। जब मानो देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड, अपने में एकोकीकरण हो करके, मानो देखो, एक सूत्र में हम, अपने में सूत्रित होता हुआ, चेतना में परिणत कर लेते हैं, तो वह हमारे यहाँ देखो, आध्यात्मिकवाद कहलाता है। आध्यात्मिक काल की विवेचना करते हुए, उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकवाद ही मानो देखो, शुद्धिकरण करने वाला है, जैसे मानव का अन्तर्हृदय मानो देखो, सुगन्धित हो गया है, मानव का हृदय जब याग में सुगन्धित हो जाता है उसकी वाणी से उसके नेत्रों से मानो सुगन्धि आनी प्रारम्भ हो जाती है, तो वह जो सुगन्धि का समावेश है वह मानो मन में हो जाता है, और मन का समावेश प्राण में हो जाता है, और प्रणव का समावेश मानो देखो, ब्रह्म में हो जाता है, और ब्रह्म और आत्मा दोनों का समावेश हो करके, हम आध्यात्मिकवाद में मानो देखो, प्रकाश को दृष्टिपात करते रहते हैं।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने यह वर्णन कराया, तो मुनिवरों! देखो, वह भृंगी जी आश्चर्य चकित हो गएं मेरे प्यारे! वो भी उनके यहाँ याग करने लगे, जब याग करने लगे, तो बेटा! उन्होंने एक आकेश्वर की, एक मानो समिधा दी, और उन्होंने कहा इसे अग्न्याध्यान में तुम्हें परिणत करना है और मुझे यह जानकारी करनी है कि तुम्हारा तप कितना विशाल बन गया है। तो मानो जैसे उन्होंने मुनिवरों! वह आहुति प्रदान करने लगे, अग्नि की तरंगों में जब मानो देखो, उसका स्वाहाः कहने लगे, तो उनके जो हृदय की मानो तरंगें थी, हृदय का जो समावेश था, मानो वह तरंगें उस समिधा में दृष्टिपात आने लगी। और वह मानो देखो, समिधा, जैसे अग्नि में दी गई अग्नि की तरंगों में मानो देखो, ऋषि के हृदय को स्पर्श किया और हृदय को स्पर्श करते ही मानो देखो, वे तरंगें उनके अन्तर्हृदय में समावेश हो गई, और मुनिवरों! देखो, उन्हें यह प्रतीत हो गया, क्या इनके हृदय में, किस प्रकार की तरंगें विद्यमान हैं।

तो मेरे प्यारे! इस प्रकार के याग और देखो, समिधाओं के द्वारा जब मानव याग में परिणत होता है तो मेरे प्यारे! वहाँ उसकी प्रवृत्तियों का प्रतीत होने लगता है तो उनके हृदय में उस समय मानो देखो, तमोगुण और सतोगुण की प्रतिभा विद्यमान थी, तो जब ऋषि ने कहा हे भृंगी! हे श्वेत्ताश्वेतर भृंगी! आपके हृदय में मानो सतोगुण की पूर्ण रूपेण तरंगें नही आ पाई है, अब लो जाओ, तुम मानो देखो, भंयकर वनों में तप करो और तप करके

मानो देखो, तुम मानो देखो, पीपला वांचकेतु औषध को तुम पान करते रहो, और उसे पान करते-करते मानो देखो, तुम आक की वाचिका को ले करके उसको मानो चूर्ण बना करके पान करो और तुम मानो श्वामधेनु एक औषध होती है परन्तु उसके पत्रों का पान करो और पान करके और तुम्हारी प्रवृत्ति उस काल में शुद्ध और पवित्र बनेगी, यौगिक बनेगी।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने ऐसी ही किया मानो देखो, उनको एकत्रित करते हुए, अग्नि में तपा-तपा करके उसको पान करने लगे, और मानो देखो, औषधियों के द्वारा वह याग भी करने लगे, कुछ मन्त्रों को ले करके मानो देखो, स्वाहा कहने लगे तो उसके हृदय में, पवित्रता की एक महानता छाने लगी, वह नम्र और महान पवित्र बन करके, मानो बेटा! छह माह का तप करने के पश्चात, उनका हृदय पवित्रतम हो करके, मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि के द्वार पर पंहुचे, उन्होंने कहा-प्रभु! अब मैं अप्रहो उन्होंने कहा आओ, याग करेंगें। तो बेटा! उन्होंने याग किया। तो वही मानो प्रतिक्रियाएं पुनः प्रारम्भ हुई, उनका हृदय पवित्र और मानो महानता में उन्हें प्राप्त हुआ। तो मुनिवरों! देखो, उसी में उन्होंने कहा तुम पवित्र बन गएं हो और अब तुम मानो देखो, जीवन मुक्त बन सकते हो। आगे तप करो, और याग करते चले जाओ। मेरे प्यारे! देखो, सूक्ष्म अग्नि प्रधान औषधियों का पान करते-करते मुनिवरों! देखो, वह और छन्दों में रमण करते हुए, वेदमन्त्रों की आभा में बेटा! देखो, जीवन मुक्त की प्राप्ति हो गए। विचार आता है कि जीवन मुक्त किसे कहते हैं? मैंनें तुम्हें यह कहा था कि जो आत्मा इतनी संकल्प शक्ति का आवावेश हो जाएं, क्या मानो जो स्थूल संकल्प में आ जाएं, और सूक्ष्म संकल्प मात्र में आ जाएं, और जो मानो कारण संकल्प मात्र में आ जाएं, तीनों संकल्पों को जानने वाला हो, परमात्मा को एक-एक कण-कण में, अपने को एक-एक में जीव की आभा में दृष्टिपात करता हुआ, मुनिवरों! देखो, उसकी समावेशता एक आभा में प्रवेश हो जाती है। तो मानो वह जीवन मुक्त कहलाते हैं। जो तीनों शरीरों के संकल्प, तीनों शरीरो के परमाणु को, एक दूसरे में समावेश कर देते हैं, वह जीवन मुक्त कहलाते हैं। और वही सृष्टि के मूल का कारण बनते हैं। वही मानो मानवीयता की आभा में रत्त हो जाते हैं।

तो मेरे प्यारे! आज मैं कोई विशेष तुम्हें चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ विचार यह देने के लिए आया हूँ क्या हम अपनें में मानो देखो, उस महान प्रभु की उस सृष्टि के ऊपर हम अपना अनुसन्धान करें। जिसको हमारे यहाँ सबसे प्रथम सृष्टि का नाम स्थावर कहलाता है। मानो स्थावर सृष्टि के ऊपर कल हम मानो देखो, अपना विचार व्यक्त करेंगें, आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, आज मैं तुम्हें एक मानो अपने विचारों की भूमिका बनाने के लिए महानन्द जी तुम यह भूमिका बनवाते रहते हो, मैंने उस भूमिका को बनाया है। परन्तु जिस भूमिका को राजा रावण के राष्ट्र में सुधन्वा ने इसी स्थावर सृष्टि के ऊपर मानो देखो, अनुसन्धान किया था, अश्विनी कुमारों ने महात्मा दधीचि ने सोमकृतिका ने मानो देखो, स्थावर सृष्टि के ऊपर आगे हम विचार करेंगें। परन्तु देखो, इसी के ऊपर महात्मा च्यवन ऋषि महाराज ने बहुत ही विचार और बहुत ही अन्वेषण किया था तो मुनिवरों! देखो, यह आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उसकी सृष्टि के ऊपर विचार करते चले जाएं, और मानव जीवन की प्रतिभा के ऊपर मानो देखो, अपने विचार अपनी धाराएं, अपना ओजस्तम मानो देखो, इस आभा में लाते चले जाएं।

तो मेरे प्यारे! आज का यह विचार है आज मैंने तुम्हे बहुत सूक्ष्म बिखरे हुए विचारों को एकत्रित करने का प्रयास किया है। मानो देखो, इसके आगे की शेष चर्चाएं तो तुम्हें कल ही प्रगट करेंगें, प्रश्न उत्तर के रूपों में परन्तु आज का विचार हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की आभा में रत्त रहते हुए, उस देव की महिमा को मानो देखो, उसको गरिमा को अपने में धारण करते हुए, बेटा! सागर से पार हो जाएं यह आज का बेटा! हमारा वाक्

है, आज मैंने सूक्ष्म सी तुम्हें चर्चाएं की हैं, आज का विचार समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

७ वनस्पति से दीर्घ आयु १६ १२ १९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव की, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महान और पवित्रतम माने गएं हैं क्योंकि यह जो संसार प्रायः हमें दृष्टिपात आ रहा है यह उस परमपिता परमात्मा की महती है अथवा उसकी महानता है जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही, भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ाने उड़ता रहा है। आज मैं उस उड़ान को तो नही जा रहा हूँ, परन्तु विचार यह कि आज हम, उस महामना देव की महिमा का, हम सदैव गुणगान गाते रहे अथवा उसकी महती का अपने में प्रायः हम दर्शन करते रहे, क्योंकि उस परमपिता परमात्मा की अनुपम अथवा महानता का जो दिग्दर्शन होता रहा है, वह प्रायः परम्परागतों से ही, महान और पवित्रतम माना गया है। बहुत पुतरातन काल हुआ, जब बेटा! ऋषि-मुनि मानो एक स्थावर सृष्टि के ऊपर, प्रायः अपने अन्वेषण करते रहते थे, और ऐसा कोई काल नही हुआ, जिस काल में उसके ऊपर अन्वेषण न हुआ हो, परन्तु उसके ऊपर विचार-विनिमय प्रायः परम्परागतों से होता रहा है, मैंने बहुत पुरातन काल में, बहुत पुरातन काल हुआ, पुत्रों! जब मानो स्थावर सृष्टि के लिए मानव ने अपना उद्योग प्रारम्भ किया था।

आओ, आज मैं तुम्हें ऋषि-मुनियों के, एक क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, मेरे पुत्रों! ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा की कुछ चर्चाएं, प्रायः हमारे वैदिक साहित्य में आती रही हैं। ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने एक समय, अपने में यह विचार-विनिमय किया था, कि हम अपने में अग्न्याध्यान करें, अग्निहोत्रीय हम करते चले जाएं। तो मेरे पुत्रों! यह विचारा कि अग्निहोत्र हम कैसे करें? कौन समिधा हैं? जिसके ऊपर हम अग्न्याध्यान और कौन-सा वह साकल्य है? जिस साकल्य के द्वारा, हम प्रायः हूत करना चाहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने जब यह विचारा कि हमें याग करना है और याग तो मानव के स्वास्थय की एक विवेचना है, याग तो एक वायु मण्डल का शोधन है, याग तो मानो साकल्य के द्वारा होता है, और जिस साकल्य को अग्नि जिस साकल्य को अग्नि भेदन कर देती है वही साकल्य इस आभा वृत्तियों में और वायु मण्डल में छाया मान हो जाता है। मानो वही तो शोधन करता और शोधन का अभिप्रायः यह कि मानव के सूक्ष्म तरंगों के द्वारा वह मानव प्रायः तरंगित होता रहता है, और वह जो तरंगें है, वही मानो अशुद्ध तरंगों का विनाश करती रहती हैं। और शुद्धिकरण मानो उसकी प्रतिभा में रत्त होता रहता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने, जब यह विचारा, कि मुझे अग्न्याध्यान करना है, और मुझे कुछ मानो साकल्य को एकत्रित करना है, और साकल्य कहते हैं बेटा! स्थावर सृष्टि के, मानो देखो, उन पदार्थों को जो स्थावर सृष्टि में सुगन्धियुक्त कहलाते हैं। मानो वह अपनी आभा में भी प्रायः शोधन करते रहते हैं, और उसमें विचित्र एक आभा का हमें दर्शन होता रहता है। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने बेटा! कुछ साकल्य को एकत्रित किया और वह उन्होंने विचारा कि मैं यह जितना याग हम करते है। साकल्य के द्वारा, वह साकल्य हमें आयु वर्धक है, प्राण वर्धक है, मानो स्वास्थय की एक कुंजी कहलाती है तो मेरे प्यारे! देखो, इस निहितता से, वह अपने में प्रायः याग की प्रतिभा में, प्रायः रत्त होते रहते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, क्या उन्होंने अग्नेय जो वृक्ष मानो समिधा वह साम्ब्रहा वाचन्नं ब्रीहि व्रतां जिसमें अग्नेय तत्त्व की प्रधानता का दिग्दर्शन होता है, तो उसको वह अपने में एकत्रित करना, अथवा उसे चुनना, और अथवा उसे एकत्रित चुनौती दे करके मुनिवरों! उसको स्वाहाः और अग्नि में प्रदान कर देना है मेरे प्यारे! देखो, इसी के द्वारा, हमारे यहाँ एक विद्या का चलन था उस विद्या का चलन है परम्परागतों से जिसमें मानो एक संकल्प शक्ति का संचार होता है। मेरे पुत्रों! देखो, एक हरित नामक एक औषध

होती है, तो उस हरित औषध का समन्वय, सूर्य की कुछ किरणों से होता है, तो मानो देखो, जैसे वह किरणें आईं, और हरित औषध ने उस किरण को अपने में सिंचन प्रारम्भ किया, तो मानो उसमें से एक आभामयी में सुगन्धि का जन्म हो जाता है और वह सुगन्धि मानो ऐसी प्रियतम होती है क्या मानो सूर्य की किरणें उस सुगन्धि का भेदन कर देती है। तो मेरे प्यारे! वह जो हरित नामक औषध है उसमें यह गुण माना गया है कि जैसे मानव स्वाहा उच्चारण करता है मानो वह अपने में जैसे स्वाहा कहा और स्वाहा उच्चारण करते ही मेरे पुत्रों! देखो, वह सूर्य की आभा में रत्त हो जाती है। मानो सूर्य की आभा में रत्त हो करके, मुनिवरों! देखो, वायुमण्डल में, अपने में शोधन करना, प्रारम्भ कर देती है। और जब मानव उसे कहीं से पान कर लेता है, तो मेरे पुत्रों! देखो, उसमें सूर्य की, आभा और सूर्य की विश्वान गत्वेतं मानो देखो, उसमें प्रतिभा होती है। जिसके ऊपर मानव अपने मस्तिष्क की आभा में स्थिर हो जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा, एक समय बेटा! कुछ औषध विज्ञान को ले करके, वह मुनिवरों! देखो, भ्रमण करते हुए, केचवत ऋषि के द्वार पर पंहुचे और केचवत ऋषि महाराज ने, अथर्वा का बहुत स्वागत किया, केचवत ऋषि बोले कि कहो ऋषिवर! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं इसीलिए आया हूँ क्या मैं अपने मस्तिष्क को एक केन्द्रित करना चाहता हूँ मानो मुझे विवेक की आभा प्राप्त हो जाए। तो मुनिवरों! देखो, वह उन्होंने कहा बहुत प्रियतम! मेरे प्यारे! केचवत ऋषि महाराज ने जिसके ऊपर वह अन्वेषण और अनुसन्धान कर रहे थें, एक मानो रेणकेतु स्वाति एक बुटी होती है। मानो उस श्वेति जो बुटी है, उसका समन्वय हरितकेतु बुटी से होता है मानो उन दोनों औषधियों को दोनों बुटियों का मानो देखो, वह सम्मिश्रण किया जाता है, और सम्मिश्रण करके, इसमें कौतुक नामक, एक औषध होती है, जिसका इसमें मिश्रण करके, मानो देखो, इसको पान किया जाता है। इसको मानो जब पूर्वा विमुख हो करके, और सूर्य की किरणों के साथ मानो इस औषध को पान किया जाता है तो मानव के मस्तिष्क में जो मानो देखो, जो सुषुप्ति अवस्था वाली जो नस नाड़िया है उनका सबमे जागरूकता आ जाती है, और जब वह जागरूकता आ जाती है, तो मानो वह उसको विवेक, ज्ञान और स्थिरता मानो देखो, हृदय उसका स्थिरता में परिणत हो जाता है। और लघु मस्तिष्क अपने में मानो हरित में प्रवेश करता हुआ, अपने में सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब हम इस औषध के द्वारा, अपने जीवन को ऊर्ज्वा में प्रायः वाचक औषधियों में सम्मिश्रण करते हैं, जो तो बेटा! हमारे जीवन की प्रतिभा कुछ और ही होती है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो कुचवा औषध है ये कहाँ प्राप्त होती है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- बेटा! यह प्रायः मानो पर्वतीय क्षेत्रों में प्राप्त होती है, और इसके मानो इसका यह गुण अब्रहे है, क्या जब देखो, यह अन्धकार छा जाता है, सूर्य नही रहता, रात्रि का गमन हो जाता है, तो मानो देखो, इसमें स्वतः एक अनुपम एक प्रकाश आ जाता है और वह प्रकाश वाली औषध कहलाती है मानो देखो, इसका समन्वय वृत्तियों से रहता है।

पूज्य महानन्द जीः- तो क्या भगवन! यह जो वृत्ति औषध है, इसका क्या तात्पर्य है?

पूज्यपाद गुरुदेवः- क्या वृत्तियों का अभिप्रायः ये है क्या जहाँ मानो सुगन्धि औषधियों को वृत्ति औषधि कहा जाता है, और वृत्तिक औषध सुगन्ध वह अपने में धारण करती हुई, और उन किरणों से प्रातःकाल जब उनका समन्वय होता है, तो उन किरणों का मिश्रण होता है, जिन किरणों में देखो, वह लुंग होता है और देखो, स्वर्ण रत्नों की धाराएं, जिन किरणों में होती है उन किरणों में उन औषधियों का समन्वय होता है। मानो देखो, उसको पान करने वाले करते हैं मानो देखो, आधुनिक काल का तो मुझे प्रतीत नही, उन औषधियों को क्या कहा जाता

है? मानो देखो, यह तो मैं नही उच्चारण कर सकूंगा, जो पुरातन काल में, जब अनुसन्धान, अन्वेषण करते रहे हैं, तो उस काल में मानो उन औषधियों के विस्तृत तो मानो हमें प्राप्त होता रहा है, बेटा! मानो देखो, यह हमें सुषुप्ति वाला ज्ञान तुम पुनः से क्यों जागरूक करा रहे हो? मेरे आँगन में नही आ रहा है तुम आत्मा और परमात्मा की चर्चा में क्यों नही ले जा रहे हो जहाँ मानव के आत्म तत्त्व की आभा हमें प्राप्त होती है।

कायाकल्प की प्रतिभा

पूज्य महानन्द जीः- भगवन! मैं इसीलिए करा रहा हूँ क्योंकि बहुत समय हुआ, आपके मुखारबिन्दु से ये जो औषध विज्ञान है इसके ऊपर अन्वेषण करना और इसको क्रिया रूप देना वास्तव में ये तो मैं भी जानता हूँ कि वर्तमान काल में इन औषधियों के नामोकरण भी मानो प्रायः नही प्राप्त होते निघण्टु इत्यादियों में भी इसके नामोकरण की कहीं-कहीं रूप रेखाए प्राप्त होती हैं, उनमें एक और ऐसा मुझे सिद्ध होता है कि जैसे पुरातन काल की औषधियों के नामोकरण में आधुनिक नामोकरण में ऐसी कोई विशेषता अन्तर्द्वन्द्वता नही हैं परन्तु उसमें केवल यह है क्या कुछ काल ऐसा समाप्त हो गया है जिस काल में बहुत से देखो, परिश्रम देखो, बहुत-सी विद्याएं बहुत-सी पोथियां अग्नि के मुखारबिन्दु में परिणत हो गई हैं और वह अग्नि में जाने से उस ज्ञान को हम पुनः से यदि उद्बुद्ध करना गुरुदेव चाहते हैं तो इतने रूपों में हो नही पाता क्योकि वह एक बड़ी विशेषता का मैं आपको चर्चाएं देता चला जा रहा हूँ। हे पूज्यपाद! आधुनिक काल का जो औषध विज्ञान है वह मानो कुछ चाहता है आधुनिक काल के विज्ञान में मानो देखो, कुछ औषधियों का वर्णन आया है, जैसे पीपलिका है जैसे मानो देखो, यह स्वाति है लुवेंगकेतु हैं उस लुवेंगकेतु को आधुनिक काल में कहीं कुछ रूपो में पुकारा जाता है कहीं भाषा अन्तर्द्वन्द्व हो जाता है, तो भाषा अन्तर्द्वन्द्व होने से, उन औषधियों का पूर्ण रूपेण नामोकरण नही हो पाता। तो इसीलिए पूज्यपाद! मैं आपसे यह प्रश्न कर रहा था, क्या इन औषधियों का मानो किन-किन रूपों में इनकी कृतिका आती है। मैंने आपने पुरातन काल में मानो यह एक मानव के जीवन के परिवर्तन के सम्बन्ध में चर्चाएं की थी, और यह कहा कि मानो इन औषधियों से पान करने से देखो, उसके जीवन की प्रतिभा, उसका एक कायाकल्प, एक काया दूसरे रूपों में परिणत हो जाता है। तो क्या भगवन! यह सम्भव मानो देखो, यह असम्भव तो है, परन्तु देखो, उसका विश्लेषण पूर्वा हम पान करना चाहते हैं क्योंकि जो सूक्ष्म शरीर और स्थूल शरीर के दोनों में वह गमन कराता रहता है।

पूज्यपाद गुरुदेवः- नही पुत्र! ऐसा नही है परन्तु देखो, मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन कराते हुए कहा था कि यह जो यह औषध विज्ञान है यह कायाकल्प की जो प्रतिभा मैंने पुरातन काल में तुम्हें वर्णन कराई कायाकल्प का अभिप्रायः यह है क्या शरीर यदि जीर्ण हो जाएं, शरीर में जीर्णता आ जाएं जीवन शक्ति का ह्रास हो जाएं, तो औषधियों से देखो, उसको जीवन शक्ति प्रदान की जाती है। तो कुछ मानो इस प्रकार के गायन भी होते हैं, जिन गायन के गाने से, जीवन शक्ति प्रदान की जाती है। देखो, ऐसा गान भी होता हैं परन्तु देखो, वह गायन स्वर और ग्रणियों से मानो देखो, परिपक्व रहता है। तो इसीलिए मैं इस विचार में बेटा! तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ, विचार केवल इतना ही है, कि हम अपने में मानो देखो, इस स्वाहाः वृत्तियां को अपनाना प्रारम्भ करें, जिससे हमारा जीवन कायाकल्प के संग वाची में प्रवेश हो जाएं। जैसे हमारे यहाँ पुरातन काल में वट वृक्ष जैसे तुमने एक समय कहा था कि बटिका, पिपली का, त्रिटिका, त्रिजटा, शंखहाविनी मानो देखो, इन पंचम औषधियों को ले करके, और उसको खरल किया जाता है। खरल करते-करते मानो देखो, चन्द्रमा की कान्ति में जब उसका खरल किया जाता है। तो खरल करते-करते मानो वह शुष्क हो जाए है और शुष्क हो करके उसको सूर्य की किरणों में तपाया जाएं, और तपाने से ही मानो जब वह एक माह तक तपता रहे, तपने के पश्चात पुनः उसका खरल किया जाएं,

उनमें मानो देखो, शंख वाचिका औषध के औषध के रस में पुनः उसको खरल किया जाएं, खरल करते-करते देखो, पुनः फिर सूर्य की अग्नि में तपाया जाएं और चन्द्रमा की कान्ति में उसे पुनः खरल किया जाएं मानो उसमें सात पुट लगती रहती है। सात पुट के पश्चात मानो उसकी बूटिका बनाई जाती है। जब गुटिका बना करके, उसे मानो देखो, सूर्य की किरण के साथ, उसे पान किया जाता है, पान भी मानो देखो, श्वेतम नामक एक औषध होती है उसका रस लिया जाता है, और शंख जटिका होती है, उसका रस लिया जाता है, और मानो देखो, एक क्रील का रस ले करके, अम्बिका के रस को ले करके, मानो देखो, उन तीनों रसो में उनको पान किया जाता है। तो पान करने से और देखो, जलं ब्रहे मानो देखो, उसमें बटिका, शंकिका, चेतरेणि, अंचकानिनी, मानो देखो, उन औषधियों के समूह वाचू को ले करके इसका सबका रस पान किया जाता है। तो मानो पान करते-करते लगभग, एक वर्ष द्वितीय वर्ष में मानो उसके कायाकल्प की प्रतिभा बन जाती है उसका कायाकल्प हो जाता है।

तो मानो देखो, यह औषधियां प्रायः पर्वतीय क्षेत्रो में, हमें प्राप्त होती रहती हैं इसका आधुनिक नामोकरण भी मानो मैं इतना रूप में नही जाना चाहता हूँ विचार-विनिमय क्या मानो देखो, यह सब आधुनिक नाम कहे जाते हैं, इसका पूज्य! जैसे तुमने ब्रहे, मेरे पुत्र! तुमने वर्णन किया कि निघण्टु प्रहा वाचिका कहीं मानो देखो, ऋषिस्यकेतु एक रचितकेतु हुए हैं जो मानो देखो, महात्मा दधीचि के गुरु थे और जो अश्विनी कुमारों के गुरु थे, उनकी कहीं पौथी प्रायः निघण्ट कहीं प्राप्त हो जाएं, तो प्रायः उसमें इन औषधियों का वर्णन आता रहता है उन वरणीय औषधियों का पान करने से हमारे जीवन की प्रतिभ एक महानता में परिणत हो जाती है। सूर्य की किरण चन्द्रमा की जो कान्ति है यह दोनों एक दूसरे में पूरक कहलाती हैं, जिस औषधियों को ले करके हम मानो अपने में आयु दीर्घ बनाते रहते हैं, आयु की दीर्घता मानो जहाँ इन औषधियों से होती है, वहाँ संकल्प शक्ति से भी होती है जहाँ संकल्प शक्ति से होती है। वहाँ गान रूपों में भी हुआ करती है, इसीलिए हमारा गान विचित्र होना चाहिए।

तो आज मैं विशेषता में क्या मानो तुम्हें यह वर्णन करने लिए आया हूँ क्या प्रत्येक मानव प्रायः इसके ऊपर परम्परागतों से अन्वेषण अथवा विचार-विनिमय करता रहा है वहाँ ब्रहे अस्वातं जैसे मानो पुरातन अभी-अभी वर्णन कराया था, क्या सृष्टि के प्रारम्भ में मुनिवरों! देखो, इन औषध विज्ञान, स्थावर सृष्टि का अथवा जन्म हुआ है, इसमें प्राण सत्ता का विशेष संचार होता रहता है वही प्राण सत्ता हमारे जीवन का मूलक बन करके रहती है, वही प्राण सत्ता मानो एक दूसरे में पिरोई जाती है, वही प्राण सत्ता, सर्वत्र ब्रह्माण्ड में लोक-लोकान्तरों में पिरोई जाती है, जिसके ऊपर हमारा जीवन, मानो निर्भय रहता है संसार में प्रत्येक प्राणी मानो देखो, परम्परागतों से ही, अनुसन्धान करे, क्या हम अपने में औषध विज्ञान में, विशेषज्ञ बनना चाहते है। तो वह अपने मस्तिष्क की सबसे प्रथम ग्रन्थियों को स्पष्टीकरण को जब तक नही लाएगा जब तक मानो देखो, उसकी प्रतिभा एक महानता में प्रतिष्ठित नही हो पाती। आज का मानव परन्तु देखो, पुरातन काल का मानव जैसा बेटा! तुमने वर्णन कराया मैं उस वर्णन में तो जाना नही चाहता हूँ, परन्तु विचार यह केवल देने के लिए कि हमारे यहाँ सृष्टि के प्रारम्भ में, बेटा! देखो, सबसे प्रथम स्थावर सृष्टि का जन्म हुआ? स्थावर सृष्टि का क्यों जन्म हुआ मानो उस सृष्टि के व्यवधान से, मानो देखो, इन औषधियों की सुगन्धि मानो स्थावर सृष्टि की मानो देखो, सुगन्ध, इसमें प्राण सत्ता एक ओफल ब्रीहि वाचक हो करके एक प्राणी मात्र में वह छूने वाली है। जैसा हमारे यहाँ पुरातन काल में, मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन कराया क्या, इसमें प्राण संचार है, प्राण सत्ता है, प्राण की प्रणव व्रतियां कहलाती हैं। परन्तु देखो, और जितनी यह सृष्टि है जैसे जंगम है, जैसे अण्डज है, और स्वेदज है इसको मानो वृत्तियाँ कहलाती हैं इनमें सबमें आत्म तत्त्व ज्ञान और प्रयत्न की प्रतिभाषिता मुझे दृष्टिपात आती है। परन्तु जहाँ तक यह वर्णन हमे प्राप्त होता है, क्या इसमे स्थावर हो आत्म तत्त्व प्राप्त होता है, इसमें प्रणव शक्ति प्राप्त होती रहती है। तो वही जो प्राण सत्ता है,

वही मानो देखो, इसको आभा में युक्त करती रहती है, नियुक्तता में लाती रहती है, ज्ञान और प्रयत्न की इसमें सूक्ष्मता होती है। इसीलिए जैसे वह सूक्ष्मतम होती है, तो मानो देखो, उसी में, एक आभा में हमें यह ब्रह्माण्ड, हमें अश्वेत्तों में दृष्टिपात आने लगता है। तो पुत्रों! देखो, जैसा यह मानो देखो, शम्भु वाचा श्वातं ब्रीहि व्रतो वेद की आख्यिका यह कहती है, क्या मानो देखो, **यह जो स्थावर सृष्टि है, इस स्थावर सृष्टि के ऊपर ही, मानो सर्वत्र प्राण सत्ता की मानो देखो, प्रतिभा निहित रहती है। और इसीलिए इसमें प्राण सत्ता है,** मनस्तव सत्ता सूक्ष्म मानी गई है। मनस्तव सत्ता मानो देखो, इसमें एक प्रकृति रूपों में परिणत रहती है, क्योंकि जहाँ यह प्राण सत्ता का उद्घोष होता है वहाँ मन सत्ता का भी उद्घोष होता रहता है और उनका दोनो का जैसे ही उद्घोष हुआ मानो देखो, वहाँ ज्ञान और प्रयत्न की सूक्ष्मता क्या न होने का हमें प्रमाण प्राप्त होता है। इसीलिए उसमें देखो, जीवन शक्ति प्रदान है परन्तु देखो, वह ज्ञान और चेतना वाली सत्ता प्रदान नही हैं दृष्टिपात नही आ रही है, तो इसीलिए हमारा तात्पर्य हमारा मन्तव्य केवल यह क्या मानो उस प्राण सत्ता को हमें प्राप्त करना है जिस प्राण सत्ता के द्वारा मानव मुनिवरों! देखो, परम्परागतों से नाना प्रकार के यागों का चयन करता रहा है, और उन यागों के चयन करने से ही यज्ञमान की प्रतिभा का जन्म होता है। जैसे यज्ञमान अपने में स्वाहा उच्चारण करता है, मानो स्वाहा कहने से उसके आन्तरिक जगत की अग्नि का भी प्रादुर्भाव हो जाता है, अग्नियां भी प्रचण्ड होती रहती हैं परन्तु यदि और भी शुद्ध विचारों से, स्वाहा उच्चारण किया जाता है, तो उससे आन्तरिक जगत की अग्नि मानो देखो, और रूपों में परिणत होती रहती है।

मुझे स्मरण आता रहता है जब महात्मा चमन ऋषि महाराज मानो देखो, अपना कायाकल्प करने लगे, तो कायाकल्पों में उन्होंने देखो, नाना प्रकार की औषधियों को ले करके जैसे उनका पान करते थे, तो मानो प्रातःकालीन वह याग करते थे, तो याग में उन्होनें एक शंखवृचिक एक औषध होती है, शंख वृचिक औषध को ले करके और चित्रा औषध ले करके और मानो उसमें शंख वाचिका को ले करके और मुहु एक वंग होती है वंग भृंग को ले करके मानो देखो, वह इसका साकल्य बनाया जाता है और गो घृत में इसके साकल्य को मानो मन्थन किया जाता है और मन्थन करके मानो देखो, जब वह अग्नि में अग्नि प्रदीप्त करते हुए, उसमें केवल समिधाओं का भेदन होता है, समिधा क्रील की होनी चाहिए समिधा मानो शमी वाची की होनी चाहिएं यह पीपल की मानो देखो, आन्तरिक देखो, जितना भाग पृथ्वी में रहता है पृथ्वी वाली भाग वाली समिधा होनी चाहिएं, उन समिधाओं के द्वारा जो अग्न्याध्यान करता है, और स्वाहाः उच्चारण करता है उस औषधि के द्वारा अपने मानो देखो, अपनी वाणी को उसमें ओत-प्रोत करा देता है तो बेटा! कुछ ऐसा अनुभव किया गया है, क्या मानो देखो, **जितना भी स्वाहा, वो वेद के एक ओकांग के शब्द को ले करके जब वह स्वाहा कहता है, जैसे हमारे यहाँ वेद का मन्त्र आया वंश्वमम् ब्रहे वाचप्रहा वन्धनं वश्वतप्रहो वासम भवा नित्यं स्वाहा मानो देखो, यह वाचक् स्वाहा कहने से क्योंकि वेद के अन्तिम जो शब्द है उसको लुप्त किया जाता है। तो उसको लुप्त करके उसको मानो रसना के ऊपर उसको विश्राम कराया जाता है। और विश्राम करा करके उसे स्वाहा उच्चारण किया जाता है तो मानो देखो, उससे उनके जो आन्तरिक जगत में जो शब्दों में तरंगें उत्पन्न होती हैं जैसे परमाणुवाद बाह्य से आन्तरिक जगत में आता है और आन्तरिक जगत का बाह्य जगत में जाता है तो मानो देखो, उस स्वाहा कहने से वह क्या शब्द अग्नि की धाराओं पर मानो देखो, अन्तरिक्ष द्यौ लोक में प्रवेश होता है तो वह जो शब्द है तो वह जो शब्द है वह शब्द उस प्राणी की आयु की कामना करता है आयु उससे दीर्घ होने लगती है जब आयु दीर्घ होने लगती है तो वह मौन रहता है** तो ऐसा मुझे स्मरण है तो मुनिवरों! देखो, जिस प्रकार बारह वर्ष का जब अनुष्ठान किया जाता है, और बाहर वर्ष के अनुष्ठान से मेरे पुत्रों! देखो, उसकी लगभग बारह वर्ष का अनुष्ठान करने से मुनिवरों! देखो, उसकी सौ वर्ष की आयु दीर्घ बन

जाती है। ऐसा महात्मा चमन ऋषि के जीवन में हमें प्राप्त होता है। मानो इससे पूर्व काल में भी मैंने बेटा! तुम्हें यह चर्चाएं की हैं, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव मानो इस प्रकार के अनुष्ठान करते रहते है अनुष्ठानों का अभिप्रायः यह है क्या मानो आयु को दीर्घ बनाना है आयु का वाचक बनाना है मानो देखो, जैसे सम्भवा वेत्तो अस्वति लोकां हिरयरायं रथा मानो देखो, इसी प्रकार उन्होंने देखो, सच्चतं महात्मा चमन ऋषि के द्वारा अश्विनी कुमार मुनिवरों! देखो, वह वह एक अनुष्ठान उन्होंने और किया था जिस अनुष्ठान में शंख कांचि एक औषध होती है जिस शंख कांचन औषध जो समुद्रों से प्रायः गर्भ में प्राप्त होती है कुछ वाचिका मानो देखो, जो पर्वतों के क्षेत्रों में प्राप्त होती है उसका नाम है वासु सम्भूति दवा सम्भोति औषधान कहलाती है, परन्तु देखो, इन औषधियों को ले करके, जिस समय वह एक दोनों का मिश्रण करके मानो देखो, हम मधु के सौन्दर्य के, सूर्य की किरणों के साथ उसे पान करते हैं तो हमारी आयु में मानो देखो, एक दीर्घता का एक मानो देखो, हमारे मस्तिष्क में, जितनी संकुचित विचारधारा है, उसमें व्यापकवाद आ जाता है। धर्मज्ञ आ जाता है, और वही धर्मज्ञ मेरे पुत्रों! देखो, मानव के जीवन की प्रतिभा बन करके रहती है।

मुझे स्मरण आता रहता है ये औषध राजा महाराज भी मानो देखो, राजा भी पान करते रहते थे, इन औषधियों के पान करने से राजाओं का मस्तिष्क मानो संतुलित रहता है, उसमें स्वार्थवाद नही आता, वह अपनी क्रियाओं में सदैव रत्त रहने वाला है। तो इस प्रकार देखो, हमारा जो जीवन है पुत्रों! यह बड़ा विशेष और इसके देखो, हम औषध विज्ञान के ऊपर तो यह तो विशाल एक वन है मैं तो वनों में जाना नही चाहता हूँ केवल एक संक्षिप्त परिचय देना है, और वह परिचय क्या है? और वह परिचय केवल इतना है, कि हम अपने जीवन में, एक प्रभु की आभा में रत्त रहते हुए और स्वाहाः उच्चारण करते चले जाएं, क्योंकि प्रत्येक वेद के मन्त्र में, एक शब्द, जब लुप्त हो करके, और वह वाणी मानो स्वरों में जब वह आभा में वह वायुमण्डल में परिणत हो जाता है तो मानो उससे मानव का मस्तिष्क का विकास होता है, उस मस्तिष्क की आभा रत्त होने लगती है, और जो देखो, और जो इस संसार में आभायुक्त होता हुआ अपने प्रतिभाषित अपनियों में देखो, रत्त रहता हुआ मानो प्रभु का चिन्तन करता है और वह विचारता है कि-प्रभु! में सृष्टि के प्रारम्भ में मानो देखो, स्थावर सृष्टि को जन्म दिया है और यह स्थावर सृष्टि का सम्बन्ध धातु पिपाद से रहता है मानो साकल्य से रहता है, आस्वाति से रहता है मानो देखो, वही तो मानव इस स्थावर सृष्टि के गर्भ में निहित हो करके प्रवेश करके मानो देखो, अग्रणीय अपनी आभा को नियुक्त करता रहता है तो आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ क्या पुत्रों! देखो, हमारे यहाँ लेपन भी किए जाते हैं मानो देखो, जैसे मुझे स्मरण है बाल्यकाल में माता की यह इच्छा होती है, कि हमें अपने बालक को ब्रह्म निष्ठ बनाना चाहती हूँ, और ब्रह्मचर्य व्रत ब्रह्मवर्चोसि बनाना चाहती हूँ, तो मानो देखो, एक औषध होती है, मृची नामक एक औषध होती है एक शंख हुलि होती है, एक मानो देखो, कृतिभा होती है, और एक कृतिभा एक समुद्रों के गर्भ में होती है, जिसका नाम वांचकेतु कहलाता है। मानो देखो, चारों औषधियों को हम खरल करके जब बालक के मस्तिष्क का मानो देखो, हम उसका मर्दन करते हैं तो मर्दन करने से उस बालक की जो नस नाड़ियाँ हैं, उनका स्पष्टीकरण हो जाता है और ब्रह्मज्ञान जैसे ही दिया तो वह बालक की स्मरण शक्ति एक मानो प्रतिभा में अश्वेत हो जाती है और वह विचित्र बन जाती है परन्तु वह ब्रह्मवेत्ता की पुकारने लगता है, स्थावर वाचों में प्रवेश करके, मानो देखो, ब्रह्म का उसे भान होने लगता है।

तो आज मैं पुत्रों! बहुत दुरी और गम्भीर वार्त्ताओं में जाना नही चाहता हूँ, यह बहुत गम्भीर वार्त्ता हैं जिसके ऊपर बेटा! अनुसन्धान और अन्वेषण की आवश्यकता होती है इस अन्वेषण में मानव अपने जीवन को कहाँ ले जाना चाहता है, मानो देखो, आयुर्वेदाचार्य बेटा! आयुर्वेद आयु के वेद में प्रवेश कर जाते हैं तो मानो देखो, नाना

प्रकार की आभा नियुक्त रहती है जब इस प्रकार का विवेक मानव को हो जाता है, औषधियों के सम्बन्ध में, तो अपने गुणों का वर्णन करने के लिए औषध उन्हें स्वप्नवत में मानो देखो, उनके गुणों की प्रतिभा का भान कराती रहती है, और वह औषध अपने गुणों का वर्णन कराती रहती है। मुझे स्मरण आता रहता है जब मानो देखो, सोमकेतु मुनि महाराज जब इसका एक समय इसका अनुसन्धान अन्वेषण कर रहे थे, वाचकस्ति एक औषध होती है मानो उसका जब अन्वेषण करने लगे तो एक समय रात्रि समय यह उन्होंने स्वप्नवत में कहा वाचकेतु औषधा सम्भूति में प्रवेश करती हुई बोली कि मैं मानव के मानो देखो, जीर्णता से युवातव में प्रदान कर देती हूँ, और देखो, यदि उसका भा वाचो मानो अग्नि में तपा करके पुट लगा करके यह पान कराया जाएं, तो ऐसे औषध विज्ञान अपने गुणों का प्रायः वर्णन करती रहती थी तो परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड में, बेटा! अनन्तमयी यह जगत है, यह अनन्तमयी जगत है इसीलिए परमपिता परमात्मा का उद्घोष, हमारे जीवन में होना चाहिए, क्योंकि परमपिता परमात्मा इस संसार के एक-एक कण-कण में व्याप्त है औषध विज्ञान में भी व्यापक हो रहे हैं मानो उसके व्यापकता में एक अभ्युदय होता रहता है जिसको मानव अपने में पान करता रहता है और उस ब्रह्माण्ड को मापता रहता है मानो ब्रह्माण्ड को मापते-मापते मानो देखो, औषध मुनिवरों! देखो, कहीं ऐसा हमें भान होता है, कि लोक-लोकान्तरों में भी प्रायः औषध विज्ञान का चलन रहा है, क्योंकि मंगल मण्डल में इस प्रकार की औषधियों का भी प्रायः चलन रहा है, और बुद्ध में भी रहा है, लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा में जाना नही चाहता हूँ विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ क्या मुनिवरों! देखो, यह औषध विज्ञान हमारे यहाँ एक बड़ा विशेष विशिष्टतव माना गया है, आज मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें देना नही चाहता हूँ विचार केवल यह है कि हमारे यहाँ कुछ औषधियों का एक एकोकीकरण माना गया है मानो देखो, जिन औषधियों का एकोकीकरण हमारे औषध विज्ञान में सूर्य की किरणों की पुटों में उनकी पुटिता होती रहती है। और उनका पठन-पाठन भी विचित्र होता रहता है।

तो इसीलिए देखो, उस विज्ञान को हमें अपनाना है यह विज्ञान है यह सार्थक विज्ञान इसको पान करते हुए हम मानो देखो, हूत करते हैं उसकी सुगन्ध तरंगें बन करके, वायु मण्डल में प्रवेश कर जाती है। और वायुमण्डल से वही तरंगें मानो देखो, सूर्य चन्द्रमा की कान्ति के साथ वही मानो देखो, तरंगें परमाणु बन करके, पुनः देखो, एकोकीकरण का घोष करते रहते हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चाएं तुम्हें देने नही आया हूँ विचार यह देने के लिए क्या ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने भी इसके ऊपर मुनिवरों! देखो, अंगिरस मुनि महाराज ने भी इसके ऊपर बहुत-सा अन्वेषण किया है। आज मैं विशेष चर्चाओं में तुम्हें ले जाना नही चाहता हूँ संक्षिप्त तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ, बहुत सा औषध है जिसके ऊपर बहुत-सा विचार किया जाता है करना मानव का कर्तव्य है क्योंकि आयु को दीर्घ बनाना है आयु के वेद में प्रवेश करना है, प्रकाश में हमें रत्त रहना हैं, बेटा! देखो, हम तो प्रायः पुरातन काल में, पूज्यपाद गुरुओं के द्वारा, इस प्रकार का अन्वेषण करते रहते थे, आयु की दीर्घता में परिणत होती रहती थी, परन्तु यो सिद्ध आत्मायें इस प्रकार की औषधियों का पान करके अपने में यौगिक प्रतिक्रियाओं में उनका भास होता रहा हैं।

विचार केवल यह कि आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें देने नही आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय केवल इतना ही है कि हम बहुत से औषध विज्ञान मे रत्त हो जाएं मेरे प्यारे! मैंने देखो, तुम्हारे प्रश्नों की प्रतिभा मानो वर्णित की है और उसको वृचिका में औषधियों के रूप में इसका एक प्रादुवृत किया है मानो देखो, चमन ऋषि के जीवन में मैंने बहुत-सी चर्चाएं तुम्हें वर्णन की अश्विनी कुमारों के जीवन में इस प्रकार का भान हुआ एक समय मानो देखो, एक श्वेत्ता श्वेतर नामक एक राजा हुए हैं जो मनु वंश में हुए, परन्तु श्वेत्ता श्वेतर राजा के हृदय में, मानो देखो, एक विचित्र अस्वात छा गया उसके जीवन में एक अस्वात नामक

एक रूग्ण होता है। तो विचारा कि अब क्या करना चाहिए। (पुस्तक से) एक समय उनकी पत्नी विधेशु बोली कि हे प्रभु! मैं आपको ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहती हूँ उन्होंने ऐसा कौन-सा ऋषि है आओ, मेरे प्यो मैं विशेष चर्चायें तुम्हें देने नही आया हूँ विचार यह देने के लिए कि ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने भी अंगिरस मुनि महाराज ने भी इसके ऊपर बहुत-सा अन्वेषण किया है संक्षिप्त में तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ बेटा! देखो, बहुत-सा औषध है जिसके ऊपर विचार करना मानव का कर्तव्य है क्योंकि आयु को दीर्घ बनाना है, आयु के वेद में प्रवेश करना है प्रकाश में हमें रत्त रहना है हम तो प्रायः पुरातन काल में पूज्यपाद गुरुओं के द्वार इस प्रकार का अन्वेषण करते रहते थे, आयु दीर्घता में परिणत होती रहती थी परन्तु योग सिद्ध आत्मायें इस प्रकार की औषधियों का पान करके अपने में यौगिक प्रतिक्रियाओं में उनका भास होता रहा है विचार केवल यह है कि आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें देने नही आया हूँ। मैं कोई व्याख्याता नही हूँ परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय केवल अतना है कि हम बहुत से औषध विज्ञान में रत्त हो जाएं। यह है आज का वाक् अब वेदों का पठन पाठन होगा।

८ वनस्पति से दीर्घ आयु १७ १२ १९८४

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव, परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन होता रहता है। अथवा उसकी महिमा उसका ज्ञान और उसका विज्ञान मानो वह सर्वत्रता में ओत-प्रोत है। तो इसीलिए हम, उस परमपिता परमात्मा, जो हमारा वरणीय माना गया है, जो हमारा ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है, उस परमपिता परमात्मा की महानता में सदैव, प्रत्येक मानव को रमण करना चाहिए। क्योंकि जितना भी यज्ञोमयी वाचंब्रह्म क्योंकि यह संसार सर्वत्र यज्ञोमयी कहलाता है प्रत्येक मानव जब याग में परिणत होता है तो उसकी मनोनीतता और मानवीयता उसमें निहित होती हुई, प्रायः दृष्टिपात आती रहती है। जिसके ऊपर, प्रत्येक मानव, अपने में मानवीयता का प्रसारण करता रहता है, क्योंकि हमारे यहाँ, किसी भी वेदमन्त्र के ऊपर, हम अन्वेषण करते हैं, अथवा अनुसन्धान करते हैं, तो एक-एक वेदमन्त्र में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड की कल्पनाएं, अथवा कल्पनाओं में यह ब्रह्माण्ड निहित हो रहा है, उसी में हमें यह दृष्टिपात आ रहा है। मानो जैसा हमारे यहाँ, इससे पूर्व कालों में, हम प्रायः स्थावर सृष्टि की, चर्चाएं करते रहते हैं और हमारा क्योंकि स्थावर सृष्टि पर ही हमारा जीवन निर्भर रहता है। मानो हमारे जो जीवन की धाराएं हैं उनका समन्वय स्थावर सृष्टि से प्रायः विशेष होता है क्योंकि स्थावर सृष्टि ही मानव को नाना प्रकार का जन जीवन प्रदान करती रहती है जिसके ऊपर हमारा मानवीयतव आभातव निहित रहता है क्योंकि हम परम्परागतों से ही अपने जीवन में एक प्रायः महानता का दर्शन करते रहते हैं। और वह मानवीय दर्शन, बाह्य और आन्तरिक जगत दोनों को एक सूत्र में लाता चला जाता है। कोई भी मानव संसार में साधक बनना चाहता है, साधना में रत्त रहना चाहता है, अनुष्ठान करना चाहता है तो मानो वह जो अनुष्ठान है, वह एक मानवीयता का एक कृही और बाह्य और आन्तरिक दोनों का समन्वय करना होगा। जब तब हम दोनों का समन्वय नही कर पाते, तो हमारे जीवन में, एक महानता का प्रायः दर्शन नही होता। हम अपने में अपने को ही अपने को दृष्टिपात करने वाले बनें, क्योंकि मैंने बहुत पुरातन काल हुआ, बेटा! स्थावर सृष्टि के सम्बन्ध में, प्राण को महत्वतता दी है क्या यह प्राण ही मानो देखो, इस सृष्टि में निहित रहता है, जिसके ऊपर यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड लोक-लोकान्तर क्या मानो एक प्राण सूत्र में सूत्रित हो रहा है। जिस सूत्र के ऊपर, प्रत्येक मानव परम्परागतों से अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करता रहा है। आज मैं कोई विशेष विवेचना में अपने को नही ले जाना नही चाहता हूँ, परन्तु देखो, यज्ञं भवि यही तो एक याग कहलाता है आन्तरिक याग और बाह्य याग, दोनों का जब एक तारतम्य हो जाता है, दोनों का एक सूत्र बन जाता है, तो मानव के जीवन की प्रतिभा महान बन जाती है आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने कुछ विचार व्यक्त करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः- ओ३म् तनुमां भद्रा मनीषीणो ग्रत्यं मनु वाचाः सर्दं सर्दाहं हृदयश्चमा हृदयानि गच्छं मां रथाः मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव परमपिता परमात्मा के विश्वसनीय ज्ञान और विज्ञान की विवेचना करते चले जा रहे थे, मानो जिसके ऊपर, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उसके ऊपर अधिपथ्य रहा है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई कालों से, आयुर्वेद के ऊपर अपनी कुछ विवेचनाएं, कुछ टिप्पणियाँ दे रहे थे, परन्तु आयुर्वेद इतना विशाल एक वन है, कि मानव अपने ऊपर अनुसन्धान करता-करता, मानो सर्वत्र जीवन समाप्त हो जाता है। उसके उपरान्त मंगलमब्रहे उसके पश्चात भी मानो उसमें अधूरापन रह जाता है। परन्तु हमारे यहाँ यह सिद्धान्त मौलिक माना गया है कि जितना मानव जानता है, और जितना मानव

को जानना चाहिए, वह न करने से बहुत प्रियतम। परन्तु आयुर्वेद यह कहता है, सबसे प्रथम क्या मानव को अपनी आचार संहिता बना लेनी चाहिए, जो इसके ऊपर अनुसन्धान करना चाहता है, अथवा उसको क्रिया में लाना चाहता है तो उसको अपनी आचार संहिता के ऊपर विशेषकर बल देना होगा। जब तक उसकी आचार संहिता पवित्र नही बनेगी, तक तब वह आयुर्वेद के, गम्भीरतम रहस्यों को नही जान सकता। क्योंकि आयुर्वेद में तीनों गुणाधानम आते हैं, उसमें आध्यात्मिकवाद की भी पुट लगा करती है, जैसा पूज्यपाद गुरुदेव ने कल प्रगट किया था। परन्तु उसमें आध्यात्मिकवाद और उसमें विचार और तरंगों का विज्ञानवाद होता है, और उसके पश्चात उसे क्रियावाद में लाना, एक मानो देखो, उसकी प्रतिभा ओजस्तव बन जाती है। तो ये तीन प्रकार का आयुर्वेद में गुणाधानम होना चाहिए, जब मानव अपनी आचार संहिता को आध्यात्मिकवादी और भौतिक और विज्ञानता में तीनों में रमण करके मानो इसको क्रिया में लाता है, तो जो भी मानव अपनी इच्छा शक्ति प्रगट करता है तो वह उसे प्राप्त हो जाती है। मानो यदि कोई मानव यह अपने में अनुभव करे कि उसकी आचार संहिता तो पवित्र हो नही और मैं सुधन्वा बन जाऊं तो असम्भव है। मानो देखो, आचार संहिता बहुत अनिवार्य है।

आहार की पवित्रता

आचार संहिता के ऊपर मुझे एक वाक् स्मरण आ गया है हमारे यहाँ जब आयुर्वेद का अध्ययन प्रारम्भ करता है तो ब्रह्मचारी को अथवा उसकी आचार संहिता को पुनः उद्बुद्ध किया जाता है। मानो देखो, मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है, क्या कुछ समय में भी मानो इसका विद्यार्थी रहा हूँ। मानो आयुर्वेद का कुछ समय तक विद्यार्थी रहा, पूज्यपाद गुरुदेव ने तो आयुर्वेद के ऊपर, बारह-बारह वर्षों के मानो कई अनुष्ठान किए परन्तु मैं तो केवल विद्यार्थी रहा हूँ। आचार संहिता मानो प्रथम मानो उसका गुण माना गया है। पूज्यपाद गुरुदेव से हमें यह प्राप्त हुआ मानो देखो, कोरू कोरूकाम यह शब्द आता रहता है। क्या कोई भी मानव आयुर्वेद का विद्वान बनना चाहता है, तो सबसे प्रथम उसका आहार मानो सूक्ष्म होना चाहिए। आहार में किसी की हिंसा नही होनी चाहिए, परन्तु आहार में किसी के रक्त की प्रति की पुट नही होनी चाहिए, मानो उसका आहार, आचार और ऋतु के अनुसार होना चाहिए। कौन-सी ऋतु और कौन-सी स्थलियों में, मानो वह रह करके इस आहार को प्रारम्भ करे उस आचार संहिता का उसे प्रायः अनुभव होता है, और जो मानो अपने आहार को पवित्र नही बना सकता, मानो देखो, मैं दूरी चला गया हूँ। मैं यह उच्चारण कर रहा था कि हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि मेरे जो हृदय की जो तरंगें रहती हैं, वह यज्ञमान के साथ रहती है। परन्तु यज्ञमान का आयु दीर्घ होना चाहिए, दीर्घ होने से पूर्व उसकी मानो आचार संहिता में, कुछ भेदन मुझे प्रतीत होता रहता है। उस आचार संहिता को पवित्र, परमपिता परमात्मा ऐसी अनुभूति दे, जिससे उनके आचार संहिता, उनकी पवित्र बन जाएं। मानो देखो, वह आयुर्वेद के, पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में, मानो देखो, मैं एक प्रेरणा बाह्य जगत से ले करके, जब पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ प्रेरणा देता रहता हूँ। तो मेरे पूज्यपाद मानो मेरी उन प्रेरणाओं को उन तरंगों को अपने से दूरी नही करते क्योंकि देखो, जितना भी ज्ञान हृदय स्थली में पूज्यपाद गुरुदेव के हृदय में निहित रहता है, मानो वह अद्वितीय कहलाता है। उसकी मैंने अब तक कोई सीमा में, उसको मैं नही ला सका हूँ, वह न सीमा में आने लायक, क्योंकि-प्रभु का विज्ञान महान है, और जितने तपे हुए प्राणियों के द्वारा वह ज्ञान विज्ञान होता है उतनी महानता की उपलब्धि होती है तो इसीलिए आज मैं आयुर्वेद के ऊपर तो केवल इतना ही कि आधुनिक काल का जो मानव है वह आयुर्वेद के ऊपर मानो वह आयु में, वह सूक्ष्म बनता चला जा रहा है, उसके मूल मे यह है, क्या जो औषध विज्ञान है, जितना भी मानव आहार से ले करके, जल के पय के पय में चले जाओ तो परन्तु यह सब औषध विज्ञान कहा जाता है जो भी मानव यागों के द्वारा सुगन्धि और अग्न्यध्यान करता हुआ यह सर्वत्र एक औषध

विज्ञान कहलाता है। इसी प्रकार जितना भी खरल विज्ञान है, जो पय से समन्वय है, परन्तु जितना भी मानो अग्नि में दाह करके, जितना भी वृहित किया जाता है वह भी सब औषध विज्ञान कहलाता है। तो यह जो औषध विज्ञान है, इसकी सबसे प्रथम आचार संहिता के सम्बन्ध में, मैंने कुछ चर्चाएं की हैं, परन्तु बहुत पुरातन काल हुआ, जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने, नाना प्रकार की औषधियों को एकत्रित करते हुए, और उन्होंने मानो देखो, कुछ अनुष्ठान किए, और कुछ आसनों का निर्माण किया, मानो देखो, कुछ लेपन का भी निर्माण किया। तो इसी प्रकार कई कालों से यह विचार आ रहा है, क्या आधुनिक काल के ऊपर, औषध के ऊपर मैं अपना विचार दूं।

परन्तु आधुनिक काल में जितना भी आयुर्वेद विज्ञान है वह आयुर्वेद विज्ञान केवल मानो देखो, अग्नि और वह दूसरे प्राणियों के मानो रक्त के ऊपर निर्भर हो गया है रक्त के ऊपर निर्भर है मानो देखो, उसकी कृतिका, मानव के अंग से, जो भी प्राणी के अंग से जो भी, मानो मल, मूत्र मल की कृतिकाओं का जन्म होता है, उसको ही मानो देखो, खरल करके उसी को अग्नि में भस्म और तपा करके मानो वही क्रिया में आ करके वही आयुर्वेद बन रहा है। आधुनिक काल में, जब मैं विचारता हूँ मानो देखो, जब वनस्पति विज्ञान को राष्ट्र तिलांजलि दे देता है, तो उस राजा के राष्ट्र में, अनुसन्धान की प्रतिक्रिया समाप्त हो जाती है। तो आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है, उसने मानो अपनी आचार संहिता, यह बना ली है, क्या मानो देखो, सूक्ष्म सूक्ष्म प्राणियों को ले करके अग्नि में तपा करके उनका रस बना करके मानो देखो, उसको रूग्णों में क्रिया में लाया जाता है। तो वह प्रायः मानो वह अधूरापन है उसका, इसी प्रकार और मानव ने उस प्राणियों को अपना आहार बना लिया है जब आहार बनाया है उसी आहार का परिणाम यह होता है क्या उनके शरीरों में ऐसे रूग्ण उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसा मानो उनके रूग्णों में वृत्तियाँ बन जाती है। क्या वह मानो देखो, असमर्थ हो जाते हैं। परिणाम यह होता है क्या मानो देखो, वह राष्ट्र इसके ऊपर विचार नही कर रहा है। परिणाम यह होता है मानो देखो, कुछ विद्याएं ऐसी है जो लुप्त हो गई हैं। कुछ आयुर्वेद में जो आते है, कुछ विद्याएं लुप्त हो गई हैं हमारे यहाँ मल्हार गान गाया जाता है, हमारे यहाँ दीपावली मानो एक गान गाया जाता है वह गान दोनो ही लुप्त से हो गएं हैं। उसके मूल में मानो आयुर्वेद था।

आयुर्वेद हमारे यहाँ मुझे स्मरण आता रहता है मैं त्रेता के काल के मानो देखो, महाभारत काल के पश्चात कुछ बुद्धिमानो की चर्चा करूंगा, हमारी जहाँ यह जहाँ आकाशवाणी जा रही है वहाँ से मानो देखो, पूर्व दिशा में एक विद्यालय था, उस विद्यालय में मानो वह विद्यालय खण्डहरों के रूप में, अब दृष्टिपात आ रहा है, क्योंकि हमारा यह जो राष्ट्रवाद है यह राष्ट्रवाद मानो देखो, यह भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों से, मानो देखो, अपने में भयभीत रहता है, वह भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों में, मानो एक रूढ़ियों से घिरा हुआ राष्ट्र है, जब रूढ़ियों से घिरा हुआ है, शक्ति शाली न होने से मानो वह अपनी क्रियात्मक रचना नही कर सकता। आत्मा के आत्म बल को भी मानो वह साकार रूप नही बना सकता। मानो देखो, वह सम्प्रदायी रूढ़िवाद में इतना वह संकीर्ण बन गया है क्या वह अपनी क्रियाओं में मैं उच्चारण कर रहा था, वहाँ मानो मोहम्मद के मानने वालों ने, उस विश्वविद्यालय में मानो देखो, बहुत-सी पुस्तकों का अखण्ड भण्डार था, जिसमें महात्मा चरक और महात्मा निधयकेतु मानो देखो, इनकी बहुत-सी निघण्टु और औषधियों के ऊपर बहुत-सा उनका मानो क्रियात्मक अनुभूति थी योग वह सर्वत्र भोजपत्रों की मानो आभा में निहित रहता था। और उसको मानो अग्नि के मुख में प्रदान कर दिया, वह अग्नि के मुख में चला गया कुछ मानो देखो, महावीर के मानने वालों ने, देखो, बहुत से आयुर्वेद और देखो, कुछ साहित्यिक विचार और कुछ हमारा इतिहास मानो देखो, जो आधुनिक काल का इतिहास है वह और पूर्व काल के इतिहास को, जब हम सन्तुलित करते हैं।

जीवन मुक्त प्राणियों से मानव रचना

तो विचार आता है कि आधुनिक काल का जो इतिहास है, वह मानो देखो, वह ऐसा है, जैसे मानो देखो,

एक मानव ने, वैसे ही मिथ्या कल्पना कर ली हो जैसे मानव का विकास, केवल वानर से स्वीकार किया है। अति मानव देखो, वह मानो देखो, वह वानर से क्या मानो देखो, अति मानव देखो, वह किस-किस रूप में आया है ऐसा स्वीकार कर लिया। आधुनिक काल के जगत को आधुनिक काल का शिक्षक कहता है, कि यह विकासवाद है मैं विकासवाद की जब चर्चा करने लगता हूँ, तो मानो देखो, एक-एक प्राणी परम्परागतों से ही, विकासवादी बना हुआ है। जैसे गुलर का वृक्ष है, परन्तु देखो, उसके फल में, वह ऐसे चैतन्य प्राणी कहाँ से चले जाते हैं जो स्वतः ही अपना विकास कर रहे हैं क्या वह विकासवाद आधुनिक काल का है, या पुरातन काल का है। देखो, इस प्रकार विकासवाद की जब चर्चा लाता हूँ, परन्तु देखो, जिस जाति से जिसका विकास होता है, उस जाति का मानो देखो, अभाव हो जाता है ।उस जाति का जब अभाव नही हुआ, वह भी ज्यों की त्यों है, मानव का उससे विकास हो गया, तो यह कैसे स्वीकार किया जाएं? यह विचार में नही आ रहा है। परन्तु मैं इस साहित्य को और इतिहास की जब मानो पृष्ठों पर अपनी लेखनियाँ, अपना विचार मैं व्यक्त करने लगता हूँ, तो इससे मुझे यह विचार अशोभनीय परमपिता परमात्मा की सृष्टि को कलंकित करना है। मानो देखो, एक कलंकित करके ही अभ्योदय करना है, जब हमारा इतिहास, हमारा जो अग्नि के मुखारबिन्दु में चला गया, वह इतिहास यह कहता है कि मानव का जो विकास है वह मानो देखो, जीवन मुक्त प्राणियों से विकास होता है। और जब जीवन मुक्त प्राणियों से विकास होता है तो मानो देखो, जीवन मुक्त जैसे वह थे वह उसी प्रकार अभ्योदय की आभा में मानो देखो, वह अभ्युस्त बन गएं अभ्युस्त बन करके मानो देखो, साकार रूपों में परिणत हो गया है। तो विचार-विनिमय क्या विचार केवल यह है कि ऐसी परम्परा चली आ रही है, ये वेदमन्त्रों की जो एक सौगात है, वेदमन्त्रों की जो मानो एक तर्पण करने की प्रवृत्ति है, यह आज से अरबों खरबों वर्ष हो गएं है जब मानो देखो, यह अरबों वर्ष हो गएं अरबों वर्षों से भी मानो देखो, ऋषि ही जब से यह क्रियाकलाप चला आ रहा है, कर्मकाण्ड की पद्धतियाँ चली आ रही है, आधुनिक काल का प्राणी उस पद्धतियों को भी भिन्न-भिन्न रूपों में परिणत करता रहा है परन्तु देखो, कुछ आधुनिक काल के प्राणी ऐसे रहे है महाभारत काल के पश्चात, जिन्होंने निर्वाचन पद्धति को मानो देखो, विद्यालय में न स्वीकार करके, मन माना उनका निर्वाचन होना, मानो देखो, इस पद्धति को नष्ट करके, मानव समाज का ह्रास हो गया समाज में घृणा की पद्धति आ गई, घृणा का आवेश आ करके मानव घृणित हो गया। इसी प्रकार मैं विशेषता अपने पूज्यपाद गुरु को देना नही चाहता हूँ, मैं यह उच्चारण कर रहा था, उस विश्वविद्यालय में मानो देखो, इतिहास था, मोहम्मद के मानने वालों की मानो देखो, घृष्टता से, वह अग्नि के मुख में प्रवेश हो गया। अग्नि के मुख में इतिहास चला गया, अग्नि के मुख में दर्शन, जो मनोनीत होने वाला आयुर्वेद निघण्टु औषध विज्ञान था, वह भी मानो देखो, इसमें चला गया। परन्तु देखो, आयुर्वेद अपने में जीवित रहा आयुर्वेद अपने में अब भी वर्तमान मैं भी जीवित है, जब मैं वर्तमान की चर्चा करता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को, यह चर्चा कराता रहता हूँ, परन्तु वह जीवित केवल मानव की आभाओं में है परन्तु देखो, राष्ट्रीयता में वह जीवित नही रहा। क्योंकि राष्ट्रवाद इतना मानो देखो, धृष्ट बन गया है। मानो देखो, अपने से द्वितीय राष्ट्र की मानो देखो, भाषा में भूषा में अपना विश्वसनीय बन गया है, उसमें विश्वास कर रहा है, और देखो, वही उसके पतन का कारण वही मानो देखो, शिक्षा प्रणाली अशुद्ध बन गई है। शिक्षा प्रणाली में, जब अशुद्धवाद आ गया है, आचार संहिता नही रही है, उस आचार संहिता के न रहने पर मानव दूसरों के रक्तों का पान करके, और अपने में कहता है कि मैं महान बन जाऊं, यह कैसे बन सकता है? कदापि नही बनेगा। परन्तु जो मानव यह कहता है, कि मैं दूसरे के रक्त और उसको पान करके, मैं विचित्र योगी बन जाऊं। तो यह असम्भव है।

परन्तु देखो, यह हमारे यहाँ जब अनुष्ठान की चर्चाएं गुरु शिष्य का समन्वय आता है तो मानो देखो, चरणों

में ओत-प्रोत हो करके, तो वह शिक्षा प्रणाली पवित्रता में आई, परन्तु उसी से ज्ञान और विवेक की धारा का जन्म हुआ। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कई समय से, आयुर्वेद की चर्चाएं कर रहे हैं, आयुर्वेद किसे कहते हैं? जो आयु का वेद कहलाता है, आयु का प्रकाश कहलाता है, जिस औषध विज्ञान को हम क्रिया में ला करके, प्रकाश में आ जाएं, तो वही आयु का वेद माना गया है। इसीलिए आयु के वेद को, हमें प्रकाश को जानना है। मानो परमपिता परमात्मा से, मानो मैंने कई काल में तुम्हें चर्चाएं की हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो उस प्रतिक्रियाओं को प्रायः जानते रहते हैं, हमारे यहाँ औषध विज्ञान, औषध विज्ञान के अवान्तर भेदन माने गएं हैं। परन्तु देखो, एक प्राण चिकित्सा, हमारे यहाँ बहुत ऊर्ध्वा में रही हैं। क्या प्राणों से, शरीर का शोधन करना है। प्राण से ही मन को एकाग्रचित बनाना है। वही प्राणों का शोधन करना, मानो देखो, प्राणों से शरीर को अभ्योदय बनाना, प्रकाश में लाना परन्तु वह भी एक हमारे यहाँ विद्या मानी गई परन्तु देखो, वह भी जहाँ नाना प्रकार की औषधियों के खरल और औषधियों के निर्माण की चर्चाएं, पूज्यपाद गुरुदेव कराते रहते हैं उस मानो देखो, उन औषधियों में बड़ी विशेषता है।

जैसे हमारे यहाँ एक औषध का नाम निरगादिनी कहा जाता है और निरगादिनी के साथ में ही, एक सोमलता की उत्पति होती है, परन्तु सोमलता का समन्वय, सोम से रहता है। सोम हमारे यहाँ चन्द्रमा को कहते हैं, सोम हमारे यहाँ ज्ञान और विज्ञान को भी कहते हैं, परन्तु देखो, यहाँ सोम नाम एक औषध होती है, जो निरगादिनी के साथ में उसकी उपलब्धि होती है। जैसे निरगादिनी हमारे यहाँ पर्वतीय में क्षेत्रों में प्राप्त होती है। मानो देखो, जिसका लक्षण यह है, जो पूज्यपाद गुरुदेव भी प्रगट कराते रहते हैं, क्या रात्रि जब छा जाती है, अन्धकार छा जाता है, तो मानो देखो, उससे सूर्य की किरण जैसी आभा, उस निरगादिनी औषधि के अन्तर्गत मानो दृष्टिपात होती है उस औषध में मानो देखो, सूर्य की पुट विशेष होती है, उस औषध को मानो देखो, जब मूल नक्षत्र में उस औषध को पुष्य नक्षत्र में मानो देखो, उस औषध को हम अपने में ग्रहण करते हैं, और ग्रहण करके मानो देखो, शुक्ल पक्ष में उस औषध को हम खरल करते हैं, और उस औषध का जब हम खरल करते-करते, उसमें एक ऋणी का एक औषध होती है उसका भी हम खरल करते हैं तो मानो खरल करते-करते इतनी आभा में हम परिणत हो जाते हैं क्या उसको मानो देखो, तीन शुक्ल पक्ष आ जाएं तीन शुक्ल पक्षों में मानो देखो, उसका खरल करें और देखो, तीन ही जो कृष्ण पक्ष है, जों दिवस है सूर्य की किरणों में शुष्क बनाएं जाएं, तो वह औषध ऐसी हो जाती है क्या मानो देखो, जिस माता के पुत्र को माता जो पुत्रवती होना चाहती है और पुत्र नही हो रहा है, परन्तु देखो, वह उसके मानो देखो, अंग प्रत्यंगों में भी अभ्योदय उपज शक्ति नही हैं, मानो देखो, उसको पन्द्रह दिवस आहार कराने से उसमें मानो उपज शक्ति की एक प्रतिभा का जन्म हो जाता है। यह मुझे बहुत पुरातन काल हुआ मानो देखो, ऋषि-मुनियों की सभा में यह विचार आता रहा है।

तो जीवन शक्ति का जहाँ तक समन्वय होता है वह बड़ा विचित्र है। परन्तु यह औषध एक निघण्टु था, जो ऋषि वाच और वशिष्ठ के आश्रम में रहता था परन्तु देखो, यह भोजपत्रों पत्रों पर चला आया रहा मानो विज्ञान के आन्द्रों में रहा, परन्तु देखो, यह विश्वविद्यालयों में भी रहा है परन्तु यह महाभारत काल के पश्चात अग्नि के मुख में चला गया। मैं दुर्भाग्य इसका स्वीकार करता हूँ। मानो दुर्भाग्य कहता हूँ, इस समाज का दुर्भाग्य कहता हूँ, आधुनिक काल के राष्ट्रवेत्ता जितने भी है वास्तव में तो आधुनिक काल का कोई राष्ट्र नही हैं मैं इस राष्ट्र को राष्ट्र स्वीकार नही करता हूँ। जहाँ एक दूसरे के विचारों को, क्योंकि यह जो मूर्ख प्रणाली है, यह जो मूर्ख का चुनौती है, निर्वाचन है, यह राष्ट्र नही हुआ करता है। राष्ट्र को चुनने वाले चुनौती देने वाले बुद्धिमान होते हैं। ऋषि होते हैं, बुद्धिजीवी प्राणी होते हैं। परन्तु देखो, यह यही एक आभा में युक्तियां रहती है वह जब चुनौती देते हैं तो वह पुरोहित जो कहते हैं, राजा वही करता है। मानो देखो, उसकी आचार संहिता भी मानो ऋषि-मुनियों के यहाँ

निर्माणित होती है।

भगवान राम की आचार संहिता

क्या मानो देखो, भगवान राम का निर्वाचन हुआ था, किसी काल में तो राष्ट्रीयता में मानो देखो, उनकी बुद्धि मानव ने कौन, महर्षि वशिष्ठ और महर्षि विश्वामित्र और कागभुषुण्ड जी महर्षि लोमश और देखो, महर्षि अत्रि और महर्षि भारद्वाज मानो इन्होंने आ करके उनकी आचार संहिता का निर्माण किया। मानो आचार संहिता क्या? राजा जब मानो देखो, तारामण्डलों की छाया रहती हो, उस काल में अपने आसन को त्याग देता है, जब राजा उसको त्याग देता है तो त्याग करके वह प्रातःकालीन मानो देखो, अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके और वह मानो देखो, अग्नि के तत्त्वों का अपने में भेदन करता है वह याग में परिणत होता है, उसके पश्चात वह ब्रह्मयागी बन करके क्योंकि राजा को ब्रह्मज्ञान नही होगा, तो राष्ट्र को कदापि भी ऊँचा नही बना सकता। उसकी आचार, प्रजा की आचार संहिता को भी नही बना सकता। परन्तु देखो, वह भगवान राम, प्रातःकालीन मानो सूर्य उदय से पूर्व, अपनी क्रियाओं से, मानो प्रभु का चिन्तन, भेदन करना, वह सर्वत्र त्याग देते थे और उसके पश्चात वह अपने वाहनों में विद्यमान हो करके, अपने राष्ट्र में भ्रमण करना, कि गृह गृह की आचार संहिता क्या है? गृह गृह में राजा का कर्तव्य मानो देखो, वे राष्ट्र पवित्र बनते हैं, उन राजाओं के यहाँ, एक महानता की प्रतिभा आती है, तो आधुनिक काल के राष्ट्रवेत्ता, कि आचार संहिता क्या है? मानो देखो, आचार संहिता ये क्या प्रातःकालीन मानो देखो, अपने आसन को त्याग दिया, आसन को त्याग करके जिस काल में, सूर्य मानो देखो, भव्य उदय हो जाता है, जब सूर्यों की आभा ऊर्ध्वा में गति कर जाती है, तो उसको त्यागा परन्तु मानो देखो, कुछ स्नान किया, कुछ नही किया परन्तु देखो, वस्त्रों को धारण कर लिया, और अपने मानो देखो, वही होने न होने की मानो दूसरों में घृणा की चर्चा करना। चर्चा करके उसका जो आहार है, इतने में मानो देखो, कुछ प्राणियों को मानो देखो, आहार में उनका वृत बना करके रस बना करके उनको लाया जाता है, कुछ मानो फलों के रसों को लाया जाता है तो आधुनिक काल की जो आचार संहिता है, वह आचार संहिता क्या करती है? उनके लिए मानो देखो, नाना सेवक होने चाहिए, उनके प्राणों की रक्षा करने के लिए, अरे, राजा! जब तू दूसरे के प्राणों को हनन करके, अपना आहार बना लेगा, तो मानो तेरी रक्षा कौन कर सकता है संसार में? तेरी रक्षा कोई नही कर सकता, मानो देखो, जो प्रभु सबका रक्षक है जब उसका विश्वास नही रहा आचार संहिता पवित्र नही रही, तो मानो देखो, तेरी कौन ऐसा प्राणी है जो तेरी रक्षा कर सकता है।

तो इस प्रकार मानो देखो, राष्ट्रीय तो आचार संहिता है वह जैसा निर्वाचन है, जैसी पद्धति है, उसी प्रकार का मानो देखो, उसकी आचार संहिता बनी हुई है, वह आचार संहिता जैसी है परन्तु जैसा उसका क्रियाकलाप है वैसा ही प्रजा में मानो देखो, उसका वह मान और अपमान हो रहा है, परिणाम क्या है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से, यह परिचय करा रहा हूँ, कि आयु के वेद को नही जानना, यह राष्ट्र के लिए बड़ी हीनता का, एक प्रसंग आता रहता है। आज मानो देखो, आज जो इस प्रकार की विचारधारा कहता है, जैसा मैं उच्चारण कर रहा हूँ, उसको कहते हैं यह तो राष्ट्र का द्रोही है। मानो देखो, इसको राष्ट्र द्रोही की संज्ञा प्रदान कर देते हैं। क्यों कर देते हैं? इसीलिए कर देते हैं क्योंकि यहाँ देखो, गुड़म्बावाद है गुड़म्बावाद के साथ में यहाँ रूढ़िवाद है और रूढ़िवाद के साथ में इतना राष्ट्र घिर गया है इतना मानो देखो, उसकी आचार संहिता में परिणत हो गया है, क्या वह अपने सतोगुणी वाक्यों को न तो उच्चारण कर सकता है, और न उसे क्रिया में ला सकता है, परन्तु देखो, उससे इतना भयभीत हो गया है। तो परिणाम क्या, मैने सबसे प्रथम क्या जब आचार संहिता पवित्र होगी तो राष्ट्र का आचार संहिता राजा को निर्माण करना चाहिए और राजा की जब आचार संहिता मानो देखो, राष्ट्र की पवित्र रहेगी तो यह जो रूढ़िवाद

है जो एक दूसरे के प्राणां का मानो रक्त को पान करने की प्रवृत्ति बन गई है घृणा प्रवृत्ति बनती चली जा रही है परन्तु यह घृणा पद्धति नही रहेगी। घृणा पद्धति जब ही तब है जब तक देखो, राष्ट्र की आचार संहिता नही हैं तब तक देखो, जब तक देखो, रूढ़िवाद जब तक रहता है जब तक मानो देखो, राष्ट्र और देखो, अपने प्राणों की रक्षा के लिए मानो सेवकों की आवश्यकता होती है।

जहाँ देखो, राम का राज मुझे स्मरण आता है मुझे भगवान कृष्ण और भी नाना राजाओं की चर्चाएं आती हैं जो प्रत्येक गृह में जा करके अपनी आचार संहिता को दृष्टिपात करना, परन्तु राष्ट्र को ऊँचा बनाने की प्रेरणा देना, और एकोकी यागों की चर्चाएं सुगन्धि की चर्चाएं होना, परन्तु देखो, उनका गम्भीर दार्शनिक अध्ययन परमपिता परमात्मा का विश्वास होना चाहिए। आज तो परमात्मा का जो विश्वास है, उसकी सीमा भी राष्ट्र तक मानी गई है। क्या राष्ट्र तक हमारी ईश्वरीय विश्वास है, उसके पश्चात परमात्मा को त्याग देते हैं। यदि मानो किसी के शुभ कर्मों में किसी की इच्छा पूर्ण नही हुई, तो मानो शुभ कर्म को ही त्याग देते हैं। मानो देखो, क्रियाकलाप, इस समाज का बन गया महाभारत काल में, नाना प्रकार की रूढ़ियों में क्या इसको मैं कहाँ तक उच्चारण करूंगा। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मानो आयुर्वेद की चर्चाओं की प्रेरणा देता रहता हूँ। आज आयुर्वेद की आवश्यकता मानो यहीं तक रहती है, क्या उसको मानो लेखनीबद्ध कर लें, क्रिया में ले आएं और परन्तु देखो, दूसरों का माँस, दूसरों का मानो देखो, शौच अस्वति मूत्र सबका एक खरल बना करके मानो देखो, वह उसकी गुटिका बन जाती है, वह आहार कर रहा है, प्राणी मानो देखो, नाना प्राणियों के रक्त देखो, वह पात्रों में भरण कर लेते हैं, उसका मानो देखो, दूसरों को पान कराते हैं, जिस मछली की रक्षा भगवान मनु ने मानो देखो, अपने आश्रम में की थी जब राष्ट्र का निर्माण किया आज मानव देखो, मछली के रक्तों को, देखो, औषध में ला करके उसको पान कराया जाता है। मानो देखो, उस मछली के मानो देखो, उसको सूर्य की किरणों में तपा करके, अन्न के लाभों में उसको पान कराया जाता है। परन्तु देखो, मैं कहाँ तक यह चर्चा करूं, जहाँ तक देखो, समुद्रों के, जब मानो देखो, दोषों को हनन करने वाली, यह मछली ही तो कहलाती है। परन्तु देखो, यह मछली ही रूद्रों में आभा में परिणत हो जाती है, जिसको मानव पान करने लिए तत्पर हो गया है। तो विचारा जाता है, तो मानो देखो, इसीलिए जल प्लावन आ रहे हैं, समय-समय पर जल प्लावन आते हैं जो प्राणी उनको पान करते हैं, वही मानो देखो, समुद्रों में, जब बड़वानल नाम की अग्नि, पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया जब वह बड़वानल नाम की अग्नि प्रदीप्त हुई, तो प्रदीप्त होते ही जल प्लावन आ गया। उस जल प्लावन से अति वृष्टि, अनावृष्टि का रूप धारण हो गया। वह जल प्लावन से देखो, प्रत्येक प्राणी नष्ट हो गया। देखो, यहाँ राष्ट्र में समय-समय पर क्या देखो, नित्य वर्षों में मानो जल प्लावन की प्रतिभा क्यों आती है? उसका कारण है क्या समुद्र के प्राणियों को मानव ने अपने में भक्षण कर लिया, अपनी आचार संहिता बना ली है, परन्तु देखो, उसको वह पौष्टिक आहार कहते हैं, उसको मानो देखो, उसको कहते हैं कि हमें पौष्टिक आहार प्राप्त हो रहा है, अरे, मानव जब तू घृत, दुग्ध गो घृति आभा को त्याग करके जब तू उसका पान करेगा तो मानो देखो, तेरे शरीर में नाना प्रकार का देखो, जल प्लावन आ जाएगा और वह जल प्लावन तेरी मृत्यु का एक समय कारण बनेगा। अज्ञान आता चला जाएगा। क्योंकि मृत्यु अज्ञान .... विज्ञान का सदुपयोग न रह करके, दुरूपयोग हो करके, प्राणी उसके मुख में परिणत हो रहा है। कोई समय आ रहा है, जो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने प्रगट कराया था, वह समय-समय पर आता रहता है रक्तोंमयी क्रान्ति का संचार आ रहा है, रूढ़िवादों में, कहीं रक्तभरी क्रान्तियां आ रही है, क्योंकि उसमें राष्ट्रीयता की सूक्ष्मता रहती है, राष्ट्रीयता में मानो देखो, ब्रह्म ज्ञान न रहने से मानो देखो, उसकी आभा अभ्युत उदय है मानो देखो, किसी की पत्नी स्वीकार नही करती, पत्नी कहती है कि हम तो मांस का भक्षण अवश्य करेंगें, परन्तु देखो, बाल्य उसी प्रकार के बन जाते हैं। तो परिणाम

कि गृह कि मानो देखो, जो गृह बनने चाहते थे, वह गृह शमसान भूमि के स्थलियां बन गई हैं। तो जब मैं इन विचारों को लाता हूँ, तो पूज्यपाद गुरुदेव आश्चर्य चकित तो हो ही जाते हैं, क्योंकि इन्होंने राम का काल देखा, राम के काल को दृष्टिपात किया है, जहाँ राम की आचार संहिता पवित्र, गृह-गृह में सुगन्धि आना, गृह-गृह में वेदोक्त पठन-पाठन होना, जब राजा ब्रह्मे राजा के हमें इस प्रकार की आचार संहिता हो, वह राष्ट्र राम राज्य कहलाता है। तो राष्ट्र विष्णु राष्ट्र कहलाता है। परन्तु देखो, आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा। मेरी सदैव कामना रहती है हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, अपनी आन्तरिक प्रवृति को मानो देखो, आचार संहिता को पवित्र बनाते हुए अपने मानवीय जीवन को ऊँचा बनाते हुए, मानो देखो, अपने में अनुसन्धानवेत्ता बने रहे, यह सदैव मेरी कामना है, याज्ञिक पुरूष बने रहें, क्योंकि याग का अभिप्रायः यह है जैसे अग्नि मानो देखो, अग्नि नाना प्रकार के पदार्थों का भेदन करके, शुद्धिकरण कर देती है, इसी प्रकार प्रत्येक मानव को अपना शुद्धिकरण करना चाहिए। यह आज का वाक् अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः- मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बहुत मधुर और विडम्बनामयी शब्दों की प्रतिभा, अथवा उनकी आभाएं रही, मानो देखो, इनके हृदय में, यह जो दाह, राष्ट्रवाद की लगी हुई है, मानो वह समय भी आयेगा, परन्तु देखो, वह समय वृत्तियों में रहता है, मानव की धाराओं में रहता है। तो आज का विचार कि जैसा मेरे पुत्र ने कहा कि यज्ञमान का सौभाग्य अखण्ड बना रहे इसीलिए मेरी भी यह कामना है कि उनका जीवन सदैव ऊर्ध्वा में गति करता हुआ, और अपने जीवन को महान बनाते रहें, यह आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

९ वनस्पति से दीर्घ आयु ०३ ०७ १९८५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, ... (पुस्तक से लेना है)

मानव को वास्तविकता की प्रतीति नही होती, अब विचार आता है कि पूजा क्या है? जिससे मानव को वास्तव का पथिक होना है, तो आओ, स्थलियों में ले जाना चाहता हूँ मानो अपने में पूजा करता हुआ, उन्होंने संसार को कुछ दिया है, वादन करते हुए उन्होंने अपनी लेखनियाँ बद्ध की हैं, और अपनी अस्तियों का रस, रसों के द्वारा वह लेखनियाँ बद्ध की हैं, जैसे हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न ऋषि हुए हैं, हमारे यहाँ सबसे प्रथम ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा हुए हैं, जिन्होंने वेदाध्ययन करते हुए, यागों में परिणत हो करके उन्होंने अपनी अस्तियों के रसों को ले करके उन्होंने अपनी लेखनियाँ बद्ध की हैं, परन्तु उससे पूर्व नाना प्रकार के ऐसे मानो पूजा करने वाले रहें हैं जैसे हमारे यहाँ पातंजलि के जीवन में भी इसी प्रकार के, रसों की प्रतिभा का वर्णन होता रहा है।

परन्तु आज मैं बेटा! इन रहस्यों में जाने के लिए आया हूँ, कि तुम्हें यह निर्णय कराना चाहता हूँ, कि पूजा किसे कहते हैं? हम जल का पूजन करना चाहते हैं, अग्नि का पूजन करना चाहते हैं, परन्तु पूजन का अभिप्रायः एक ही शब्द आता है, पूजन के सम्बन्ध में क्या? जिस वस्तु का तुम पूजन करना चाहते हो, उसका सदुपयोग होना चाहिए, उसका केवल सदुपयोग ही उसकी पूजा है। मानो जैसे हम माता की पूजा करना चाहते हैं हम माता की पूजा का अभिप्रायः यह है कि माता की जो आचार संहिता है उस आचार संहिता के आधार पर मानो हमें उसी आचार संहिता के ऊपर विचार करना है, और आचार संहिता के आधार पर, उसका हमें जो उसके आचार में, उसकी सामग्री है उसे प्रदान करने का नाम, अब मानो उसकी पूजा कर रहे हैं। पूजा का अभिप्रायः यही है, आज हम मानो वनस्पति विज्ञान में प्रवेश करते हैं, वास्तव में वनस्पति विज्ञान की चर्चा से पूर्व यह निर्णय देना चाहता हूँ कि हम आपो ज्योति की पूजा करना चाहते हैं। आपो कहते हैं जल को, आपो कहते है अमृत को, मानो आपों में ही जीवन है, तो मानो इसीलिए आपो की पूजा करनी है कि उसमें जीवन कैसे है क्योंकि वह प्राण सत्ता को प्रदान करने वाला है, मानो देखो, प्राण शक्ति कहाँ आती है? जहाँ आपो होता है। एक मानो देखो, कृषक है एक मानो उस उद्यान में परिणत हो गया है, वह उद्यान जब तक सफल नही होता, जब तक आपो उसके समीप नही होगा। क्योंकि आपो ही तो उद्यान को प्राण देता है, वही तो एक परमाणु का आदान प्रदान करता रहता है, जैसे एक मानो मानो देखो, जलं ब्रह्मे वाचा मेरी प्यारी माता अग्नि के समीप जाने से पूर्व, वह जल की पूजा करती है, वह मानो वह आपो की पूजा करती है आपो से पिण्ड बनाती है, मानो देखो, पिण्ड के पश्चात उसी पिण्ड को अग्नि में तपा देती है, और पिण्ड को अग्नि में तपा करके मानो वह भोज्य के रूप में, मानव के समीप आ जाता है, तो पिण्ड काहे से बना है? तो बेटा! पिण्ड बना आपो से और आपो में प्राण सत्ता है। जैसे एक मानव मानो देखो, गृह के निर्माण के लिए, गृह की सामग्री को निर्माणित करना चाहता है गृह की सामग्री को एकत्रित करने से पूर्व मानो गृह के लिए आपोमयी प्राण की धारा को एकत्रित करता है और उसी से मानो गृह का निर्माण होता है तो इससे यह सिद्ध हुआ क्या मानो देखो, जो एक मानो वृत्ति है, और वृत्ति बना करके वह अपने में देखो, जल और पृथ्वी के कणों को ले करके, उसको गूंथ देता है, और गूंथ करके मानो सूर्य में तपाता है, सूर्य में तपा करके अग्नि में उसे परिणत कर देता है, और अग्नि उसे और तपायमान करके संस्कारित बना करके मानो वह गृह की उज्ज्वल सामग्री बन जाती है। तो उससे वह गृह का निर्माण करता है। तो अभिप्रायः यह कि पूजा से पूर्व हमें यह विचारना

है, क्या यह पूजा है, पूजा का अर्थ है, पूजा का अभिप्रायः है क्या हमें उसको सदुपयोग के द्वारा, उसे लाना है, उसके ऊपर शीतल करना है। जैसे आपोमयी ज्योति का वर्णन आता है। आपो ही तो अमृत कहलाता है एक मानो रूग्ण विद्यमान है, परन्तु वह जल से मानो व्याकुल हो रहा है, और वह जल उसे मानो देखो, और रूग्ण करता है, तो जल के द्वारा और नाना प्रकार की वनस्पतियों का रस बनाता है वनस्पतियों का रस बनाता है उसको संस्कारित बनाता है संस्कारित बना करके, मानो उसको अग्नि में तपा करके, उस आपो को अमृत बना करके बेटा! तो वही जल, जहाँ प्राण सत्ता का द्यौतक था, उसी मानो औषधियों से मानो सन्निधान मात्र से, वह अमृत बन गया है, उस अमृत को जब वैद्यराज मानो जब रुग्ण को पान कराता है तो उसका रूग्ण शान्त हो जाता है, वही आपो है वही मानो जल है, उसका संस्कार करना ही मानो देखो, अग्नि के द्वारा अग्नि में उसका संस्कार होता है, और वह संस्कार होते ही मानो उसमें अमृत के गुण आ जाते हैं।

मुझे स्मरण आता रहता है हमारे यहाँ, एक समय देखो, ऋषियों ने एक विचार-विनिमय किया था, जो मैं महात्मा अथर्वा की चर्चा कर रहा था, महात्मा अथर्वा ने महर्षि ने एक अपने में चिन्तन किया था, क्या मैं आपों को जानना चाहता हूँ मानो देखो, आपो के लिए बारह वर्ष में अनुष्ठान में लग गएं और अनुष्ठान में लग करके आपो के समीप पंहुचे तो आपो को उन्होंने लेना प्रारम्भ किया परन्तु उसमें सत्ता इतनी अमृत की नही थी, वह केवल उसमें प्राण सत्ता तो थी, परन्तु जब देखो, उसमें एक विरासकेतु एक मानो एक औषध होती है उसका उन्होंने मिश्रण किया पीपल के पंचांग को उसमें मिश्रण किया अग्नि में तपाने से उसका अमृतमयी गुण बन करके मानो देखो, अन्न का भी और आपो का दोनों का व्यवसाय बन करके, मेरे पुत्रों! देखो, उसको अमृतमयी बना करके, वह तपों में परिणत हो गया। वही आपो है, वही जल है, परन्तु उसमें नाना प्रकार के औषधि विज्ञान का मिश्रण करने से, वह आपो, एक ज्योति बन करके रहता है, यह एक अमृत बन करके रहता है, जो मानव के जीवन में एक महान धारा बन करके, मानो एक उज्ज्वलता को प्राप्त हो जाता है। मानो देखो, इसी प्रकार, महात्मा अथर्वा ने मुझे इतिहास से प्रतीत हुआ, क्या बारह वर्षों तक इस प्रकार के उन्होंने अनुष्ठान किए अनुष्ठान करने से मानो देखो, आयु का बलवर्धक होता है, परन्तु आज मैं मुनिवरों! देखो, इस क्षेत्र में मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ प्रेरणा मुझे प्राप्त हो रही है। मैं उसी वाक् को ले करके अग्रणीय बन रहा हूं मानो देखो, आओ, मैं आज तुम्हें औषध विज्ञान के जैसे आज के वेद के पठन-पाठन में मानो देखो, औषध विज्ञान के सम्बन्ध में कुछ विवेचनाएं आ रही थी, कुछ चर्चाएं आ रही थी, क्या मानव को उसमें औषध विज्ञान में रत्त रहना चाहिए, अब मैं उस काल में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ, जहाँ अश्विनी कुमार और देखो, महाराजा सुधन्वा ये एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके, अपने ऊपर अन्वेषण करने का, उन्होंने प्रयास किया, और नाना प्रकार की औषधियों के ऊपर, मानो उनका गम्भीर चिन्तन रहता था, चिन्तन रहते ही मानो देखो, उन्होंने यह विचारा कि मुझे आज शिव की पूजा करनी है, मानो देखो, शिव कौन है? जो कल्याणकारक है, आगे प्रश्न हुआ कि शिव कौन है? तो उन्होंने यह कहा कि शिव कल्याणकारक है। अब विचारा गया कि कल्याण कैसे करते हैं वे, मानो देखो, उन्होंने कि कल्याण कारक का अर्थ यह कि मानो उसकी पूजा करनी है, शिव नाम परमपिता परमात्मा को जहाँ माना गया है वह तो कल्याण करता है, पालन करने वाला है मानो देखो, वह अनुशासन में, इस संसार को चला रहा है, वह गति अब्रहो वाचक कहलाती है। मानो तो मानो देखो, यह विचार आयास कि वह प्रभु कल्याण कारक कैसे है? शिव जिनकी हमे पूजा करनी है और पूजा का उसका सदुपयोग करना है देखो, शिव नाम हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न रूप शिव के माने गएं हैं जहाँ परमपिता परमात्मा को शिव माना गया है, वही मानो देखो, शिव नाम औषधियों का भी है जहाँ शिव नाम ओषधियों का है, वहाँ शिव नाम पर्वतों को भी माना गया है, मानो पर्वत राज को भी शिव कहा गया है जो पर्वत के ही मानो शिव के ही

शरीर से मुनिवरों! देखो, सर्वांग अंगों का झरणा होता रहता है वह झरते रहते हैं, कहीं मानो जल के रूप में झरने बन करके, झरते रहते हैं कहीं वही पर्वत वज्र के रूप में झरते रहते हैं, कहीं वही मानो शिव राज मानो कहीं वनस्पतियों के रूप में वह झरते रहते हैं, मानो कहीं इस पर ऐसे विषैले प्राणी इसके गर्भ में उत्पन्न होते हैं, जो नाना प्रकार की वनस्पतियों के रूप को धारण कर लेते हैं, एक मानो बिच्छुका एक बिच्छु का एक अस्वात मानो देखो, एक प्राणी है, और वह प्राणी जब उसे क्रोध आता है, क्रोध आने पर मानो वह पर्वतों की आभा में अपने विष को फूंक देता है। जब विष को फूंक देता है, तो वह जो वज्र पर्वत बना हुआ है, शिवराज है, वह मानो देखो, वह जल के रूप में झरने लगता है, उसका विष और मानो देखो, उसका एक वज्र का एक मानो देखो, जल के स्वरूप में बन गया है, तो वह किसी का वह गुटकिका मानो क्रियात्मक मानो क्रियाकलापों में लाने का वैद्यराजों ने प्रयास किया तो इसी प्रकार एक प्राणी पर्वतों के गर्भ में मानो शिव राज के राज्य में, ऐसा रहता है मानो देखो, एक वनस्पति है जिसको मृचिका और ग्रहेणकेतु कहते हैं और वह दोनों की मानो शाखाओं पर रहता है, वह जब शाखाएं मानो देखो, जब उसे क्रोध आता है, क्रोध आने पर जब उसका विष बलवती हो जाता है, विशेष प्राणी है, जब विष मानो प्रबल हो जाता है, तो मानो देखो, उसके वृक्ष की अस्थियों में वह मानो देखो, अपने क्रोध को फूंक देता है, तो उसकी मानो जो कृतिका है जो वह उसे कृणिग के रूप में परितण कर देती है उस गुंद के रूप में परिणत कर देती है उस गन्द को ले करके हम गन्धिका में आश्रित करते हुए, खरल करते हुए, मानो देखो, वह पारेश्वर एक औषध होती है, मानो पारेश्वर में उसको जब हम मानो पिण्ड बना करके, उसे मानो देखो, अखरी के रूपों में खरल करते हैं अखरी के दुग्ध को जब हम खरल करते हैं, उसके पश्चात जब हम अग्नि में उसकी पुट लगाते हैं, धीमी पुट लगा करके पुनः जल की पुट लगाते हैं, मानो देखो, जल गंगा का देखो, स्रोत्रों का जल ले करके, उसमें देखो, मृचिका, मौन वृचिका, शम्भेत मानो चारों औषधियों को ले करके उसका पुनः जब खरल बनाते हैं, खरल बना करके, फिर पुनः अग्नि की पुट लगाते हैं, अग्नि की पुट लगा करके, उसमें गन्धिका औषध दे करके मानो देखो, वह जब औषध पूर्ण हो जाती है तो उसका नाम शिव कहा जाता है। उसका नामोकरण हम शिव के रूप में परिणत कहा करते हैं, परिणत कर देते है। कि वह शिव है उसमें लगभग मानो देखो, वह दस समय तो अग्नि में तपा तपा करके देखो, अखी के दुग्ध में उसको खरल किया जाता है, वट वृक्ष की मानों पंखुड़ियों को ले करके, अग्नि में तपा करके, उसका रस बना करके उसे पुनः खरल किया जाता है, इसी प्रकार पीपल के रस में खरल हो करके सम्भूति एक औषध होती है, उसमें उसको खरल करते हुए मानो उसके पश्चात वह पारेश्वर मानो शिव के रूप में परिणत हो जाता है वह औषध मानो देखो, आयु में आयु मानव को पुनः प्रदान करती है उसके सेवन से उसका सेवन कहाँ से किया जाता है? मानो देखो, गो घृत के द्वारा, उसका सेवन होता है उसकी मानो कृतिका का श्वेत मानो देखो, बकरी के दुग्धों से उसका आहार, अजा के दुग्धों से उसका आहार किया जाता है।

परन्तु मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा देना नही चाहता हूँ विचार-विनिमय क्या है मैं तुम्हें यह दे रहा हूँ, कि हमें पूजन करना है पूजन का अभिप्रायः यह, कि योगी जन मानो देखो, यह किसी काल में बेटा! देखो, महर्षि पारा मुनि ने, इसके ऊपर अन्वेषण किया था महर्षि पारा मुनि ने भी अन्वेषण किया और देखो, इसको महात्मा दधीचि ने इसको मानो खरल करते-करते, बहुत उन्होंने अश्विनी कुमारों के जो गुरु आचार्य थे, स्वाति व्रेण केतु मुनि महाराज उनसे उन्होंने आयुर्वेद की विद्या को पान किया था। तो पान करके अपनी अस्थियों को वह विचित्र बनाने के लिए उन्होंने मानो देखो, इस प्रकार का अनुष्ठान किया। मानो देखो, उसके पूजन का अभिप्रायः हमारे यहाँ विलासता के क्षेत्रों में मानो उन औषधियों का कोई तात्पर्य नही माना गया है। तात्पर्य इसीलिए नही माना गया है क्योंकि रूग्णा को नष्ट करने के लिए तो प्रायः यह माना गया है। किन्तु विलासता के क्षेत्रों में इसको ले

जाना एक मानो मैं धृष्टता स्वीकार करता हूँ। पुरातन काल में भी इस प्रकार के धृष्ट पुरूष हुए है परन्तु आज मैं तुम्हें यह वाक् देने आया हूँ, क्या इसको पान करना है, पान करके मुनिवरों! मानो योगाभ्यास की सूक्तियों में अपने को ले जाना चाहिए, हमारे यहाँ औषधियों को पान करते-करते नाना प्रकार के अनुष्ठान करके उन्होंने आयु को दीर्घ बनाया है, आयु को दीर्घ बनाते हुए, बनाने के लिए मानो देखो, औषध होती है, मुझे ऐसा काल आता है, महाराजा सुधन्वा मानो वैद्यराज थे, सुधन्वा ने जिस समय मानो देखो, इस आयुर्वेद के गर्भ में जाने का, उन्होंने प्रयास किया, तो आयुर्वेद को जानने के लिए उन्होंने, सबसे प्रथम एक समय वह देखो, महात्मा दधीचि के समीप पंहुचे, और महात्मा दधीचि और अश्विनी कुमार और देखो, ये महाराज सुधन्वा यह तीनों वैद्यराज मानो भयंकर वन में गंगा के तट पर मानो पर्वतीय क्षेत्रों में विद्यमान हो करके अपने में अनुष्ठान और चिन्तन कर रहे थे अनूठा एक चिन्तन उनके हृदय में आया क्या मानो हम अपने में यह विचारें कि अग्नि में तपाने से हम धुम्रों के रूपों को जानना चाहते हैं तो मानो देखो, महात्मा दधीचि ने अश्विनी कुमार ने और सुधन्वा ने तीनों ने विद्यमान हो करके मानो वहाँ एक याग किया याग किया तो कुछ औषध आयुर्वेद विज्ञान के सम्बन्ध में कुछ मानो उसी के आधार पर मानो औषधियों को एकत्रित किया उसमें मानो देखो, एक मृचिका का फल होता है मृचिका का फल और पीपल के पांचों स्वरूप मानो वट के पांचों स्वरूप और उसमें जावा कृतिका और जाया वृणकेतु फलसुता और देखो, उसमें शंखकेतनी आंचकृतिका मानो देखो, उसमें और भी औषध नाग वृत्ति होती है जैसे नाग काचानी होती है, और देखो, उसमें वाचकेतु चन्दन की व्राण केतु होती है मानो उन पांचों को ले करके, उन्होंने मानो याग किया मानो अग्न्याध्यान किया, और उन्होंने अग्नि में देखो, दाह, एक वृक्ष होता है, उसकी समिधा बिल्व की कील की समिधा, पीपल की समिधा जहाँ जटराजिनी की समिधा, चन्दन वाचिनी की समिधा सम्भूति एक वृक्ष होता है उसकी समिधा, अग्रेत केतु एक वृक्ष होता है, उसकी समिधा मानो वांची होता है, उन्होंने नाना वृक्षों की समिधा ले करके, और मानो देखो, एक याग किया। तो याग करने से इसीलिए याग किया कि विचारों कि आकाम् जो वृक्ष है, उसकी धुम्र का कैसा स्वरूप होता है, परन्तु देखो, चन्दन के समिधा में किस प्रकार का गन्धपात होता है कौन से परमाणु उसमें मिश्रण हो करके, धुम्र के स्वरूप को परिवर्तित करते हैं, परन्तु बिल्व के वृक्ष को उनकी समिधाओं का कैसा स्वरूप होता है? तो इस प्रकार उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार की समिधाओं को एकत्रित करके उन्होंने चहुंमुखी यज्ञशाला का निर्माण करके मानो देखो, उन्होंने लगभग बारह वर्षों तक इस प्रकार का यज्ञ किया तो बारह वर्षों तक उन्होंने इस प्रकार का अनुष्ठान किया अनुष्ठान का अभिप्रायः यह है परन्तु देखो, हम समिधाओं के द्वारा याग करना, उन मानो परमाणुवाद को विचारना है, क्या यह कौन-कौन-सी समिधा, किस-किस रूप में आ करके, जब वह याग करने लगे, तो बारह वर्ष हो गएं इस प्रकार के अनुष्ठान में वह पांचा करते थे, विचारना यह है कि वह महापुरूष आहार क्या करते थे? यह विचारना है। मानो वह जल में तपा करके जल को ले करके उसमें मानो कुछ तन्दुल कुछ जोवृत्तिका मानो कुछ दाह, धान की असुतो मानो देखो, कुछ जटामासी की जटामासी की जड़केतु मानो इनको जल में अर्पित कर देते थे सांयकाल को, मानो प्रातःकाल इसका दुग्ध बना करके, मानो इसको खरल करके, दुग्ध बना करके, अग्नि में तपा करके, मानो देखो, इसको पान करते थे, उनको क्षुधा भी इस प्रकार की नही, मानो वह एक इस प्रकार का वह बारह वर्षों तक अनुष्ठान किया, परन्तु देखो, भयंकर वनों की, जो समिधाएं थी, अथवा वनस्पति विज्ञान था वह उनके स्वप्रवत में अपने गुणों का वर्णन करने लगा। मानो देखो, सुधन्वा की, तो यह दशा बन गई क्या सुधन्वा ने दो समय इस प्रकार का अनुष्ठान किया। क्या सुधन्वा की तो ऐसी दशा बन गई की वे निन्द्रा में तल्लीन होते मानो देखो, वह निन्द्रा में तल्लीन है, स्वप्रवत आते ही, अब औषधियां आ रही हैं, अपने गुणों का वर्णन कर रही है, पारेत्वर आए हैं पारेश्वर ने आ करके अपने गुणों का वर्णन किया क्या इस प्रकार

की वनस्पतियों में मेरा फूंकना मानो देखो, मेरे में गुटकिका बनाना गुटकिका बनाना और देखो, उसको खरल करना अग्नि में तपाना अग्नि में तपा करके, मानो देखो, उसका पान करो, मेरे प्यारे! उन्होंने लगभग, उसकी पुट पुटों का वर्णन किया। क्योंकि आयुर्वेद का एक बहुत विशाल वन है, मैंने बहुत पुरातन काल में भी वर्णन किया था आज मैं उनमें तो जाना विशेष नही चाहता हूँ एक मैंने आज अपने विचारों की भूमिका बनाई है और वह भूमिका क्या है? क्या मानव को देखो, इसमें अमृत को पान करते हुए, देखो, इसमें हमारे यहाँ एक लेखनीबद्ध की गई है, एक लेखनी महात्मा सुधन्वा ने और महात्मा दधीचि ने भी इसका सर्मथन किया, और अश्विनी कुमार तो मानो उसका करते ही रहते थे। मानो महाराजा शिव की पूजा करने से, मानो पारेत्वर को पान करने से, मानो देखो, मृत्युंजां भविते ब्रहा सुतं मानो देखो, जैसा मैंने पुरातन काल में भी तुम्हें निर्णय दिया था क्या उसके विषा पान करने से, मृत्यु का और और देखो, उसको अपने में पान करते तो मानो उसको महात्मा सुधन्वा उसको पान करते थे, और पान करके उससे योगाभ्यास करते, प्राण और मन का सन्निधान करते थे सम्मिलन करते हुए, मानो देखो, उसके गुणों को अपने में धारण कर लिया और धारण करके, वह आयु में दीर्घ बनने लगे, जब आयु में दीर्घ बने तो मानो देखो, महात्मा सुधन्वा का अभिप्रायः मैं इसीलिए दे रहा हूँ, क्योंकि वह वैद्यराज थे, राजा रावण के यहाँ, लंका में सबसे विशाल वैद्यराज थे, जो महापुरूषों में भी उनकी गणना हम करते हैं, क्योंकि उनके स्वप्नवत में औषधियों का गुण औषधियों का वर्णन प्रायः करते रहते थे उसी में मानो उनकी प्रतिष्ठा हुई और देखो, उन्होंने एक समय मानो देखो, एक यन्त्र का निर्माण किया उन्होंने मानो देखो, उसी प्रकार के परमाणुओं को ले करके औषधियों के गुणों की गुणाधानम ले करके उन्होंने मानो एक यन्त्र का निर्माण किया था परमाणु ले करके, जो परमाणु मानो देखो, जल की चन्दन की समिधा से, जो परमाणु मानो देखो, धुम्र में रत्त हो रहा था जो परमाणु पीपल के पंचांग, पांचों अंग ले करके समिधा के रूप में, उनके जो धुम्र में, मानो परमाणुवाद लिपट करके आ रहे थे, उनको जाना परन्तु। एक परमाणु जो वट वृक्ष के समा, वाचिका में मानो उसके पांचों अंगों से उत्पन्न होता है, उसको ले करके, और उन्होंने और भी नाना प्रकार के परमाणुओं को एकत्रित करके, यन्त्र का निर्माण किया, और उस यन्त्र का निर्माण करके, क्योंकि उसको जल में परमाणु का पिपाद बनाया, और पिपाद बना करके उन्हीं परमाणुओं को, मानो जल की स्थलियों के ऊपर मानो जमित हो गएं और जमित हो करके, उसी के द्वारा मानो उन्होंने यन्त्रों का निर्माण किया, यन्त्रों का निर्माण करते-करते बहुत समय लगा था उस यन्त्र के निर्माण में, तो यन्त्र में यह विशेषता आ गई थी, क्या जैसे मानो देखो, याग हो रहा है, और याग इस अनुष्ठान से किया जा रहा है, क्या औषध विज्ञान से हम रत्त हो जाएं तो मानो देखो, उसी आधार पर यन्त्र का निर्माण हुआ और जैसे वह महात्मा सुधन्वा मानो याग करते थे, याग करना, उन नाना समिधाओं को ले करके, साकल्य एकत्रित करके और साकल्य मानो देखो, जैसे स्वाहा किया जाता, उस यन्त्र में मानो देखो, औषधियों का पिपाद, औषधियों का रस, कैसे-कैसे निर्माणित होता है, वह सब मानो देखो, यन्त्र में दृष्टिपात आने लगा, यह मैं तुम्हें बहुत विचित्र, एक यन्त्र की चर्चा कर रहा हूँ। बहुत विचित्र आयुर्वेद के अन्तिम छोर की चर्चा कर रहा हूँ, जैसे मानो देखो, एक समय उन्होंने चन्दन के वृक्ष के पांचों अंग ले करके, उन्होंने याग किया, और उस याग में जो साकल्य दिया, वह साकल्य मानो देखो, जटामासी, सोमकेतु, स्वाति मणं, ब्रहे वाचवानिका, मानो देखो, शंखवानिकी और उन्होंने देखो, उन औषधियों को ले करके उनका एक मानो साकल्य बनाया, उसमें मानो मिष्ठान की पुट लगाई, उसमें देखो, तन्दुल ले करके, तन्दुलों का वृत किया, उन्होंने मानो मिष्ठान को लिया, और मिष्ठान ले करके यह पृथ्वी के विशाल रूप ले करके उन्होंने याग किया। तो इस यागों का जब वह अन्तरिक्ष में जाने लगे, तो वह धुम्र की तरंगों के रूप में वह परमाणु तो मानो देखो, उसे यह प्रतीत हुआ कि यह जो मिष्ठान है, यह अन्तरिक्ष में मानो देखो, जल यह अन्तरिक्ष में शक्तिशाली

आपो की स्थापना करता है। और जो यह तन्दुल है, अन्तरिक्ष में धुम्र के साथ जा करके, मानो ये वकासुर के समीप जा करके मानो यह **ओस्वानी मानो तरंगों को जन्म देता है जिससे वायुमण्डल शुद्ध होता है।** इसी प्रकार नाना प्रकार की औषधियों को ले करके और उनका किसी का पिपाद बन रहा है किसी का रस बन करके स्वाति बन रहा है किसी का पिण्ड बन करके तो यह वैद्यराज को यह प्रतीत हुआ क्या शरीर में जिन-जिन धातुओं की सूक्ष्मता हो जाएं तो उनमें यही औषधियां उन्हें प्रदान करनी चाहिए तो इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण यह महात्मा मानो देखो, सुधन्वा ने अपने यहाँ स्थित किया था और वह यन्त्र बहुत समय में इसका निर्माण हुआ।

तो परिणाम यह हमारे विचारों का यह है क्या हम नाना प्रकार के औषध विज्ञान में जाने के लिए हमें मानो यह जानना होगा कि हम अपने में कितने संयमी कितने मानो सदुपयोग और पूजा के हम पात्र बनें हम पूजा में परिणत हो जाएं मैं पूजा का अभिप्रायः तुम्हें वर्णन कर रहा था क्या हमें वनस्पतियों की पूजा करनी है स्थिर मानो इस मानो देखो, वनस्पति विज्ञान की पूजा करते-करते हम इतनी पूजा में रत्त हो जाएं कि यन्त्रों में निर्माण करने लगे और प्रत्येक वनस्पतियों का रस प्रत्येक वनस्पतियों का पिण्ड हमारे समीप आ जाएं और उसे हम क्रियात्मक में लाने का प्रयास करें मानो वही तो हमारा जीवन है उन्होंने मानो जब यन्त्रों में यह दृष्टिपात किया क्या पार्वती के सम्बन्ध में मानो देखो, औषध विज्ञान आया औषधियों का किसी का नाम पार्वती है किसी का नाम सन्तवेन्ती है, किसी का नाम मृचिका है, किसी का नाम मुशेश्वरी है किसी का नाम रेणकेतु है, भिन्न-भिन्न प्रकार के नामों का वर्णन आया। परन्तु देखो, कोई पिण्ड में परिणत है, कोई रसों में परिणत है, कोई तेजो में परिणत है कोई मानो देखो, रत्त रहने में परिणत हैं। ये पांच प्रकार के गुण मानो देखो, प्रत्येक वनस्पतियों में हमें प्रायः प्राप्त होते रहते हैं। तो इसी प्रकार मानो देखो, उन्होंने महात्मा सुधन्वा ने इस सम्बन्ध में अपने बहुत से विचार व्यक्त किए हैं उन विचारों में क्या है मानो उन्होंने यह अपने विचार दिए हैं इस सम्बन्ध में क्या हम वनस्पति विज्ञान में हम पूजा में रत्त रहना चाहते हैं शिव की पूजा करना चाहते हैं शिव की पूजा नही करते तो मानो देखो, हमारा अनिष्ट हो जाता है तो इसके सम्बन्ध में महाराजा सुधन्वा ने एक वाक् बड़ा प्रिय कहा है, उन्होंने कहा है, क्या जिसकी तुम पूजा विशेष रूप से शुद्ध रूप से नही कर पाओगे तुम्हारा विनाश हो जाएगा, उसके कारण मूल में क्या है विनाश के मानो यदि तुम वनस्पति विज्ञान को, एक मानो देखो, इसको रस बनाना चाहते हो, या उसको पुटित करना चाहते हो, यदि उसका विशेष पुट नही लगा है उसका शोधन नही हुआ है, तो उसको यदि उसकी पूजा विशुद्ध रूप विशाल रूपों से पूर्ण रूपेण नही होती तो उसका जो पान करता रहेगा, वही मृत्यु को प्राप्त होता रहेगा। वही मृत्यु में चला जाएगा तो इसीलिए अशुद्ध औषधियों का पान करने से मृत्यु बन जाती है, रूग्ण हो जाती है। मृत्यु का अभिप्रायः यह नही है, क्या शरीर को त्यागा जा रहा है, नही शरीर में और रूग्णों की बलवती हो जाती है, और वह अग्नि प्रदीप्त कर देते हैं, मानो देखो, जहाँ जल का व्यवसाय बन रहा है, वहाँ अग्नि लग जाती है, जैसे बड़वानल नाम की अग्नि बन करके, समुद्रों को भस्म कर देती है। इसी प्रकार मानव के शरीर में, ये ऐसी जो औषधियां होती हैं जो मानो जिनकी पुट ऊँचे प्रकार नही हुई है, उनका शोधन नही हुआ है मानो देखो, वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है वह पूजा में वह पूजा नही कहलाई जाती उसकी पूजा का अभिप्रायः यह है क्या हम उसको पूजा को चिन्तन करते-करते मनन करते-करते उसको क्रियात्मक में लाते हुए मानो खरल करना खरल को अग्नि में तपाना फिर खरल करना अग्नि में तपाना और रसों को ले करके मानो शोधन करते-करते मानो नाना पुट लगा करके उसका शोधन हो गया तो वह उसकी पूजा है, पूजा का अभिप्रायः यह है कि तीव्र इच्छा है, वह तीव्र इच्छा में वैद्यराज चला गया है। क्या मुझे वास्तव में इसकी पूजा करनी है पूजा का अभिप्रायः यह है क्या तीव्र इच्छा में जा करके वह अन्तिम छोर पर जाना है, अन्तिम छोर पर जा करके तुम मानो देखो, उसको प्राप्त करो तो यह

उसकी पूजा का अभिप्रायः बना है। अनिष्ट होना अशुद्धियों में अनिष्ट होना अनिष्ट होता है मानो उसमें प्रियता नही आती, तो इसीलिए मैं यह उच्चारण कर रहा था पुत्रों! सम्भूति ब्रह्म आपां मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे इस प्रकार की प्रेरणा मानो पूर्व काल में भी आज भी इन्होंने किया है, परन्तु देखो, विचार-विनिमय क्या है, मानो देखो, मैं एक ऐसी गाथा वर्णन तुम्हें कराई है जो पुरातन काल में, हम प्रायः इसके ऊपर अन्वेषण करते रहते थे, विचार-विनिमय करते रहते थे।

तो विचार क्या देखो, महात्मा सुधन्वा को स्वप्रवत में उन औषधियों का ज्ञान होता तो मानो देखो, तुम्हें प्रतीत है जब देखो, महाराजा लक्ष्मण के शक्ति बाण लग गया था शक्ति प्रहार हो गया था वह राजा रावण के पुत्र मेघनाथ जी ने इन्द्र के यहाँ एक शक्ति यन्त्र उन्हें प्राप्त हुआ था और वह यन्त्र जब उन्होंने उस यन्त्र का प्रहार किया तो मानो देखो, लक्ष्मण मूर्छित हो गएं वह मृत्यु होने ही वाली थी तो महात्मा सुधन्वा को महाराज जामवन्त और महाराज हनुमान जी मानो उनके गृह से ले करके आए, जब उनको यहाँ निन्द्रा से जागरूक हुए तो महात्मा सुधन्वा से कहा क्या महाराज देखो, स्वप्न आज मानो देखो, देखो, मेरा अमृत विधाता है। इसको जीवीत करो मेरी माता मुझे जीवन नही दे सकती, यदि यह मृत्यु को प्राप्त हो गया मानो देखो, उस समय सुधेन ने कहा हे ब्रहो वाचम् जाओ देखो, तुम ऋषिमुख पर्वत पर चले जाओ, और वहाँ जा करके तुम्हें औषध विज्ञान प्राप्त होगी उन औषधियों का इस पर जो औषधि मुझे देनी है। मानो वह पर्वत वह अन्ध रात्रि में जब मेघों की छाया होती हो, और वह मेघो की छाया भी न हो जब छाया में तुम्हें वह औषधि तुम्हें मानो देखो, चमकने वाली प्रतीत होगी, जैसे सूर्य उदय हो रहा हो, और जब यह सूर्य उदय नही होता हो कभी उदय हो हो रहा है, किसी काल में उदय हो रहा हो, ऐसा ऐसी औषधियों का वृत तुम्हे प्राप्त होगा तो मानो देखो, यह वाक् ले करके महाराजा हनुमान ने वहाँ से गमन किया वह ऋषिमुख पर्वत पंहुचे तो ऋषिमुख पर्वत पर मानो देखो, वह औषधियां देखो, अपने में प्रकाश दे रही थी, उन औषधियों को ले करके, मानो देखो, और नाना औषधियों को ले करके, मानो देखो, महाराज हनुमान, गमन करते-करते मानो गमनन्ति प्रवाह लोकां मानो देखो, जहाँ राम रूधन कर रहे थे, सूर्य उदय ही होने वाला था, क्योंकि वह शक्ति इस प्रकार की थी जहाँ सूर्य की किरण मानो देखो, उनके शरीर पर स्पर्श होती तो उनकी मृत्यु हो जाती क्योंकि उस शक्ति समन्वय सूर्य की किरणों से था, सूर्य की किरणों के साथ में उसकी मृत्यु होने वाली थी। परन्तु सूर्य की किरणों, जब नही कुछ समय मंगल ब्रहे मानो देखो, सूर्य की किरणे नही आ पाई थी। तो हनुमान जी पंहुच गएं तो सुधन्वा ने वही देखो, वैद्यराज ने मेरे पुत्रों! देखो, वह उन औषधियों का पिपाद बना करके विभिन्न औषधियां उसमें उस औषधि का नाम सोमभामकेतु लता था, सोमभामकेतु लता उस औषधि का नामोकरण था, उसमें मृचिका औषधियों का पुट लगा करके, और मानो देखो, वह उन्हें प्रदान की, और प्रदान करके वह शक्ति का क्षीण हो गया वह मानो शक्ति दूरी हो गई, उसका क्षय हो गया और मानो देखो, वह अपनी मूर्छा से जागरूक हो गएं जागरूक हो करके मानो देखो, इस प्रकार की औषध विज्ञान, हमारे यहाँ एक विशाल विज्ञान माना गया है तो मानो देखो, महाराजा सुधन्वा के द्वारा पारेत्वर उन्होंने एक गुटकिका उन्होंने दी, उससे देखो, और बल प्राप्त हो गया बल प्राप्त होने इस प्रकार का उनका जो सम्भवा ब्रीहि वाचम् व्रते मानो देखो, इस प्रकार का विज्ञान आयुर्वेद में हमें प्राप्त होता रहता है सुधन्वा से जिस भी काल में विराजमान हो करके देखो, राजा रावण के विधाता कुम्भकरण जो वैज्ञानिक थे उनकी कई-कई समय वार्त्ता होती रहती थी यह वार्त्ता तो मैं कल ही प्रगट करूंगा, क्या वैद्यराज के औषध विज्ञान के सम्बन्ध में दोनों देखो, एक वैज्ञानिक विद्वान है, परमाणुवाद के एक बुद्धिमान मानो क्रियात्मक जो देखो, औषध विज्ञान के हैं दोनों का जो परस्पर संघर्ष होता है। उसकी चर्चा तो मैं कल करूंगा, आज का विचार तुम्हें केवल एक भिन्नता की भूमिका बनाई है, क्या मानव को देखो, इस सम्बन्ध में

विचार लेना चाहिए, कोई भी वस्तु हो उसके तप का अभिप्रायः यह है कि हमारे यहाँ प्रसंग था कि तप किसे कहते हैं? और तपं ब्रह्मा मानो देखो, हम तपं ब्रह्मे पूजा वृत्ति जब पूजा वृत्ति बनाते हैं, तो पूजा कहते हैं तीव्र प्रवृत्ति का नाम ही पूजा है, तीव्रता में जाना किसी को जानते-जानते अन्तिम छोर पर चले जाएं, तो वह उसकी पूजा कहलाती है। मानो आपो की पूजा का अभिप्रायः अग्नि की कोई पूजा करना चाहता है, यह अग्नि तेजोमयी है, जब तेजोमयी में जाते हैं, यही अग्नि भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूपों को धारण करती है। धारण करती एक अग्नि है, जो समुद्रों में परिणत होती है, पांच प्रकार की अग्नि है, जो समुद्रों में रहती है, एक अग्नि बड़वानल नाम की है, एक अग्नि रेणवाचिका एक अग्नि सोम के रूप में है, एक अग्नि मानो देखो, वाचसुन्धि की है, एक सोम कहलाती है, मानो देखो, क्या बड़वानल नाम की अग्नि तो जल को जल में प्रदीप्त हो करके जल का उग्र रूप बना देती है। एक अग्नि वह है जो मानो देखो, जल का पिण्ड बना देती है, वह भी तो अग्नि है, जो जल का पिण्ड बनाती है वह शान्ता अग्नि कहलाती है। चौथी अग्नि उसे कहते हैं, जो मानो देखो, वह अग्नि अपने श्वासों के रूप में गति करती है, जो प्राणं वृत्तिका कहते हैं, एक अग्नि वह होती है, जो समुद्रों के मध्य में मानो देखो, कुछ दूरी पर अग्नि का प्रभाव केवल जल को तपाने का है, जिसको देखो, जल अपने में अपने में शान्त रह करके पृथ्वी की रक्षा करता है। तो इस प्रकार की देखो, प्रभु का विज्ञान कितना विचित्र है, जब मैं इसमें जाता हूँ कि-प्रभु! ने समुद्रों में पांच प्रकार की अग्नि का मानो देखो, सन्निधान किया है, उसमें निर्धारित किया है, और वह पांचों प्रकार की अग्नि किस प्रकार से रत्त रहती है, इसको वैज्ञानिक जनों ने भी उग्र रूप में जानने का प्रयास किया परन्तु देखो, एक अग्नि वह और पांच प्रकार की अग्नि मानो देखो, पृथ्वी के आंगन में रहती है। जिसको हमारे यहाँ गृहपथ्य नाम की अग्नि कहते हैं। एक को गार्हपथ्य अग्नि कहते हैं, एक को वैश्वानर नाम की अग्नि कहते हैं, एक को सोमवाणकेतु अग्नि कहते हैं, एक को मानो देखो, दाह अग्नि कहते हैं, तो यह पांच प्रकार की अग्नि है। सबसे प्रथम गृहपथ्य नाम की अग्नि जिनसे गृह स्वर्ग बनते हैं, क्योंकि माता-पिता जिस अग्नि की विचारधारा अग्नि को अपना करके मानो देखो, अग्नि का चयन करते हैं। उस अग्नि का चयन करके बाल्य-बालिका और गृह सब पवित्र बनते हैं, मानो जहाँ वेद का पठन-पाठन होता है, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि है, मानो जहाँ याग होता है, वह गृहपथ्य नाम की अग्नि है, जहाँ मानो देखो, ब्रह्मचारियों को बाल्य-बालिकाओं को माता-पिता ऊँची शिक्षा देते हैं, वह भी गृहपथ्य नाम की अग्नि है, उसको मानो जो गृह मे प्रदीप्त रहती है एक अग्नि वैश्वानर नाम की अग्नि है, जो वैश्वानर नाम की अग्नि उसे कहते हैं, जो विद्यालयों में पनपती है, जो ब्रह्मचारियों के जैसे एक गार्हपथ्य नाम की अग्नि है, जो ब्रह्मचारियों के हृदयों में धड़कती रहती है, मानो जो एक उग्र रूप बनाती रहती है, ब्रह्मचार्य को बलवती बनाती रहती है, और ब्रह्मचारी उसका उपयोग करके विद्या का अध्ययन करता है, और ग्रहण करता-करता नाना पूर्ण रूपेण विद्या का अध्ययन करता है। वह वैश्वानर नाम की अग्नि वह जो मानो देखो, इस अग्नि के द्वारा अपना क्रियात्मक जीवन बनाता है उग्रता में क्रियात्मक जीवन बना करके विद्यालयों में शिक्षार्थी शिक्षा दे करके ही मानो देखो, ब्रह्मचारियों को ऊर्ध्वा में ले जाता है। आध्यात्मिकवादी बना देता है। आध्यात्मिकवाद में परिणत करके परन्तु देखो, उसमें द्वितीय अग्नि वह जिसको शान्ता अग्नि कहते हैं। मानो क्रोधाग्नि नही आती शान्त रहता है। ज्ञान में रत्त रहता है, वह ज्ञान रूपी अग्नि जिसे ब्रह्मग्नि कहते हैं, मानो देखो, उसे ब्रह्माग्नि भी कहते हैं, रेणवाची अग्नि भी कहते हैं, मेरे प्यारे! जो भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्याओं में परिणत हो करके प्राणायाम करता है। उस प्राण के द्वारा जो प्राण में अग्नि प्रदीप्त हो रही है, उस अग्नि को वह कुम्भक और रेचक प्राणायाम में उसको मानो उग्र रूप बनाता है। यह चर्चा बेटा! आज करने की नही हैं, हमारी परन्तु विचार-विनिमय क्या यह बहुत प्रकार की अग्नियां है, आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना नही दे रहा हूँ, केवल विचार-विनिमय क्या है क्या बेटा! महात्मा सुधन्वा की चर्चा कर

रहा था महात्मा सुधन्वा अपने में कितने पूर्ण रूपेण कहलाते थे। मानो देखो, यह चर्चाएं कल प्रगट करेंगें। आज का वाक् अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, विषय तो बड़े विशाल है तुम बेटा! किसी काल में मुझे भयंकर वन में ले जाते हो। वन में मुझे कोई मार्ग प्राप्त हो नही पाता। परन्तु इतना विशाल है वह चिन्तन करने का कल इसके ऊपर और चिन्तन किया जाएगा। अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

१० वनस्पति से दीर्घ आयु ०४ ०७ १९८५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना, मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी स्वरूप है। क्योंकि विज्ञान उसका आयतन माना गया है, और जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, उस सर्वत्र आभा में रत्त रहने वाला मानो वह मेरा देव विज्ञानमयी स्वरूप है। जिसके ऊपर परम्परागतों से ही, मानव अपने में अनुसन्धानित रहा है अथवा अनुसन्धान करता रहा है। पर्वतों की कन्दराओं में समुद्र के तटों पर वनस्पतियों के गर्भ में और माता वसुन्धरा की आभा में रत्त रहने वाला यह मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है, और विचारता रहा है कि परमपिता परमात्मा का जो ज्ञान है अथवा विज्ञान है उसमें कितनी सार्थकता है और कितनी उसमें मौलिकता है, जिसके ऊपर हम अपने को ऊँचा बना सके अपने को महानता की वेदी पर ले जाएं। एक-एक वाक् को ले करके मानव ने बहुत अनुसन्धान किया और अपनी लेखनियाँ उन्होंने बद्ध की है जिन लेखनियों के बद्ध होने पर मानव उन विचारों को अग्रणीय बनाता रहा है।

तो आओ, आज मैं बेटा! उस उपवन में ला जाना चाहता हूँ, जिस उपवन में मानव औषधियों के निकट विद्यमान हो करके और औषध विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करता रहा है क्योंकि परमपिता परमात्मा अनन्तमयी ब्रह्माण्ड की रचना की है, उस अनन्तमयी ब्रह्माण्ड में एक स्थावर सृष्टि का निर्माण किया जिस स्थावर सृष्टि में जो स्थिर रहने वाला जो अमूल्य जगत है, प्राण अपना संचार कर रहा है, प्राण अपनी आभाओं में रत्त रह करके और प्राण की उस आभा में मानव अपने को ले जाता है, जिसको एकोकीकरण हो करके हम उसको अच्छी प्रकार क्रियात्मकता में ला सकें तो मेरे प्यारे! भयंकर वनों में उपवन में विद्यमान हो करके मानो प्राणी का भी अनुसन्धान करता रहा है, कौन-कौन प्राणी इस वायुमण्डल में से अपने विष का संचय करके और वही विषधर प्राणी मानो पर्वतों की श्रृंखला में परिणत हो करके और वह अपने विष को फूंक देता है। तो उसमें भी बेटा! एक औषध विज्ञान की उत्पति हो जाती है, तो बहुत अनन्तमयी ब्रह्माण्ड की रचना करते हुए देव ने, कितना अमूल्य जगत रचित किया है, जिसके ऊपर मानव विचारता ही रहता है, मानो विषधर प्राणी को जन्म दिया और वही वायुमण्डल में से विष को अपने संचय कर रहा है, और वह विष को जब पर्वतों की श्रृखला में जब कटिबद्ध कर देता है, फूंक देता है तो वही मुनिवरों! देखो, वनस्पति बन जाती हैं। वह वनस्पति में औषध भी बन जाती है। मेरे पुत्रों! देखो, वही औषध, धातु के रूप में परिणत हो करके, मानव के समीप आ जाती है, और मानव के निकट आ करके, इस मानव के शरीर में प्राण का संचार सूक्ष्म हो गया है, वही मानो देखो, वह प्राण सत्ता को प्रदान करने वाला है, कैसा अमूल्य जगत है, कैसी महानता वाला यह अनुपम है जिसके ऊपर हमारे ऋषि-मुनि बेटा! परम्परागतों से, अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करते रहे हैं, महात्मा दधीचि ने तो इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया क्योंकि दधीचि की अस्थियों में मानो वज्र की प्रतिभा निहित रहती थी, जैसे मानो पर्वत है, पर्वतों की आभा में पर्वत तुल्यं ब्रह्मा नाना प्रकार के धातु पिपाद को ले करके, मानो वह एक अनन्तमयी धारा बन करके मानो वही वज्रवत बन करके मेरे पुत्रों! वही वाहनों में और वही मुनिवरों! देखो, मानव की क्रीड़ाओं में परिणत होता रहा है।

तो आओ, आज मैं बेटा! उसी आसन पर तुम्हें ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! राजा रावण के राष्ट्र में मानो देखो, सुधन्वा नामक वैद्यराज, जिसके स्वप्नवत में औषधियां अपने गुणों का वर्णन करती रहती थी, और वह गुणों को गुणाधानम करती हुई वही रूग्णों में, मानो अन्वेषण में अप्रणीत होती रहती थी। तो आओ, मेरे पुत्रों! देखो,

महात्मा देखो, महाराजा सुधन्वा, अपने आसन पर एक समय विद्यमान थे, और विद्यमान हो करके अश्विनी कुमार दोनों वैद्यराज जो राजा रावण के राष्ट्र में विशेष थे, वे दोनों के मध्य में विद्यमान थे, परन्तु वह उनसे प्रश्न कर रहे थे, क्या महाराज! मानव का जो हृदय, इसकी जो प्रबल गति हो जाती है, उसके लिए हमें कौन से औषध और कौन-सी वनस्पति को पान करना चाहिए तो मानो देखो, उस समय महाराजा सुधन्वा ने कहा कि उसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की औषधियों का पिपाद बनाया जाता है, उसे अग्नि में तपाया जाता है, तपने के पश्चात मानो देखो, उसे चन्द्रमा की कृतिकाओं की आभा निहित होती है, उसको पान कराना चाहिए। मेरे प्यारे! उन्होंने गो का दुग्ध में मानो देखो, वृतिका एक मानो तन्दुल होते हैं उनको उसमें परिणत किया जाता है, और वह दुग्ध और तन्दुलों को अग्नि में तपा करके उसमें रेणावृत्तिका एक औषध होती है, उस रेणावृत्तिका औषध को मानो उसमें अर्पित किया जाता है और अर्पित करने से ही मानो देखो, उसको हम पूर्णिमा के दिवस उसको आभा उसकी कान्ति में नियुक्त करने से मेरे पुत्रों! देखो, उसमें एक महानता की ज्योति प्रदान की जाती है उसमें और शैल व्रीहि और शैलखण्डा दोनों औषधियों को उसमें मिलन किया जाता है तो मानो पूर्णिमा के दिवस चन्द्रमा की कान्ति में मानो देखो, उसको स्थिर करें और स्थिर करके वह रात्रि मानो वह रात्रि समय देखो, प्रातःकालीन उसका पान किया जाएं। तो हृदय की गति मानो देखो, अपनी स्थलियों पर नियुक्त हो जाती है, और वह स्थिर हो करके मानो देखो, वही औषध अपने में देखो, मूल्यवान बन जाती है। मानो देखो, उन्होंने कहा कि-प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, अश्विनी कुमारों ने कहा कि-प्रभु! एक समय हम जब महात्मा दधीचि जी के यहाँ ब्रह्म विद्या को पान कर रहे थे, तो ब्रह्म विद्या को जब पान कर रहे थे, तो ब्रह्म विद्या के पान करते-करते मानो देखो, रेणावृत्तिका ब्रह्मचारी अपने विद्यालय में से आए और वह विद्यालय में से आ करके बोले कि-प्रभु! महात्मा दधीचि से उन्होंने यह कहा कि महाराज! हमारे जो पूज्यपाद गुरुदेव हैं, मानो देखो, उनके हृदय के, ऊर्ध्वा भाग में मानो एक काचित वाचक उत्पन्न हो गया है, तो मानो देखो, काचिक उत्पन्न होने से वह स्वाति का स्वरूप धारण कर गया है, तो उसका कोई औषध होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो, वह महात्मा दधीचि ने हमें आज्ञा दी, कि जाओ हे ब्रह्मचारियों! तुम मानो इनके पूज्यपाद गुरुदेव को दृष्टिपात करो वह वहाँ से गमनं ब्रह्म वाचा करते हुए, महात्मा दधीचि के वाक्यों को पान करके, अश्विनी कुमारों ने, दोनों ने गमन किया और गमन करते हुए जब वह मानो उनके पूज्य गुरुदेव के आश्रम में, विद्यालय में पंहुचे, तो उन्होंने मानो इतने में ही एक मृचिका औषध का उन्होंने पान किया, और पान करके मृचिका औषध ने उसको अपने गर्भ में धारण कर लिया, और गर्भ में धारण करने से उसकी मृत्यु हो गई। जब मानो प्राणान्त होने लगे तो मानो देखो, जब प्राणान्त होने लगे तो महात्मा दधीचि ने जम्ब्रहा दधीचि को उन्होंने सूचित किया कि महाराज! इसकी ऐसी दशा बन गई है। उन्होंने कहा मृचिका औषध को मानो दृष्टिपात करो मानो देखो, वह कौन-सी है मानो जिसने अपने गर्भ में आचार्य को पान कर लिया है। तो उस समय, जब उन्होंने दधीचि अब्रहा वाचो को पान करके ही अश्विनी कुमारों ने निर्णय किया, कि मृचिका औषध ने अपने में पान किया है। मानो प्राण शनै-शनै जाने लगा, तो प्राण सत्ता बलवती क्योंकि मृचिका औषध उसमें अग्नि प्रधान होती है, तो वह प्राण सत्ता बलिष्ठ होने से उसमें प्राणों की इतनी सहनता नही थी, कि उस औषध के प्राण को अपने में वह सहन कर सकें, अपने में वह धारण कर सकें परन्तु उनमें इतनी सत्ता नही थी तो विचार-विनिमय यह हुआ क्या ऋषि ने, उसको अपने में पान किया और ऋषि ने पान करके देखो, वह जहाँ अश्विनी कुमारों ने दोनों ने शैलखण्डा, म्रेतकेतु, स्वाति वर्णा वंच वृतिका अस्वते मानो इसको अग्नि में तपा करके, जब इसको पान किया, तो उनका प्राण जो धीमा बन गया था, मानो मृतक बनने वाला था, उसको शनै-शनै प्राण आ गया और मृचिका औषध का स्वरूप मानो समाप्त हो

गया। तो जब समाप्त हो गया तो उसमें एक म्रहो वाचक एक औषध होती है, तो जो पर्वतों में प्रायः प्राप्त होती है, उसको पान करने के पश्चात मानो देखो, उनका हृदय और हृदय के जो ऊर्ध्वा भाग में, एक गुटकिका का जन्म हो गया था, उसका विनाश हो गया उसको प्राणसता ने देखो, आक्रमण करके उसको देखो, नष्ट कर दिया। तो मानो देखो, उस समय अश्विनी कुमारों ने कहा, क्या प्रभु! वह जो मृचिका औषध, उस मृचिका औषध में इतनी प्राण सत्ता कहाँ से आई? तो मुनिवरों! देखो, उस समय महात्मा सुधन्वा ने कहा कि उसमें मृचिका जो औषध है, उसमें मानो देखो, यह सूर्य से प्राण सत्ता आई है, क्योंकि सूर्य जितनी भी वनस्पतियां हैं, उनको प्राण सत्ता प्रदान करने वाला है, वह प्राण का द्यौतक है, तेजों का तेजोंमयी है, मानो वही तो उसे पान कराता रहता है। तो मृचिका औषध में, यह सूर्य के वह निकट होती है, सूर्य की जैसी किरण आई वह मानो देखो, उसका मुख ऊर्ध्वा में बन जाता हैं। प्रायः वह पर्वतों में प्राप्त होती है मृचिका औषध और उसको पान करने वाला मानो शनै-शनै पान करे, अन्यथा उसके प्राणान्त होने में कोई मानो देखो, द्वितीय वार्ची नही है, वह अपने में ही देखो, उस प्राणी को निगल जाती है। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार की औषधियों का विज्ञान प्रायः देखो, महाराज सुधन्वा के द्वारा था क्योंकि वह जहाँ महात्मा थे वहाँ वैद्यराज भी थे, वह अपनी वैद्यक ब्रहा मानो देखो, विज्ञानं भुषणं ब्रहे मानव! विज्ञान को अच्छी प्रकार जानते थे। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वार्त्ता जो हो रही थी इतनें में राजा रावण के विधाता कुम्भकरण उनके द्वार पर आ गएं और कुम्भकरण जी ने उन्हें प्रणाम किया, और मानो नमस्कार करके उनके चरणों की वन्दना में मानो रत्त हो गएं उन्होंने कहा-प्रभु! आप ऐसी वन्दना क्यों कर रहे हैं? उन्होंने कहा-प्रभु! मैं यह वाक् जानने आया हूँ आज मैं विज्ञान के वांगमय में से महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में से आ रहा हूँ, और महर्षि भारद्वाज मुनि ने मेरे से यह प्रश्न किया है, कि पूजा का तात्पर्य क्या है? यह पूजा क्या है? जिसका हम पूजन करना चाहते हैं मानो देखो, अपूजन करने से हमारी मृत्यु हो जाती है और पूजन करते हमें जीवन प्राप्त होता है। यह क्या है हम इसके रहस्यतम को नही जान सकें है। तो मानो देखो, महात्मा सुधन्वा ने वैद्यराज ने कहा कि पूर्व तुम प्रश्न करों मैं उसका सर्वत्र का उत्तर एक ही समय प्रदान करूंगा। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कि नही मुझे कोई विशेषत जानना नही हैं क्योंकि महात्मा भारद्वाज मुनि ने ऋषि ने मेरे से यह प्रश्न किया है क्या पूजा के तात्पर्य को जानों क्योंकि पूजा में जीवन है और अपूजा में मृत्यु है, इसके गर्भ में क्या है? मैं इसके गर्भ को जानना चाहता हूँ।

तो मेरे प्यारे! देखो, उस समय महात्मा ने सुधन्वा ने कहा मानो हे राजब्रहे हे राजकुमार! तुम विद्यमान हो अब मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूंगा। मानो देखो, पूजा का अभिप्रायः यह है क्या प्रत्येक वस्तु को रहस्यतम जान लेना चाहिए, जैसे एक मानव अध्ययन करता है, एक मानव पोथियों का अध्ययन करता है, उस पोथियों के अध्ययन में यह स्वीकार कर लेना चाहिए क्या पोथियों के अध्ययन करने से, हमारे जीवन को क्या प्राप्त होता है हमारे मनोप्रवृत्ति को क्या प्राप्त होता है? यदि हमें उसमें विषधर प्राप्त होता है, तो वह अध्ययन हमारे लिए विषधर बन करके रहता है, वह हमारे जीवन की आख्यिका को समाप्त कर देता है, एक मानव जब पोथी का अध्ययन करता है, और उस पोथी में ऋषि-मुनियों के जीवन चरित्र हैं, कर्तव्य का पालन है उसी पोथी में मानव का दर्शन है, और देखो, परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान उसमें निहित है, उसके अध्ययन करने से मानव के मस्तिष्क की ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण हो जाता है। और मानव की पोथियों का अप्रतम उनका अध्ययन करते-करते जब मानव की ग्रन्थियों का स्पष्टीकरण होता है, तो जब वह पवित्र अध्ययन है, वह मानव के जीवन को ऊँचा बना देता है। वह मानव के जीवन को पूजा में परिणत कर देता है, वह मानो उसी का वह पूजक बनता-बनता वह मोक्ष की आभा को प्राप्त हो जाता है। वह मोक्ष की पगडण्डी को प्राप्त करता हुआ, मोक्ष के निकट चला जाता है। तो मानो देखो, जब इस प्रकार मेरे पुत्रों! जब यह वाक् उन्होंने प्रगट किया उन्होंने कहा-प्रभु! मृतं ब्रह्म वाचाः उन्होंने

कहा वह एक ही पोथी है लेखनीबद्ध मे अन्तर्द्वन्द्व है, मानो देखो, जब मानव के चरित्रों का अध्ययन करते हैं, और ऋषि-मुनियों के कर्तव्यवाद में परिणत हो जाते हैं, जैसे हम वैद्यराज हैं, हमारा औषधि विज्ञान को जानना ही हमारा कर्तव्य है। मानो उसमें हमें रत्त रहना है, उसको गम्भीरता से जब हमारा अध्ययन होगा तो उसके विज्ञान में हम उसकी धाराओं में रत्त रह करके हमें एक ब्रह्माण्ड का स्पष्टीकरण हो जाएगा। और जब इस ब्रह्माण्ड का स्पष्टीकरण होगा, तो हमारा जीवन एक महानता में परिणत हो जाएगा। परन्तु देखो, वही पोथी है उसी पोथी को हम अकल्याण के लिए अध्ययन करते हैं, केवल मन तक वह सीमित रहती है, प्रकृति के आवेशों में चले जाते हैं, उसी पोथी में विलासता का वर्णन है, उसी पोथी में मानो देखो, मानव की धृष्टताओं का वर्णन है, अकर्तव्यवाद है, उससे हमें कोई लाभप्रद नही हो रहा हैं, वह लाभप्रद न होने से वही हमारे मृत्यु का मूल कारण बनती है। क्योंकि जब मानव के मस्तिष्क का अध्ययन करने से मस्तिष्क का स्पष्टीकरण नही होता ब्रह्माण्ड प्रभु का स्पष्टीकरण नही होता, हम ब्रह्माण्ड में रत्त नही रह सकते, तो मानो देखो, वह पोथी हमारे लिए मृत्यु को लिए हुए विद्यमान रहती है। एक पोथी मानव का जीवन ले रही है, तो एक पोथी मानव की मृत्यु ले रही है, इसी प्रकार मानो देखो, पूजा का अभिप्रायः यह है कि हमे उसका सदुपयोग करना है, जिसमें सत्य है निष्ठा है विवेक है, मानो जिसमें महानता की धारा है, वही तो मुनिवरों! देखो, वही तो मानव को जीवन है, उसी से मानव मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय देते हुए कहा था महात्मा सुधन्वा भी इन वाक्यों को कहा करते थे क्या मानव को जैसे औषध विज्ञान में परिणत होना है औषधियां के निकटतम जाना है। तो वह औषध मानो देखो, इसके हम समीप पंहुच गयें हैं, वही औषधि का हम पूजन करना चाहते हैं, पूजन क्या है? उसको देखो, वास्तविक स्वरूप में उसको लाना है, वास्तविक स्वरूप को ला करके उसके गुणों को अच्छी प्रकार हमें मानो चाहे हमे ला करके मानो कितनी भी पुट लगानी हो, तो मेरे प्यारे! देखो, जब पुट का वर्णन किया॰ तो मुनिवरों! देखो, वह बोले कुम्भकरण जी की देवं ऋषिवर यह पुट क्या होती है, उन्होंने कहा पुट उसे कहते हैं, जैसे हमने मानो रेचमृचिका, शैलखण्डा, रेणकेतु, स्वाति वृत्तिका और लाजवन्ती इन मानो पांचो औषधियों को हम ले करके मानो उसका खरल बनाते हैं, और खरल बना करके उसको देखो, उसकी हम एक वटिका बना लेते हैं, जब हम उसकी वटिका बना करके उसे अग्नि में तपा देते हैं। अब अग्नि में तपने से वह शुद्ध नही हुई है, परन्तु औषध को ले करके हम खरल करते हैं, खरल करके मानो देखो, उसमें स्वाति, मारकुण्डिका, वेचाम, त्रिचिका मानो दैखो इनका रस बनाते हैं, और रस में उस पिण्डिका को तपायी हुई को हम उसमें खरल करते हैं, और खरल करते-करते मानो देखो, जब व्रीत बन जाता है, तो मानव उसकी पुनः फिर कण्डिका बनाते हैं, कण्डिका बना करके उसे अग्नि में फिर तपा देते हैं, मानो देखो, उसे चन्दन की समिधाओं में उसे तपाते हैं, और तपाने के पश्चात मानो एक पुट लग गई, और उसको द्वितीय हमें पुट देनी है, निम्बिका ले करके वाचकेतु है, शैलव्रणा है, मानो देखो, इनके रस को फिर पुनः उसको खरल किया जाएं, खरल करके उसे मानो देखो, एक रेस्वान वृक्ष होता है, उसकी समिधा ले करके, उसमें तपाओ, तपाने के पश्चात पुनः खरल किया जाएं, मानो यह पुट लगती चली जाती हैं, तो जब सोलह पुट उसमें लग जाती हैं, तो मानो देखो, उस कण्डिका बन करके मानो देखो, जैसे हृदय का कोई रूग्ण हो मानो देखो, जैसे मंगलम् ब्रीहि जैसे यक्ष्मा रूग्ण हो, उसको मानो देखो, सहवंगा में ले करके उसको मानो देखो, उसको पान कराना चाहिए। उसको पान कराते समय मानो यह विचार रहे कि उसका मुख सूर्य के सम्मुख होना चाहिए, जब उसको पान कराया जाता है, तो उसके पान कराने के पश्चात मानो देखो, वह चालीस दिवस के पश्चात कितना यक्ष्मा हो मानो कितनी स्वाति हृदय की रूग्णता हो, उसका सबका स्पष्टीकरण हो जाता है। उसका पुनरूक्ति उद्धार हो जाता है, उसका पुनर्नमा बन जाता है, जैसे माता के गर्भ से उत्पन्न होने वाला बालक होता है, उसी प्रकार

मानो उसके चालीस दिवस क्या एक वर्ष के पान करने से उसकी वही दशा बनती है। जो बाल्य की बन जाती है, मानो देखो, उसमें निरकिका, कोसवन्त युवा पुनरूक्ति जीवन प्राप्त हो जाता है।

तो मैं इसीलिए औषधियों का वर्णन क्योंकि मैं बहुत पुरातन काल में क्या, हमारे यहाँ प्रायः वैद्यराज इसके ऊपर अन्वेषण करते रहते थे। आज मैं विशेष मानो देखो, मुझे भी कुछ, सूक्ष्म सा इन विचारों को अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है, मानो पुट बनाने का भी सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। विचार क्या है मानो देखो, जब वह अमृतं ब्रह्मे वह जब सुधन्वा ने इन वाक्यों का ऋषि देखो, वह राजकुमार के वाक्यों के उत्तर दिया, तो वह बड़े प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा-प्रभु! अब मैं पूजा के अभिप्रायः को जानना चाहता हूँ। उन्होंने कहा यह जो औषधियां है, यह इसकी पूजा कहलाती हैं, पूजा का अभिप्रायः यह है क्या इसकी पूजा करते रहो पुट लगाते रहो क्रियात्मकता में लाते रहो, अन्त में जब इसका पान किया जाता है, तो मानो वह सेवन ही मानव को जीवन प्रदान करता है। जीवन ही मानो अन्तिम परिणाम है, और वह उसकी पूजा का एक फल प्राप्त होता है, जिसकी जो पूजा करता है, वह उसके फल के लिए करता है, और वह फल उसे प्राप्त हो जाता है। उस मानव को जीवन प्राप्त हो गया।

तो मेरे प्यारे! देखो, जब महाराजा कुम्भकरण ने यह कहा कि अमृतो क्या पूजा का यही अभिप्रायः है, उन्होंने कहा पूजा के और भी अनन्य अभिप्रायः हैं, जैसे एक मानव परमपिता परमात्मा का पूजन कर रहा है, मानो शिव का पूजन करना चाहता है, आज के हमारे वेद के पठन-पाठन में शिवा अमृत की वार्त्ता हो रही थी। मानो शिव का वर्णन हो रहा था, तो उन्होंने कहा शिवं ब्रह्मवाहा देखो, शिव हमारे यहाँ शिव का पूजन करना है, शिव का अभिप्रायः है शिव नाम मानो पर्वतों को भी माना गया है, व्याकरण की दृष्टि से हम लोलुक्तियों में चले जाते हैं, तो मानो देखो, शिव नाम राजा का और पर्वतों का दोनों का माना गया है। शिव नाम की औषधि भी होती है जिसके निकट मानो देखो, पार्वती की पुट लगा करती है, वह पार्वती की पुट लग करके ही वह शिव अपने कल्याणकारी बनते हैं। वह दूसरों का कल्याण करते हैं, मानो देखो, जब तक पार्वती का उससे सन्निधान नही होता, जब तक यह कल्याण के लिए कुछ नही कर पाते।

हमारे यहाँ ऐसा माना गया है। पुरातन काल में क्या एक समय महाराज शिव ने मानो देखो, नृत्यं दण्डम ब्रह्मे वाहा देखो, एक नृत्त किया था जिसका दण्डवत नृत्त कहते थे, तो नृत्त के करने से ही मानो देखो, मृचिका जब और पार्वती ने उस समय अपना गान गाया पार्वती ने गान गाया और भगवान शिव ने नृत्त किया मानो दाण्डवत जब नृत्त किया, तो उसमें से जब ध्वनि का नृत्त होता था, उसी ध्वनि से शब्दों का निकास हुआ है। उसी से शब्दों की रचना हुई है, और उसकी रचना होने से ही मानो देखो, व्याकरण की आभा में मानव उनको लाता रहा है। वह मानो देखो, जो नृतं ब्रहे वाचप्रह्वी लोकां वह जो देखो, वह एक नृत्त हुआ था, किसी काल में जिसको दण्डता नृत्त कहते थे, उसको मानो देखो, वह नृत्त होने वाला पार्वती अपने में गान देखो, नृत्त करती रहती थी, और शिव का एक मानो देखो, वह नृत्त हुआ, नृत्त होने से दोनों के मिलन से मानो देखो, शब्दों की रचना हुई, और उन्ही शब्दों से मानो देखो, नाना प्रकार के शब्द सबसे प्रथम शब्द जो हैं। वह वनस्पति विज्ञान के ऊपर पंहुचे और वह वनस्पति जो विज्ञान है, वनस्पति जो धारा है, क्योंकि सबसे प्रथम जो सृष्टि का जन्म हुआ, वह स्थावर सृष्टि में माना गया हैं, जैसे चार प्रकार की सृष्टियों का वर्णन है, मानो जैसे हमारे यहाँ स्थावर है, जंगम है, उदभिज है, और अण्डज है यह चार प्रकार की सृष्टि हैं, इनके अवान्तर भेदन माने गएं हैं, परन्तु देखो, विचार क्या वह जो दण्ड हुआ वास्तविक जो दण्डवत हुआ मानो देखो, जिसको नृत्त कहते हैं, उसी के होने से मेरे प्यारे! देखो, वह सबसे प्रथम स्थावर सृष्टि क्या-क्या गुण हैं? यह कैसे मानो देखो, इस प्रकृति को अपने में धारण करती हुई, कैसे प्रकृति देखो, पृथ्वी की अग्नि को, कैसे धारण करती है? उसे धारण करने से ही क्योंकि सहन शक्ति, उसी के द्वार

पर आती है इसी प्रकार नाना प्रकार की औषधियां ऐसी हैं, जो मानव को, स्थिर कर देती है और मानव को अपने में स्थिर करके ही मानो देखो, अपने जैसा एक मानो देखो, सुदृढ़ बना देती हैं मानो इसी प्रकार हमारे यहाँ सबसे प्रथम एक लाहिणीका एक मानो औषध होता है उसका सबसे प्रथम जन्म हुआ है, उसमें देखो, वर्तमान काल में भी उसमें अग्नि की दाह विशेष रहती है, अग्नि की दाह विशेष रहती है, हिमालय में मानव का जन्म हुआ मानव का जन्म हुआ तो मानव ने सबसे प्रथम उस लसनिका को पान करके अपने जीवन को व्यतीत किया था, उसी से जीवन को व्यतीत करके मानो वही औषधियों में अपने में नृतिका में आता रहा जब वही नृतिका में आता रहा तो उसी के द्वारा हमारे यहाँ आयुर्वेदाचार्यों ने उस औषध को सबसे प्रथम माना है। परन्तु वह नाना प्रकार के रूग्णों में मानो क्रियाओं में आता रहता है, जितनी भी औषधियां है। उन औषधियों में मानो लगभग बहुत-सी औषधियों में उसका क्रियाकलाप होता रहा है, प्रत्येक वैद्यराज को क्रियात्मकता में लाता रहा है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ में जिस प्राणी को उसको पान किया, बुद्धिमानों ने पान किया, उन्होंने प्राण सत्ता उन्होंनें प्रदान की और प्रदान करके उन्होंने और स्थावर सृष्टि को जानने का प्रयास किया। यह मानो देखो, यह जो अन्न है, यह जो भिन्न-भिन्न प्रकार का जो अन्न मानव नित्यप्रति पान करता है। उसके प्रयोग की प्रतिभा मानो देखो, परिवर्तन होती रहती है, वह नाना रूग्णों में स्वस्थ प्राणी में भी मानो देखो, अपने क्रियाकलापों को सींच देता है, जैसे मानो देखो, हमारे यहाँ एक पौधा है, उसका आधा भाग मानो पशु को प्रदान कर दिया, और उसका जो ऊर्ध्वा में मानो अन्नाद है, वह मानव को पान कर लिया, तो मानव ने जब उसको पान करना प्रारम्भ किया तो ऋषि-मुनियों ने इसके ऊपर विचारा कि हम प्राणों की रक्षा करना चाहते हैं और प्राणों की रक्षा करते हुए ब्रह्मवर्चोसि का पान करते हुए हम मानो देखो, तपस्या में परिणत होना चाहते हैं। तो जिससे अन्न के मानो देखो, अन्न का रूपान्तर कर दिया, उन्होंने एक अन्न को मेरी प्यारी माता मानो औषधि बना करके वह औषध न रह करके अन्न बन करके माता तपाती रहती है, और उसको तपाने से विशेष प्राणसता देता है, **मानो देखो, वही अन्न उसे जल में अव्रत करते हुए रात्रि समय देखो, अपने में जल को सिंचन करता रहता है। प्रातःकालीन उसका मानो योगी जन खरल करते हैं, खरल करके उसका दुग्ध बना लेते हैं, और दुग्ध बना करके उसे मानो अग्नि में तपा करके वह उसे पान करते हैं तो प्राण सत्ता विशेष बन जाती हैं। वह प्राणों को वर्धक करने वाली वायु को विनाशता मैं परिणत करती हुई मानो देखो, योगीजन उसका पान करके और लेखनियाँ बद्ध करते रहे हैं।** मुझे स्मरण आता रहा है कणाद ऋषि के जीवन में भी प्रायः ऐसी ही प्राप्त होता है, याज्ञवल्क्य मुनि के जीवन में भी प्रायः ऐसी ही प्राप्त होता है, परन्तु देखो, यदि किसी प्राणी को किसी ऋषि को ऊर्ध्वा में गति करनी है और प्राणायाम की सत्ता में प्रवेश करना है तो मानो देखो, उसी अन्न को ले करके मानो जल में उसको अर्पित कर देते हैं, उसमें चन्द्रिका एक औषध होती है, जो मानो देखो, हिमालय की कन्दराओं में पूर्णिमा के दिवस उस औषध का मानो कृतिका ले करके मानो उसको ला करके जल में अर्पित कर देते हैं। उस अन्नाद के साथ इसी प्रकार एक सूर्याणि अच्युता एक औषध होती है, उसको भी पान कराने के लिए जल में अर्पित कर देते हैं, इसी प्रकार एक औषध का नाम कञ्चिका होता है, उसके फलों को ले करके फलों में से मानो देखो, अन्दर का जो उसका बीज रूप भाग है, उसको भी जल में परिणत कर देते हैं, और प्रातःकाल उसका खरल करते हैं, और खरल करके उसको पान करते हैं तो चार-चार दिवस तक मानव को क्षुधा ही नही लग पाती। जब क्षुधा नही लग पाती तो उसमें जो योगाभ्यास करते हैं, योगाभ्यास करते हैं, योगाभ्यास करके प्राण को अपने में सन्तुलित बना करके प्रभु के आँगन को प्रवेश करते हैं, प्रभु के द्वार पर जाने के लिए वह मानव अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं। इसी प्रकार आज मैं बेटा! कहाँ तक यह विज्ञान को मैं उच्चारण करूं। तो यह तो विशाल वनस्पतियों का विज्ञान है, मानो देखो, इसी प्रकार वह महात्मा कणाद में और याज्ञवल्क्य मुनि

महाराज ने इसी प्रकार इन औषधियों का पान करके बारह-बारह वर्षों के अनुष्ठान किए हैं। अनुष्ठान करने से उनके जीवन में मानो एक पुस्तिका की मानो देखो, उपमाएं देना हमारे लिए तो सुक्ति नहीं होगा हम मानो उसको अपने में रत्त हो करके, यही उच्चारण कर सकते हैं। क्या वह यह प्रियता में रत्त रहे हैं, मानो उसी प्रकार मैं बेटा! दूरी चला गया हूँ।

विचार यह दे रहा था, कि राजा रावण के विधाता ने मानो कुम्भकरण जी ने आगे यह प्रश्न किया कि महाराज! पूजा के रहस्यों को तो मैंने जान लिया है मानो पूजा का रहस्य तो इतना उच्चारण किया क्या सदुपयोग करना, जीवन में उपयोग आने वाला, जो क्रियाकलाप है चाहे वह औषध विज्ञान में हो, चाहे वह पठन-पाठन की प्रतिक्रियाओं में हो, परन्तु देखो, वही हमारे लिए पूजन है, उसका पूजन करना उसका सदुपयोग और अपने जीवन में क्रियात्मकता में लाना मानो देखो, उसको विशेषकर माना गया है, इस प्रकार उन्होंने अपना वर्णन करते हुए कहा कि-प्रभु! यह हमने जान लिया, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ क्या मैं इस समय देखो, अनुसन्धान कर रहा हूँ मैं मानो देखो, इस समय विज्ञान की विशेषताओं को जानना चाहता हूँ तो मुझे कौन-सी औषधि का पान करना चाहिए। क्योंकि मैं भी अनुष्ठान करना चाहता हूँ।

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा बहुत प्रियतम देखो, सुधन्वा ने कहा हे कुम्भकरण जी तुम जिन औषधियों का पान करना चाहते हो मुझे तुम यह निर्णय करो, कि मैं यह करना चाहूँगा, उसके पश्चात उन्होने कहा-प्रभु! मैं भारद्वाज मुनि के यहाँ विज्ञान में रत्त रहा हूँ, और मैं विज्ञान का विद्यार्थी हूँ, मैं विज्ञान में रत्त रहना चाहता हूँ, ऊँची-ऊँची उड़ान उड़ना चाहता हूँ, जिससे मैं मानो सूर्य की तरंगों में जो नृत्त हो रहा है, जो परमाणु बह रहा है, उस परमाणुवाद को मैं जानना चाहता हूँ। जो चन्द्रमा की कान्ति में परमाणु बह रहा है, उसे भी जानना चाहता हूँ, जो अग्नि की धाराओं में परमाणु बह रहा है, उसको भी जानना चाहता हूँ, जो मानो पृथ्वी की तरंगों में गति गर्भ में जो परमाणु बह रहा है, गर्भ में उसे भी जानना चाहता हूँ, तो मेरे प्यारे! महात्मा ने कहा क्या हे राजकुमार! तुम तो सर्वत्र विज्ञानवेत्ता बनना चाहते हो उन्होंने कहा प्रिय मेरी इच्छा प्रायः ऐसी ही है मेरे प्यारे! देखो, उस समय महात्मा सुधन्वा ने वैद्यराज ने यह कहा कि हे राजकुमार कुम्भकरण! तुम ऐसा करो क्या जब तुम भयंकर वन में जाओ, तो उस समय चार औषधियों का पान करो, तुम अन्नाद को पान न करो यदि तुम विज्ञानवेत्ता बनना चाहते हो, तो उन्होंने कहा-प्रभु! वह कौन-सा मंगलं ब्रह्मे वाचा वस्तु सम्भो भागां ब्रहे वृत्ति सम्भवा तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि कौन-सी दशा में तुम हिमालय में जाना चाहते हो? जहाँ तुम्हारा अनुष्ठान होगा, उन्होंने कहा कि-प्रभु! मैं मानो देखो, हिमालय में देखो, उत्तरायण में जाना चाहता हूँ, मेरा उत्तरायण में मानो क्रियाकलाप होता रहता है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा यदि तुम उत्तरायण में जाना चाहते हो तो उत्तरायण में जाते हुए तुम सोमलता एक औषध होती है। तो उत्तरायण में ही उत्पन्न होती मानो देखो, तुम अमृत को ले करके मानो तुम सोमलता के साथ ही एक वासकेतु एक देखो, औषध होती है, वासकेतु औषध को ले करके एक शंखहुलिका होती है, शंखहुलिका मानो बाहर प्रकार की होती है, शंखहुलिका जिस पर नील वर्ण और श्वेतवर्ण दोनों का पुष्प आए, वह मानो शैलखण्डा को लेना और जिस मानो देखो, इसी के साथ में हिमालय में ही एक मोद नामक वृक्ष होता है, उसके पतों को ले करके उसे अग्नि में तपा तपा करके खरल करके, उसका पान करना मानो प्रातःकालीन करोगे, तो तुम अपने कार्य में रत्त रहोगे, तुम्हें अन्न की क्षुधा समाप्त हो जाएगी, मानो देखो, अन्न की चिन्ता न रहती है, तो मानो स्वतन्त्र रूपों से क्रियाकलाप करता है।

तो मेरे प्यारे! मानो देखो, उन्होंने कहा-प्रभु! यह वाक् आपने पूर्व काल में भी मुझे वर्णन कराया था तो मानो देखो, उन औषधियों का पान उन्होंने किया मानो देखो, विज्ञान में इन औषधियों का अपना महत्व होता है,

क्या जितना सूक्ष्म आहार वनस्पतियों का पान करोगे तो उतने ही तुम्हारे मस्तिष्क की जो ग्रन्थियाँ है, उनका स्पष्टीकरण हो जाएगा, और उनका स्पष्टीकरण हो करके तुम्हारी विज्ञान में ऊर्ध्वा गति बन जाती है, ऊर्ध्वा में रत्त रहने वाला क्योंकि विज्ञान अपने में अधूरेपन में रहता है, जब तक उसके साथ में तपस्या नही होती, यदि तपस्या होती है, तो विवेक होता है, आत्म चिन्तन होता है, आहार चिन्तन होता है, तो वह सर्वांग ही मानो विज्ञान को जानने लगता है। जैसे विद्यालय में विद्यार्थी अध्ययन करता है, अध्ययन करके जब प्रातःकालीन मानो उसको योगाभ्यास में परिणत कराया जाता है। उसको अंगों से अंगों के अभ्यास में लगाया जाता है। उसके पश्चात वह अध्ययन करता है, तो उसकी सर्वांग वह विद्या हो गई है। सर्वांग विद्या क्योंकि वेद का पठन-पाठन करता है, दर्शनों को वह चिन्तन में लाता है, उसकी सर्वांग विद्या बन गई है, और वह जब तक क्रियात्मकता में नही लाता, तो उसकी सर्वांग विद्या नही बन पाती। तो इसी प्रकार हमारे आचार्यों ने मानो सुधन्वा ने यह कहा, हे कुम्भरकण! तुम सर्वांग विद्या को पान करना चाहते हो तो इस प्रकार का आहार करो इस आहार के करने से मानो देखो, तुम्हारा मस्तिष्क तुम्हारा प्राण का जो संचार है, वह शुद्ध और पवित्र रहेगा और जितना विज्ञान है, वह मन और प्राण के ही मध्य में गमन करता है। जितना संसार का विज्ञान है, चाहे वह पृथ्वी के गर्भ में हो, चाहे वह मानो जल के आंगन में हो, चाहे वही देखो, मांगलं ब्रह्मे चाहे वह अग्नि की धाराओं में चाहे वह वायु की तरंगों में हो, चाहे वह अन्तरिक्ष में गमन करने वाला परमाणुवाद हो, वह सर्वत्र मानो अपनी-अपनी आभा में निहित रहता है। तो वह अधूरे पन में मानव का जीवन नही रहना चाहिए। तो इस प्रकार मानो जब सुधन्वा ने यह वाक् प्रगट कराया, तो उन्होंने इनके चरणाबिन्दु मानो उनके चरणों की वन्दना की, उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, विचार यह चल रहा था हमारा क्या हम मानो अपनी भूमिका को विशुद्ध रूप से बनाना चाहते हैं, और वह बनना चाहे कि हम भिन्न-भिन्न औषधियों के ज्ञान और विज्ञान के जानने वाले बनें, और वह जाना जब जाता है, जबकि मानव अपने को क्रियात्मक बना लेता है, जब तब क्रियात्मक मानव का जीवन नही बन पाता, क्रियात्मकता में नही आ पाता, तब तक मानवीय तथ्य उसका ऊँचा नही बनता।

तो इसी प्रकार मैंने बहुत पुरातन काल में मैंने निर्णय दिया, आज भी मैं उन वाक्यों की पुनरूक्ति कर रहा हूँ, आज भी मैं पुनः से विचार दे रहा हूँ, तो मानो देखो, हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की औषधियों के विज्ञान में जाना तो एक बेटा! एक भयंकर वन है। उस वन में तो मैं जाना नही चाहता हूँ। तुम्हें यह विचार देने के लिए आया हूँ, क्या यह जो मानो देखो, भिन्न-भिन्न प्रकार का जो औषध विज्ञान है, यह मानवीय मस्तिष्को में प्रायः मानो नृत्त करता रहा है। परम्परा से करता रहा है, कोई यह नवीन वाक् नही है, मानो नवीनता नही है, मानो देखो, सुधन्वा ने इसका अनुसन्धान किया, सुधन्वा के जो गुरु थे, वह शोभकेतु थे वह भी अपने में अनुसन्धान करते रहते थे, सोमकेतु उनसे भी ऊर्ध्वा में रहते थे, वह मानो देखो, प्राणायाम देखो, कुम्भक में रत्त रहते थे, परन्तु देखो, औषधियां उनके समीप अंग संग आती रहती थी प्राण सत्ता मेरे प्यारे! देखो, वह खेचरी मुद्रा से भी प्राप्त की जाती है। औषधियां मेरे प्यारे! नासिका के सूर्य स्वरों से भी पान की जाती है, औषधियां चन्द्र स्वरों भी पान की जाती है, मानो देखो, खेंचरी मुद्रा मानो देखो, जल को अन्तरिक्ष में से ग्रहण कर लेती है वह शीतली प्राणायाम करने से, उसकी कृतिका मानो उसमें मिलन करके, वह रेचक और कुम्भक की धारा में परिणत हो जाता है। तो परिणाम क्या है बेटा! मैं इस भंयकर वन में जा रहा हूँ कि कोई बहुत पुरातन काल में बेटा! उन वाक्यों की चर्चा होती रहती थी मानो यह ऋषि-मुनियों का अनुपम विषय है, यह विषय ऐसा विषय रहा है, जो मानो देखो, ऋषि-मुनियों के विचारधीन रहा है, और वह विचारते रहे हैं, मानो देखो, उसको पान और क्रियाओं में लाते रहे हैं। आज का विचार हमारा क्या कह रहा है? कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, परमात्मा के उस विज्ञान को

जानना, जिसे हम वनस्पति विज्ञान कहते हैं, ये वनस्पति विज्ञान मानव के मस्तिष्क की ग्रन्थियों को स्पष्टीकरण करता हुआ, वह मोक्ष की पगडण्डी में ले जाता है। मोक्ष की, क्योंकि पूजा ही मोक्ष की पगडण्डी का एक मार्ग है क्योंकि जब तक मानव पूजा में रत्त नही रहता, तो पूजा न होने से मानो देखो, उसकी मोक्ष की पगडण्डी प्राप्त नही होती। जीवन शक्ति हमें प्राप्त मानो देखो, वनस्पतियों से होती है वह अन्न से ले करके जितनी भी संसार की वस्तुएं यह सब मानो देखो, हमें प्राण सत्ता को प्रदान करने वाली हैं, उसी प्राण सत्ता में रत्त रह करके हम अपने जीवन को महान बना सकते हैं। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारियों को विद्यालयों में प्रायः यही तो कराया जाता है। इसी का विज्ञान, उनके समीप लाया जाता है। तो ब्रह्मचारी अपने में ब्रह्मवर्चोसि का पान करते हुए, प्रभु के निकट जाने का प्रयास करते रहते हैं परम्परागतों से बेटा! जब हम अपने विद्यार्थी जीवन में थे तो मानो आचार्य एक-एक मानो वह पल और घड़ियों के आधार पर हमें शिक्षार्थी की आभा में निहित कराते रहते थे। प्रायः मुझे वह काल स्मरण आता रहता है उस काल का जब अपने विद्यार्थी काल को स्मरण करता हूँ तो प्रायः ऐसा प्रतीत होता है, कि जैसा ब्रह्माण्ड, हमारे समीप नियुक्त कर दिया हो, आचार्य जब मानो ब्रह्माण्ड की चर्चा, एक औषधि कर चर्चा करते थे, एक औषधि विज्ञान की उन्होंने चर्चा की, एक समय जिस औषधि का नाम मानो मौमकेतु होता है वह मौमकेतु मानो हिमालय की कन्दराओं में होता है वह कहीं से आचार्य लाए और ला करके उसको मानो जल में मानो उसको खरल किया, उसके जो परमाणु थे मानो उसके जो कण थे, उनको उन्होंने विभाजन किया, और विभाजन मानो अग्नि की पुट लगा-लगा करके, उसका जो विभाजन किया, तो उसमें ऐसा-ऐसा परमाणु उन्होंने हमारे समक्ष नियुक्त किया एक-एक परमाणु में मानव के जीवन के जीवन नृत्त कर रहे हैं, मानव जैसा वह औषध इतना विशाल हमें प्रतीत होता है, क्योंकि ब्रह्माण्ड की कल्पना करना, उस औषध की कल्पना करना, हमारे लिए मानो कोई आश्चर्य नही होगा। तो इस प्रकार वह नृत्त कराते रहते थे, जब तक आचार्य कुल में प्रवेश हो करके आचार्य इस प्रकार के ब्रह्माण्ड का स्पष्टीकरण नही कर पाता, जब तक मानो देखो, ब्रह्मचरियों का स्वास्थय और जब तक विवेकता उत्पन्न नही हो सकती। मानो उनका पान करने का औषध पवित्र नही होगा तो तब तक मुनिवरों! देखो, वह विवेक में परिणत नही होंगे और जब विवेक नही होगा। तो मानव अपने जीवन में सफलता को प्राप्त नही होगा जिस क्रियाकलाप को हम करना चाहते हैं, उसमें विवेक हो, विडम्बना हो, उसमें एक महान सत्य की एक महान धारा हमारे समीप होनी चाहिए, तो इस प्रकार का विज्ञान मेरे पुत्रों! हमारे समीप आता रहा है, आज मैं विशेष विवेचना में न जाता हुआ, विचार यह दे रहा हूँ, क्या मानव जब गमन करता है, और विवेक त्यागता है, देखो, उन औषधि विज्ञान के सम्बन्ध में तो मुनिवरों! देखो, उसे जहाँ वह अपने पगों को पृथ्वी पर वर्णित करता है वहीं उसे औषधियां प्रतीत होने लगती हैं मेरे प्यारे! देखो, सुधन्वा जब मानो गमन करते थे हिमालय की कन्दरओं में चले जाते तो औषधियों से वार्त्ता करते-करते चले जाते थे। हे औषध! तू इस प्रकार की है क्योंकि अपामार्ग प्राप्त हो गया, तू अपामार्ग के समीप विद्यमान हो करके वह वार्त्ता करने लगते थे। हे अपामार्ग! तू इस गुणों का है मानो तू दन्त रोगाम ब्रहियों का है, हे अपामार्ग! तू हृदय की ग्रन्थियों को स्पष्ट करने वाला है, तू मानो मिष्ठान के समीप जाता है, तो तेरा गुण और परिवर्तित हो जाता है, जब तू मानो देखो, तेरे में दूसरी औषधियों का हम तुलि अंगुरा औषध का मिलान कर देते हैं। तो तू मानो देखो, विशालता को परिणत हो जाता है। तो मानो देखो, अपामार्ग के समीप आ करके एक-एक मानो एक-एक माह तक उस औषधि के द्वारा विद्यमान हो करके उसके गुणों का वर्णन करते रहते थे।

तो आज बेटा! मैं विशेष चर्चाएं देने नही आया हूँ, अपने विचारो की भूमिका में यह वर्णन अवश्य करता हूँ, क्या मुनिवरों! यह जितना भी प्रभु का राष्ट्र है, प्रभु का विज्ञानमयी जगत है, यह बड़ा विचित्र है, इसीलिए हमें प्रभु

का पूजन करना चाहिए, और प्रभु के पूजन में भी प्राप्त हो जाएगी यदि हम प्रभु से विमुख रहते हैं, प्रभु को विमुख अपने से दूरी कर देते हैं। तो हमारे जीवन में मानो सार्थकता नही रह पाती। हमारा जीवन तो उस काल में पवित्र बनता है, जब प्रभु को हम एक-एक कण-कण में दृष्टिपात करते हैं, अपने से दूरी नही कर पाते, वह हम पाप भी नही करते, परन्तु हम संकीर्णता में नही जाते, तो वह देखो, औषध विज्ञानमयी रत्त रहने वाला प्रभु है।

तो मेरे प्यारे! देखो, यह आज का वाक् अब मैं समाप्त करने जा रहा हूँ, आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः हमारा क्या है मुनिवरों! देखो, आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह क्या मुनिवरों! देखो, हमें औषध विज्ञान में महान परिवर्तित करना चाहिए। एक अन्न है, वह अन्न के रूप में भी हैं, औषधियों के रूप में भी है, मानो उसको कोई प्राणायाम के लिए पान कर रहा है। कोई उसको मानो जीवीका के लिए पान कर रहा है, कोई विलासता के लिए पान कर रहा है, कोई अपने प्राणों को सूक्ष्म बनाने के लिए मानो पान कर रहा है। वही एक औषध है, उसके भिन्न-भिन्न प्रकार के स्वरूपों के लिए पान कर रहा है, उसके भिन्न-भिन्न प्रकार के मार्ग हैं। परन्तु देखो, अपने-अपने मार्ग से पान कर रहा हैं, मानव मुनिवरों! देखो, यह आज का विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा हैं।

विचार-विनिमिय क्या है कि हम अपने प्रभु का गुणगान गाते हुए प्रभु जो विज्ञानमयी स्वरूप है, जो विज्ञानवेत्ता है, जिसका विज्ञान ही आयतन माना गया है, हम उस प्रभु की याचना करते चले जाएं। यह है बेटा! आज का वाक् अब समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः यम शना रथं आभ्यां गतौ मां ईषणा गा याः ओ३म् मनु द्यौ सर्वा इदम् मया ओ३म् यशो व्रतान्मानु।

११ वनस्पति से दीर्घ आयु ०५ ०७ १९८५

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भांति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन किया जाता है क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रह है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, मानो वह चेतना अपने में रत्त हो रही है। जो इसको क्रियाशील बना रही है, तो वह क्रियाशील होने से मानो वह जड़ जगत और चेतनता में दोनों में रत्त रहती है। तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा है, कि मानव को उस चेतना में रत्त हो जाना चाहिए। जिस चेतना में हम चेतनित हो करके अपने में महान और वशिष्ठ कर्म करते चले जाते हैं। और उन कर्म करने का परिणाम यह होता है कि हमारी ऊर्ध्वा गति बन जाती है। हम प्रायः ऊर्ध्ववेत्ता बन जाते हैं, जिस ऊर्ध्ववेत्ता बनने के पश्चात जीवन में एक महानता का प्रायः दर्शन होता है। जब हम उस मानवीय दर्शन के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ करते हैं, तो सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान हमारे समीप आना प्रारम्भ हो जाता है। और हम उस अगाध गम्भीर समुद्र में परिणत हो जाते हैं। जहाँ मानव अपने में सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है, और शान्त आत्मा बन करके हमारे एकोकी प्रभु का स्मरण रहता है। मानो हम पापां जम्ब्रहे पाप पुण्य कर्मों में दोनों में एक ही रसता दृष्टिपात करने लगते हैं,

तो मानो बेटा! वेद का मन्त्र हमें कुछ प्रेरित करता रहता है और हम उससे प्रेरणा पा करके नाना प्रकार की उड़ाने उड़ने लगते हैं परन्तु आज का हमारा वेद का मन्त्र उसी मानो स्थावर सृष्टि में ले जा रहा है, चाहे वह स्थावर सृष्टि इस पृथ्वी मण्डल में हो, चाहे वह नाना पृथ्वियों में क्यों न रत्त रहने वाली हो, एक सा ही वह क्रियाकलाप करती रहती है, परन्तु और भी नाना प्रकार के लोक है, जिन लोकों में औषध विज्ञान का, अपना-अपना महत्व माना गया है, परन्तु हमारे यहाँ, पृथ्वी मण्डल पर, मानो स्थावर सृष्टि, जंगम में रत्त रहती है, और जंगम सृष्टि अण्डज में रत्त रहती हैं, और अण्डज मुनिवरों! देखो, स्वेदज में ओत-प्रोत रहती हैं। ये चारों प्रकार की सृष्टि एक दूसरे की पूरक हैं, एक दूसरे के आपातकाल में मानो यह क्रिया में आनी प्रारम्भ हो जाती है तो जब हम इनके ऊपर हम विचार करते हैं, मानो कोई कोई औषध तेजोमयी कहालाती है कोई-कोई औषध शीतलता में रत्त रहने वाली है मानो कोई औषध मेरे पुत्रों! देखो, उष्णा तेजमयी रत्त रहने वाली है, कोई मानो औषध जो गतिशील रहती है जैसे वायु अपने में गतिशील है, मानो कोई औषध ऐसी है, जो दूसरे वृक्षों की, अथवा दूसरी वनस्पतियों के परमाणु और शक्ति को अपने में धारण कर लेती है। तो मुनिवरों! ये तुम्हें जानकारी हो गई होगी हमारे यहाँ वेदमन्त्रों में मानो यह नाना प्रकार के गुणाधानम होते रहते हैं, और इन गुणाधानम में अपनी-अपनी बड़ी विशेष विशेषता रही है मेरे प्यारे! जहाँ पार्थिव तत्त्व की आभा में रत्त रहने वाला वृक्ष है, जहाँ आपोमयी ज्योति जो रसों का स्वादन करने वाला है उसमें प्रायः जड़ता रहती है, मुनिवरों! देखो, तेजोमयी, शीतलमयी, उष्णमयी यह नाना प्रकार की मयी-मयी का वर्णन आता है। तो देखो, जैसे हमारे यहाँ प्रकाशमयी औषधियों का वर्णन आता है जिसमें मानो सूर्य के परमाणु सूर्य की नाना प्रकार की कान्ति विशेष होती है। तो हमें विचारना है कि हमें यह औषध, उस प्राणी को प्रदान करानी है जिसका तेज विहिन हो गया है, जो तेज से रहित हो गया है, और वह पुनः से तेज को अपने में लाना चाहता है, तो वह उन औषधियों का पान करने से पुनः, वह तेजोमयी धारा को अपने में अपनाने के लिए तत्पर हो जाता है। परन्तु एक मानव, एक औषध जो शीतलतव कहलाती है, वह शीतली मानो उसका सम्बन्ध प्रायः चन्द्रमा से होता है, उसका समन्वय वर्षा मानो हेमन्त ऋतु से होता है, तो वह जो औषध है वह मानो देखो, वह प्राणी पान करता है जिसमें अग्नि प्रदीप्त हो गई है, अग्नि प्रचण्ड हो गई, मानो शीतलता का अभाव हो गया है,

तो उन औषधियों का प्रातःकाल, वह सेवन करता है, मानो सेवन करने से शीतलता आना प्रारम्भ हो जाता है तो मानो इसी प्रकार एक वायु वर्ण ब्रहे एक औषध मानो जो स्थिर रहने वाली है, जो स्थिर रहने वाला जैसे अन्न है मानो जैसा मैंने पूर्व काल में निर्णय कराया, मानो उसी औषध के सन्दर्भ में हम जब प्रवेश करते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है, मानो अभ्योदय हो रहा है, जैसे मानो अभ्योदय होने से, मानव के जीवन में एक प्रतिष्ठा वाले वाक् प्रारम्भ हो जाते हैं, वह स्थिर चित्त वाला प्राणी, उन्हें पान करता है।

मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! महाराज सुधन्वा के हृदय में यह वाक् आया कि मुझे अपने को शान्त चित्त करना है, तो मानो एक समय वह वनों में चले गएं और वह वनों में जा करके हिमालय की कन्दराओं में मानो उन्होंने अपने में अनुभव किया क्या मुझे शीतलतव औषधि को पान करना है जिससे मेरा चित्त मानो एक स्थिर बन जाएं, मेरी मेधामयी, ऋतम्भरामयी, एक दूसरे में ओत-प्रोत करके, मैं शान्त चित्त वाला बन जाऊं, शान्त आत्मा वाला बन जाऊं, तो मानो देखो, इसके ऊपर, वह भयंकर वनों में जा करके इसी वाक् को ले करके, वह नाना प्रकार की उन वनस्पतियों को एकत्रित करने लगे, जिन वनस्पतियों को एकत्रित करने से, जिनको शान्त मानो देखो, औषध कहा जाता है। जो मानो देखो, सान्त्वना को प्राप्त करता हुआ, अपने में ओजस बनता हुआ, मानो जैसे चाक्राणी एक वृक्ष कहलाता है, जो हिमालय में, रत्त रहने वाला है मानो वह शान्त रहता है, इसी प्रकार त्रेणकेतु एक तुम्भा नामक एक वृक्ष होता है, वह तुम्भा नामक वृक्ष भी शान्त रहता है, परन्तु देखो, उनके पंचांगों को ऋषि-मुनि अपने में पान करते रहे रहें हैं, तो मानो चित्त की प्रवृत्ति सान्त्वना को प्राप्त हो जाती है, वह चित्त की प्रवृत्ति में जब सान्त्वना हो जाती है जैसे अपामार्ग को जो रस है वह भी मानो सान्त्वना में रहता है और उसके शान्त रहने पर अपने में मानो देखो, वह शान्तचित हो करके अपनी प्रतिभा में प्रतिष्ठित हो जाता है।

तो विचार-विनिमय क्या, मैं विशेषता में नही, केवल विचार यह मानो देखो, स्थिर मानव का चित्त होना चाहिए, स्थिर चित्त वाला आत्मा में ही लीन रहता है। आत्मा में चिन्तन करता रहता है। उसका आत्म बल बलिष्ठता में परिणत होता है मानो वह देखो, दुखम, सुखम, ईर्ष्या, द्वेष, राग मेरे प्यारे! देखो, सब में वह समकालीन रहता है। वह सम रहता है शान्तचित हो जाता है तो वह आत्मज्ञानी के तत्त्ववेत्ता पुरूष कहलाता है वह तत्त्ववेत्ता जो पुरूष है, उसके लिए कोई कर्म नही व्याप्त है, वह कर्मों से उपराम हो गया है, वे परमपिता परमात्मा में, मानो रत्त रहता है, अपनी आत्मचेतना में रत्त रहता है, तो वह मानो देखो, वह उन औषधियों को पान करने से मानव का हृदय शान्त रहता है, अशान्त नही रह पाता और शान्त हृदय ही मानव को देखो, इस मुक्ति की पगडण्डी कहलाता है आज कोई भी मानव मानो देखो, मोक्ष को प्राप्त करना चाहता है मोक्ष की उस महान पगडण्डी को ग्रहण करना चाहता है। तो उसे अपने में शान्त चित्त रहना है शान्त चित्त रह करके अपनी आभा में निहित हो करके अपने में रत्त रह करके मेरे पुत्रों! देखो, अपनी आभा में निहित रहता है।

तो आओ, आज मैं शान्त चित्त की वार्त्ता प्रगट कर रहा था, विचार दे रहा था कि मानव को शान्त चित्त रहना चाहिए औषधियों का सेवन करते हुए मानो उसमें ही एक गुड़ाकेशा नामक एक औषध होती है उसके पान करने से मानव के हृदय से अग्नि का संचार विशेष बन जाता है। उस अग्नि का जो संचार है वह मनोनीता में परिणत होता हुआ अपने में अभ्योदय आभा में रत्त रहता है ।तो मेरे प्यारे! जिसमें हम अपने मानवीय दर्शन मानवीय चित्तता को अपने में धारण करते रहते हैं। तो विचार-विनिमय क्या है मेरे प्यारे! वह शान्त चित्त की एक अवस्थिति कहलाती है एक मानो देखो, गतिशील रहने वाला मानव हर समय गतिशील रहता है एक औषध है जो गतिशील रहती है जैसे मेरे प्यारे! जिस भी वस्तु को तुम जैसे वांचो नामक एक औषध कहलाती है वह जो माणक नाम की औषध है, वह हिमालय की कन्दराओं में प्राप्त होती है, गुड़ाकेश, और देखो, मणीकेश, सोमलता इन

सबका एक रस बनाया जाता है, वह गति करने वाली हैं, मानो देखो, वह जो मानव पान करता है, उसका मस्तिष्क, हृदय दोनों गतिशील हो जाते हैं, मानो प्राण के संचार को ले करके मन गतिशील हो रहा है और मन मानो इस ब्रह्माण्ड रूपी समुद्र में मानो देखो, अघात, अपने में रत्त हो जाता है और उसमें से मानो वह निकास करके लाता है, रत्नों को ला-ला करके मानव को नई उपज कर देता है, जैसे एक मानव किसी वस्तु को नही जानता और वह मानो देखो, मन प्राण के समीप जा करके, गतिशील बनता है, वायु के गुणाधानम उसमें हो गएं हैं, तो मानो देखो, वह गतिशील बनता हुआ गति को लाता हुआ गतिशील बन करके ही मेरे प्यारे! वह अघात ब्रह्माण्ड में से नवीन-नवीन ज्ञान और विज्ञान को लाता है, अपनी हृदय स्थलियों में प्रवेश करके, इस हृदय का समन्वय प्रभु के हृदय से करता हुआ, वह नवीन नवीन मानो देखो, वह औषधियों को पान करके नवीनता को प्राप्त करता है। गति को लाता है। शरीर में गतियां मानो कहीं चन्द्रमा की कान्ति में गति करने लगते है, कहीं मानो सूर्य की किरणों में वह गतिशील बन जाता है।

महात्मा ध्रुव की चर्चाएं स्मरण आती रहती हैं, जब महात्मा ध्रुव जब अपने पूज्यपाद नारद मुनि के समीप पंहुचे, तो नारद मुनि के समीप वह मानो सौतेली माता के कष्ट से मानो व्याकुल हो रहे थे, भगवान नारद मुनि महाराज ने कहा कहो महात्मन् ब्रह्मचारी कैसे रूधन कर रहे हो, उन्होंने कहा-प्रभु! मैं अपने को गतिशीलता चाहता हूँ। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने यह गुड़ाकेश मानो यह नाना औषधियों को जो मैंने तुम्हें यह वर्णन कराई इन औषधियों का वह खरल बना करके नारद जी उसे पान कराते रहते थे। उनका मानो छह माह तक इन औषधियों के खरल को पान करते हुए वह प्रातःकालीन मानो देखो, कणक को ले करके उसे जल में वर्णत करते हुए मानो उसका सन्निधान करके अग्नि में तपा करके पान कराते रहे। देवर्षि नारद मुनि ने छह माह इस प्रकार औषध को पान करा करके मानो देवर्षि नारद मुनि का वह शिष्य मानो गतिवान बन गया, एक समय मानो जब दृष्टिपात किया तो सूक्ष्म प्राणों के साथ कुम्भक और रेचक के साथ मानो देखो, वह सूर्य की किरणों के साथ मानो गति कर रहा है, वह गतिवान हो करके एक समय रात्रि के काल में पान किया गया। दृष्टिपात किया गया, क्या वह मानो देखो, चन्द्रमा की कान्ति में, कान्ति के आभा ले करके ऊर्ध्वा में गति कर रहा है। जब गति करता हुआ तो मेरे प्यारे! वह औषध गतिवान कहलाती है, तो नाना प्रकार का जो औषध विज्ञान है, जिसमें नाना प्रकार के गुण इसी प्रकार जो देवता बनना चाहता है, वह भी औषधियों का पान करने लगता है, पृथ्वी के विज्ञान में क्या प्रभु के राष्ट्र में नाना प्रकार का यह विज्ञान निहित रहता है। तो इसमें रत्त रह करके महात्मा ध्रुव ने अपने जीवन में गतिशील बन करके, वह वैज्ञानिक बने, परन्तु वह योगेश्वर बने एक समय मानो देखो, वह अपने में योगाभ्यास कर रहे थे। अपने में मानो वह किरणों के द्वारा गति कर रहे थे कहीं से भ्रमण करते हुए महाराज उतानपाद भ्रमण करते हुए, मानो देवर्षि नारद मुनि के उस आश्रम में आ गएं आश्रम में आ जाते के पश्चात वह महात्मा ध्रुव को जान नही पाया, यह कौन है? मानो जो योगाभ्यास में उसके शरीर जीर्ण हो करके एक अस्थियां रह गई थी। अस्थियां रह गई, परन्तु वह बलिष्ठ बन गई थी, आत्म बल बलिष्ठ बन गया था, विज्ञान में गतियां हो गई, आत्म विज्ञान में गति हो गई। मानो देखो, किरणों के साथ प्राणायाम के द्वारा वह गति करने लगे तो जब एक समय रात्रि वह रात्रि समय वहीं उन्होंने वास किया और उतानपाद ने जब वास किया तो मानो देखो, पूर्णिमा का दिवस था पूर्णिमा के दिवस में उन्होंने अपने मानो एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके अपने में योगाभ्यास किया योगेश्वर योगाभ्यास करने से मानो उन्होंने खेचरी मुद्रा रेणवृत्तिका मुद्रा मानो देखो, वह कुम्भक और रेचक में परिणत हो करके, मानो उन्होंने नासकृतिका एक मुद्रा होती है, उस मुद्रा को खेचरी मुद्रा का मानो पुट दे करके, जब उसको सिंचन किया जाता है तो वह मानो देखो, वह चन्द्रमा की नाना किरणों में गति कान्ति के साथ वह उड़ान उड़ता है। जब

महाराज उतानपाद ने इस प्रकार उस महान योगेश्वर को दृष्टिपात किया, मानो देवी सम्पदा वालों को इस प्रकार जब वह चन्द्रमा की कान्ति के द्वारा वह दृष्टिपात करने लगे तो महाराज उतानपाद आश्चर्य में चकित हो गएं, मानो प्रातःकाल हुआ मानो प्रातः काल मानो देखो, कहीं से नारद मुनि भी भ्रमण करते हुए आ गएं महाराज देखो, वह उतानपाद को दृष्टिपात किया, नारद मुनि के चरणों को स्पर्श करके कहा क्या प्रभु! यह कौन योगेश्वर है, जो इस प्रकार का योगाभ्यास करते हैं, जो इस प्रकार कान्ति के द्वारा तेजोमयी गति करते हैं। मेरे प्यारे! देखो, भगवान नारद मुनि ने कहा हे उतानपाद! तुम्हें प्रतीत नही है यह कौन है उन्होंने कहा मैं नही जानता, यह तुम्हारे सुपुत्र हैं मानो यह महात्मा ध्रुव हैं। मेरे प्यारे! ध्रुव के जब चरणों को स्पर्श करने के लिए राजा गति करने लगा तो मानो देखो, महात्मा ध्रुव ने कहा नही आप मेरे पितर है, पितरश्चं प्रमाणं ब्रहे वाचन्नमाः मानो देखो, मैं अपने प्रभु का यशोगान गा रहा हूँ, आप मेरे पिता है परन्तु आप राजा के सम होने से आप मेरी इस प्रकार मेरी वन्दना न कीजिए। क्योंकि आप शासन कर्त्ता हैं, आप मानो देखो, अपने में उतानपाद हैं। मेरे प्यारे! उतानपाद मुनि शान्त हो गया, उतानपाद ने यह कहा कि हे ब्रह्मचारी! मेरी आत्मा की इच्छा को पूर्ण होने दे, मेरा आत्मा मानो अपने क्रियाकलापों से, अपने कर्म से धिक्कारा जा रहा हैं, क्योंकि मैं मानो इतना पापाचार में रत्त रहने वाला हूँ। महात्मा ध्रुव ने कहा कदापि नही, परन्तु यदि आप का शब्द, मेरी सौतेली माता का शब्द मुझे विदीर्ण नही करता, तो मुझे नारद के दर्शन नही हो सकते थे, भगवान नारद मानो देखो, मुझे सान्त्वना देने वाले प्रभु के मार्ग में मुझे मानो, प्रेरित करके, मैं आज महान बन गया हूँ, मैं महान तो नही बना हूँ, परन्तु कुछ-कुछ उस प्रभु की उस प्रभु पगडण्डी को मैंने ग्रहण किया है मोक्ष की पगडण्डी को मैंने ग्रहण किया है मुझे अभी चलना भी मानो देखो, उस पर गति करना भी नही आया है, परन्तु मैं अपने में गतिशील हूँ। मैं गतिशील औषधियों का पान करता हूँ, **मुझे मानो लगभग पचीस वर्ष हो गएं हैं, मैंने मोटे अन्न का पान नही किया है, मैं केवल उसका रेसा पान करता हूँ, मैं उसकी रेशा पान करता हुआ अपने में ओज को प्राप्त कर रहा हूँ।**

तो मेरे प्यारे! देखो, वह महाराजा उतानपाद ने वाक् श्रवण करके उन्होंने गति की और उन्होंने नारद मुनि से गति करते समय, यह कहा कि-प्रभु! मेरी इच्छा यह है कि ऐसे महापुरूषों का राष्ट्रकोष से मानो देखो, उनका सब प्रबन्ध हो जाना चाहिए, सबका मानो उनका आवृत्ति हो जाना चाहिए। मेरे प्यारे! नारद जी ने कहा कदापि नही, यह जो प्रभु का राष्ट्र है, यह इतना औषध विज्ञान से परिपक्व है, इतना विशाल है, क्या इसके ऊपर जब हम गति करने लगते हैं, तो हमें कोई मार्ग प्राप्त नही होता हम कौन-सी औषधियों को पान करें।

मैंने बहुत पुरातन काल में, नारद जी ने कहा कि मैंने राजा रावण के राष्ट्र में मानो देखो, महाराज सुधन्वा को दृष्टिपात किया था जो एक सौ पांच वर्ष तक उन्होंने गुड़ा के और सोमलता, सोमकृतिका और मानो चन्द्रघण्टा और चन्द्र रोहिणी औषधियों को पान करके, उन्होंने मानो एक सौ पांच वर्ष तक मानो उन्होंने अनुष्ठान किया, और औषधियों के ऊपर अनुसन्धान करते रहे, मानो इसी प्रकार मैंने महात्मा दधीचि को दृष्टिपात किया महात्मा दधीचि ने एक सौ पांच वर्ष तक, एक पर्वत के नीचे आँगन में विद्यमान हो करके केवल कणाक को पान करके, औषधि रूप जान करके, उसे पान करते थे। मैंने तुम्हें कई काल में कहा है क्या मुनिवरों! देखो, वही मानव के विलासता के लिए वही अन्नाद मानो विलासता में परिणत कर देता हैं वही अन्न औषध बन करके वही रसा पान करके देखो, अमृतमयी बन जाता है।

मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं महात्मा कणाद के राज्य में जाता हूँ महात्मा कणाद के जीवन में जाता हूँ, तो महात्मा कणाद ने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा क्या प्रभु! मैं वेदों का अध्ययन कर रहा हूँ और मैं वेदों का अध्ययन करता हुआ, मैं अपामार्ग को पान किया है अपामार्ग को मैंने उसके तन्दुलों को ले करके मैंने कामधेनु

गऊ के दुग्ध में उसको अग्नि में तपा करके मानो उसका मैंने पान किया हैं और पान करते-करते मैंने बारह वर्ष का यह अनुष्ठान किया, और बारह वर्षों में, मुझे योग की कुछ अनुभूतियां हो रही हैं, मैं उस योग के ऊपर अपनी लेखनियाँ बद्ध करना चाहता हूँ। मैंने मानो देखो, उन औषधियां का पान किया है, जिन औषध का पान करके और अब मैं मानो कणाक में जा रहा हूँ, मैं रसों का स्वादन करना चाहता हूँ, मानो यह पौधा प्रभु के राष्ट्र में है, उसका निचला भाग पशु का है ऊपर ला औषध बन करके मानव की क्रिया में आता है। मानो कणाक को वह, अपने पात्रों में जल में अर्पित कर देना सांयकाल को, प्रातःकाल होते ही, उसका औषध बना करके मानो उसको खरल करते रहते थे, खरल करके मानो कंजी के फलों का बीजांग ले करके उसे उसमें खरल करना और देखो, और उसमें तुलसिका के मानो देखो, ऊर्ध्वा उसके बीज को ले करके, उसको खरल करना और मानो देखो, उसी में सोमकृतिका मौनकेतु एक औषध होती है उसको भी उसमें पान करना है एक लक्ष्मा बूटी होती है उसको भी उसी में पान करना है तो वह इस प्रकार का खरल बना करके, मानो देखो, पान करते थे वही औषध वही कणाक है, उसमें औषधियों का सन्निधान होने से, उनमें विशेष गुण आ जाते हैं, और गुण आ करके मानो वह एक दिवस पान किया दो दिवस किया वह मानो छः-छः माह तक मानो देखो, समाधि के तुल्य में विद्यमान हो जाते हैं उन औषधियों का पान करते हुए मानो देखो, वह समाधिष्ट हो जाते है शिष्यगण मानो उन्हें पान करते रहते मानो उसमें मल की उत्पति नही होती मानो उसमें उदर की उत्पति नही होती है वह इतना विशेष आहार बन जाता है, क्या उसको पान मानो कुछ मुखारबिन्दु के द्वारा, कुछ अपान के द्वारा, उसको ऊर्ध्वा में रूद्राक्ष बना करके वायुमण्डल में ले जाते हैं, वह तेजस्वी परमाणु रह जाते हैं, जिन परमाणुओं से वह योगाभ्यास में परिणत हो जाता हैं। उन्हें बेटा! लेखनियाँ बद्ध करते हुए, अपने चित्त की वृत्तियों का निरोध करने का प्रयास किया, मानो देखो, उनके जीवन में यह गुड़ाकेश नामक औषधियों का भी उन्होंने पान किया है, एक वेद वृत्तिका एक औषध होती है, जैसे वेद प्रकाशित रहती है, ऐसे वेद वृत्तिका एक औषध होती है, जो मानव की वृत्तियों को शान्त करती है। प्रकाश में लाती है, मानो वेद वृत्तिका, एक औषध होती है, जो हिमालय में प्राप्त होती हैं। मानो जो गंगा के तटों पर प्राप्त होती है, समुद्रों की तटों पर प्राप्त होती हैं। उस औषधि का पान करने से हमारे जीवन में एक गुड़ा वृत्तिका उत्पन्न हो जाती हैं। तो मुझे ऐसा स्मरण आया है क्या मानो देखो, महात्मा पातंजलि जी ने इस प्रकार के कणाक को पान करके मानव कणाद ने भी वही किया, और पातंजलि जी ने भी वही किया, तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या उसका अनुष्ठान महात्मा पातंजलि जी ने मानो एक सौ पांच वर्ष तक इस प्रकार का तप किया था। महात्मा कणाद ने भी इसी प्रकार का तप किया था। तप करने से ही मुनिवरों! देखो, उनके जीवन की प्रतिभा उनके समीप आ गई, समीप आ करके उन्होंने संसार को दिया क्या बेटा! उन्होंने तप किया है, और परमाणु विद्या प्रदान कर दी है, परमाणु विद्या दे दी है संसार को हे मानव! तू उस परमाणु विद्या को अपने में पान करने वाला बन। तो मेरे प्यारे! देखो, वह कितनी विशिष्ठता को ले करके अपने में जीवन को ऊँचा बनाना वह आहार क्या करते थे? और उनकी कितनी सूक्ष्म दृष्टि थी बेटा! विचारना यह है कि आज जो मानव संसार में दूसरों के मांसों को पान करने वाला है, जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी ने कई समय मुझे वर्णन कराया है, आज जो दूसरों के गर्भों को पान करता है, मांस का भक्षण करता है, वह मानो पामर प्रवृत्ति वाला है। मानो देखो, वह देता क्या है, संसार को विलासता दे करके चला जाता है। परन्तु देखो, वह अन्नादं औषधियों का पान करते हैं, जो आयुर्वेद का आयु का एक मत है, आयु का मत यह कहता है आयु का विचारक यह कहता है कि आयु को पान करने के लिए हमें तपस्या में रत्त रहना है।

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है मेरे प्यारे! महात्मा सुधन्वा राजा रावण के समीप विद्यमान होते वह भी इन औषधियों का पान करते रहे हैं मानो देखो, वह मेघनाथ भी इस प्रकार की औषधियों का पान करके देखो,

उनमें कोई ऐसा विकृत प्राणी नही था, जो मांस का सेवन करने वाला हो, मांस किसे कहते हैं? दूसरे के रक्त का पान करना ही मानव की प्रतिभा बन करके मानो वह आलिंगन करता हुआ, अपने जीवन की प्रवृत्तियों में वायुमण्डल को अशुद्ध बना देता हैं। उसके समीप लक्ष्य नही रहता, परन्तु देखो, मैंने पुरातन काल में अपना निर्णय देते हुए कहा था, क्या मानव को गृह आश्रम को मैं पापाचार नही उच्चारण कर रहा हूँ, परन्तु अपना उद्देश्य होता हैं सन्तान के उर्पाजन के लिए, पुत्र को उत्पन्न करने के लिए मानो देखो, आलिंगन किया जाता है, और जब आलिंगन विलासता में ला देता है, और वह वायुमण्डल को और द्रव्य का दुरूपयोग करके मानो अपने गृह को नारकिक बना रहा है। परन्तु इस प्रकार का विचार मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे कई काल में दिया, इनका विचार मुझे पुनः से स्मरण आ रहा है, जिन विचारों को ले करके हम अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहते हैं। मैं आज महापुरूषों की गाथाओं को परन्तु देखो, औषध विज्ञान को ले करके चला हूँ, महात्मा ब्रह्मे मानो देखो, कौन महात्मा सुधन्वा इस प्रकार की औषधियों से वार्त्ता प्रगट करते रहते थें। एक समय मानो देखो, महात्मा सुधन्वा के मस्तिष्क में क्या राजा रावण राष्ट्र में राजलक्ष्मी महारानी मंदोदरी के मस्तिष्क में एक मानो देखो, एक दाह उत्पन्न हो गई, तो जब दाह उत्पन्न हो गई तो विचारता रहा क्या यह क्या बन गया है, तो महात्मा देखो, सुधन्वा को देखो, सूचित किया क्या महाराज देखो, देवी के मस्तिष्क में यह कैसा दाह उत्पन्न हो गया है? तो महात्मा सुधन्वा ने अनुसन्धान किया विचारता रहा विचार करके कुछ समय के पश्चात वह पर्वतों में पंहुचे पर्वतों में एक गुरुवत नामक एक औषध होती है, वंचिनिका एक औषध होती हैं, उन दोनों औषधियों के मध्य में विद्यमान हो गएं और वह नतमस्तिष्क हो करके, अन्तर्ध्यान हो गएं। मन और प्राण की दोनों की पुट लगा करके, उनके गुणों में प्रवेश कर गएं। तो वह मानो औषधि दोनों का अग्नि में तपा करके, मानो देखो, उससे सृजन किया जा रहा था, तो उन्होंने महारानी मन्दोदरी के मानो मस्तिष्क के ऊपरले भाग को त्वचा के भाग को मानो देखो, ब्रह्मरन्ध्र से दूरी किया, तो उसमें मानो देखो, एक मानो देखो, एक कृतिका वाचक एक मानो देखो, जीव उत्पन्न हो गया था। उस जीवन को उन्होंने मस्तिष्क में से दूरी किया, और वह ज्यों का त्यों उन कांचना औषधियों का लेपन करके उनका मस्तिष्क बन गया। मानो उसका निर्माण भी हो गया।

तो विचार मैं क्या दे रहा हूँ विचार क्या यह है मानो देखो, उन औषधियों का पान करने से, सर्जरी मानो संजिका उत्पन्न होती हैं, जब मैं यह विचारता रहता हूँ, कि संजिका उत्पन्न हो करके ही वैद्यराज अपने में ऊँचा बन जाता हैं तो मुनिवरों! देखो, महारानी मन्दोदरी सान्त्वना को प्राप्त हो गई, मानो एक समय महाराजा शिव और पार्वती दोनों विद्यमान थे दोनों के विद्यमान होने पर मानो देखो, उनके शरीर में एक रूग्णा उत्पन्न हो गया था, उस रूग्णा के उत्पन्न होने से वह रूग्णा क्या था मानो देखो, उनके मस्तिष्क के अग्र भाग में एक जीवाणु उत्पन्न हो गया था, एक जीवाणु उत्पन्न होने से उस जीवाणु में यह विशेषता थी, क्या वह शुक्रत को निगल रहा था, शुक्रत को निगल करके उनके मस्तिष्क में एक क्रीड़ा एक मानो देखो, दाह उत्पन्न हो गया। उस दाह के उत्पन्न होने से विचारा गया कौन ऐसा वैद्यराज है, उनके राष्ट्र में भी आयुर्वेद के अध्ययन करने वाले थे, परन्तु किसी को निमटारा नही हुआ वह अश्विनी कुमारों के द्वार पर पंहुचे। अश्विनी कुमारों ने कहा-प्रभु! मैं भी इस प्रकार मानो जानता तो हूँ, उन्होंने निरीक्षण किया तो विचारा कि इनके एक जीवाणु की उत्पति हो गई है। तो मानो देखो, उसी समय देखो, महात्मा सुधन्वा और अश्विनी कुमार दोनों विद्यमान हो गएं, विचारने लगे विचारते-विचारते मानो देखो, एक समय उन्होंने विचारा उन्होंने अपना निर्णय दिया कि इन्होंने क्या हे माता! तुम याग करती थी, उन्होंने कहा हाँ, याग करती थी, एक समय देखो, महात्मा मौमकेतु उनके द्वार पर आए थे तो उन्होंने दाह और आख की दोनो की समिधा ले करके और शमि की समिधा ले करके और कन्नानी एक औषध होता है। उसकी समिधा ले करके उन्होंने

देखो, समिधाओं के द्वारा और नाना औषधियों को मानो एकत्रित करके उन्होंने याग किया था, तो जब इस समय देखो, शमी और देखो, आक की दोनों की समिधा और देखो, वांचकेतु की समिधा दोनों की तीनों समिधाओं का मेल हो जाता है। तो उसमें से देखो, अग्नि में एक ऐसे परमाणुओं का जन्म हो जाता हैं। जिससे वह मानो देखो, रूग्णा को उत्पन्न कर देता है, तो माता की पार्वती की नासिका के ऊर्ध्व भाग से मानो वह परमाणु मस्तिष्क में चला गया। उसने शरीर के उन परमाणुओं को एकत्रित करके मानो जीवाणु की उत्पति हो गई, और वह जीवाणु मानो देखो, शुक्रत को निगल रहा था। वही देखो, याग का धुम्र वायु मण्डल में जाएगा तो वहाँ का भी शुक्रत हनन करेगा, इसीलिए मानो विचारा गया कि आक और दाह दोनों को हम मिलान करके और कृतिका को मिलाते हुए हम याग नही करेंगें। तो मानो देखो, इस प्रकार जब वह उन्होंने कहा ऐसा हुआ है तो मेरे प्यारे! देखो, माता पार्वती ने यह वाक् स्वीकार कर लिया क्या वास्तव में यह रूग्णा इस प्रकार हुआ है।

तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा तो मातेश्वरी! तुम इसको शान्त करना चाहती हो तो उन्होंने कहा हाँ प्रियतम! तो मेरे प्यारे! ऋषि ने अपने में औषध देखो, पर्वतों की कन्दराओं में चले गएं वह ऋषिमुख पर्वत पर चले गयें जहाँ रेणाकेतु एक औषध जो देखो, पूर्णिमा के दिवस उसका जन्म होता है, अमावस्य के दिवस मानो उसकी प्रतिभा समाप्त हो जाती है, और मानो ऋषिमुख पर्वत पर एक ब्रीहित केतु औषध होती हैं, जिसको मजीठ कहते हैं, कांचवन औषध कहते हैं, जिसको पर्वतों की वृचिका कहते हैं, मानो इन सबको एकत्रित करके, उन्होंने एक पिपाद बनाया, और पिपाद बना करके अग्नि में तपा करके ऐसा तीक्ष्ण बन गया क्या उन्होंने माता पार्वती के मानो देखो, श्रोत्र इन्द्रिय से ले करके ऊपरले भाग को और त्रिवेणी के ऊर्ध्वा भाग में एक रेखा उस औषध की दी और देखो, वायु से उसे रहित करके मानो देखो, उसका एक ऐसा पात्र था, शरीर से दूरी हो गया, त्वचा का, जब त्वचा का पात्र दूरी हो गया, तो वह जीवाणु मानो एक बड़े आकार का हो रहा था, वह मानो योनि के रूप में था उसको उन्होंने निकास लिया, और निकास करके मुनिवरों! देखो, वह उन्होंने शैलवृत्तिका मौमवाचन संदीपनी और वासवास्तिता मुनिवरों! देखो, लोजवन्ती इन सब औषधियों को पांचो को ला करके खरल बनाया था, पूर्व ही और उनको मानो देखो, जो ज्यों का त्यों स्थिर करके और उसका औषध का लेपन किया, लेपन करके माता पार्वती का मस्तिष्क ज्यों का त्यों निर्माणत हो गया। तो विचार-विनिमय क्या बेटा! मुनिवरों! मैं इस भयंकर वनों में नही जाना चाहता हूँ, यह तो विशाल वन है, इस संसार के बहुत से अनुभूति हमारे समीप रहती हैं, परन्तु आज का हमारा विचार क्या कह रहा है, आज का विचार यह कह रहा है कि हम अपने में कितने सुसज्जित बन सकते हैं, कितनी अपनी मानो देखो, इस परमात्मा के अघाद समुद्रा में परिणत हो करके, औषध विज्ञान वाले समुद्र में प्रवेश करके, मानो कैसी गम्भीर औषधियों को ला करके मानो देखो, हम समाज की मानो दुखाकृति उसको क्रियात्मक रूपता में धारण करा सकते हैं। मानो इस प्रकार का विज्ञान हमारे समीप परम्परागतों से रहा हैं, हमारे यहाँ ऋषि-जन, योगी जन अपने में मैंने अभी-अभी तुम्हें पान कराया है, वही मानो देखो, वही मानो देखो, अन्न बन करके रहता हैं। वही मानो देखो, मानव की विलासता का एक पान बन जाता हैं, वही अन्न है, जो औषध का कार्य क्रियाकलाप करता है, उसी को पान करके मानव को मोक्ष की पगडण्डी को ग्रहण करता हैं, उसी को पान करके राजा बन जाता है, और उसी को पान करके राजा बन जाता है। अराजा बन जाता है। परन्तु देखो, उसी को पान करके मोक्ष की पगडण्डी को हमें ग्रहण करना है, हमें उस रूप से संसार में जितनी भी स्थावर सृष्टि हैं, वह सब वनस्पतियां कहलाती हैं, उनको वनस्पति के रूप में एक दूसरे का सम्मिलन करते हुए सन्निधान करते हुए उसको पान करना चाहिए। उसको ज्ञान होना चाहिए, यह है बेटा! आज का वाक् आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह है यह हमारे वैदिक साहित्य में विज्ञान में बेटा! जब हम वेद के गर्भ में प्रवेश करते हैं, तो हम अघाद समुद्र में चले

जाते हैं, विशाल समुद्र में जा करके हमें यह ब्रह्माण्ड स्पष्टीकरण हो जाता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, अपने प्रभु का गुणगान गाते इस संसार सागर से पार हो जाएं। यह आज का वाक् अब हमारा समाप्त होने जा रहा है, समय मिलेगा शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे। आज का विचार यह समाप्त होने जा रहा हैं। ओ३म् देवं रथा आभ्यां गतं माहं आपो ईशणा मा रथं माहा वायु गताहं मणु आभ्यां रथाः। ओ३म् तदु शुप्रिविचां माहं रथाः ओ३म् देवं मया सर्वं भद्राः।